महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर- नवंबर 2024 (संयुक्तांक) | पृष्ठ: 20 www.mgcub.ac.in parisarpratibimb@mgcub.ac.in @MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

स्थापना दिवस: धूम-धाम से मना महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय का 8वाँ स्थापना दिवस

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के दीप को देदीप्यमान करते हुए विश्वविद्यालय ने पूरे किए अपने 8 वर्ष

कुलपति की कलम से

प्रो. संजय श्रीवास्तव

मा. कुलपति
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार

प्रिय पाठकों! महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह के ऐतिहासिक अवसर पर, जो 7 दिसंबर, 2024 को आयोजित होने जा रहा है, मैं सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। यह दिन केवल हमारे विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का उत्सव नहीं है, बल्कि यह उनके उज्ज्वल भविष्य की नींव और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों का भी प्रतीक है।

यह बताते हुए मुझे अत्यंत गर्व हो रहा है कि इस समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ मुख्य अतिथि के रूप में हमारे बीच उपस्थित होंगे। उनका सान्निध्य विश्वविद्यालय परिवार के लिए अत्यंत प्रेरणादायक होगा। इसके साथ ही, यह हमारे लिए गर्व की बात है कि बिहार के माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर लगातार अलग-अलग अवसरों पर विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में शामिल होकर हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

इस दीक्षांत समारोह में कुल 433 डिग्रियाँ प्रदान की जाएँगी, जिनमें 265 स्नातकोत्तर, 121 स्नातक, और 47 पीएचडी शामिल हैं। यह हमारे विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत और हमारे शिक्षकों के समर्पण का प्रमाण है। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय में एक उल्लासपूर्ण और हर्षित माहौल है। छात्र, शिक्षक और विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य गर्व और प्रसन्नता के साथ इस ऐतिहासिक क्षण का हिस्सा बन रहे हैं।

विश्वविद्यालय ने न केवल शैक्षिक क्षेत्र में बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और शोध के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। आज, जब हमारे छात्र और शोधार्थी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्टता का परिचय दे रहे हैं, तो यह हमारे विश्वविद्यालय के निरंतर विकास और समृद्धि का प्रतीक है।

हम गर्व महसूस करते हैं कि हमारे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी देश और विदेश में विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। यह गर्व का विषय है कि हमारे विद्यार्थी और शोधार्थी न केवल देश के विभिन्न कोनों में, बल्कि विदेशों में भी महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। शोधार्थियों का लगातार यूजीसी-नेट, जेआरएफ और आईसीएसएसआर फेलोशिप में चयन होना विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है। यह हमारी शैक्षणिक गुणवत्ता और अनुसंधान के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

यह बताते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष विश्वविद्यालय ने कई नई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। विश्वविद्यालय के दोनों परिसरों में अत्याधुनिक जिम की स्थापना की गई है, जो छात्रों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। साथ ही, आत्मरक्षा के लिए प्रत्येक छात्रा को मार्शल आर्ट्स का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विशेष कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है, जिससे वे आत्मनिर्भर और सशक्त बन सकें।

यह गर्व का विषय है कि महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय को Careers360 पत्रिका में भारत के सर्वश्रेष्ठ युवा विश्वविद्यालयों में स्थान दिया गया है। यह उपलब्धि हमारी निरंतर प्रगति और उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय ने दो महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (M o U) पर हस्ताक्षर किए हैं। पहला, "नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान", काठमांडू, नेपाल के साथ, जो भारत और नेपाल के बीच शैक्षणिक सहयोग को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा। दूसरा, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के साथ, जिससे छात्रों के लिए परस्पर सीखने, शैक्षणिक सहयोग, और वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और नवाचार में संयुक्त प्रयासों के नए अवसर खुलेंगे। यह सहयोग छात्रों को ज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में नई दिशा देगा।"

प्रिय विद्यार्थियों, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा और सेवा के आदर्शों को आत्मसात करें। आपके ज्ञान, चरित्र और कर्मशीलता से समाज में सकारात्मक परिवर्तन आएगा। आप अपनी सफलता से न केवल अपने परिवार और विश्वविद्यालय का, बल्कि पूरे राष्ट्र का गौरव बढ़ाएँ। इस ऐतिहासिक अवसर पर, सभी दीक्षार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के दीप को देदीप्यमान करते हुए महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने अपने 8 वर्ष पूरे कर लिए। इस अवसर को यादगार बनाते हुए विश्वविद्यालय ने धूम-धाम के साथ अपना 8वां स्थापना दिवस मनाया। स्थापना दिवस समारोह मोतिहारी शहर स्थित प्रेक्षागृह में मनाया गया। समारोह की विधिवत शुरुआत मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर तथा माता सरस्वती एवं महात्मा गाँधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि कर की गई। समारोह की अध्यक्षता केविवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने की। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास, सारस्वत अतिथि के रूप में संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पद्मश्री प्रो. राजेन्द्र मिश्र 'अभिराज' तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में जय प्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रमेन्द्र कुमार वाजपेयी उपस्थित थें।

स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ

कार्यक्रम में आए सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत एमजीसीयू के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न, पादप, मधुबनी चित्रकला भेंट कर किया तथा माननीय कुलपति का स्वागत विवि के चीफ प्रॉक्टर प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान केविवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने सभी शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों, प्रशासनिक अधिकारियों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी और कहा कि विश्वविद्यालय के उन्नयन में इन सभी का विशेष योगदान है। विश्वविद्यालय की आगामी योजनाओं को रेखांकित करते हुए कहा कि आने वाले कुछ वर्षों में अनेक नये विभाग एवं केंद्र स्थापित होंगे। हमारा प्रयास होगा अधिकांश विषयों का अध्ययन, अध्ययन एवं शोध यहां पर हो। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की बेहतरी के लिए अनेक कदम उठाएं जा रहे है। शोध के लिए शिक्षकों को सीड मनी की व्यवस्था से लेकर मूलभूत जरूरतों को पूरा करने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के भौतिक स्वरूप में लाने की दिशा में निरंतर कार्य किए जा रहे है। जरूरी बिल्डिंग्स के निर्माण में छात्र एवं छात्राओं के लिए हॉस्टल का निर्माण सर्वोच्च प्राथमिकता में है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित एमजीसीयू न्यूज लेटर, परिसर प्रतिबिम्ब और ज्ञानाग्रह का जिक्र करते हुए प्रो. श्रीवास्तव ने इसे विश्वविद्यालय से सम्बंधित गतिविधियों और शिक्षकों व विद्यार्थियों के रचनात्मक अभिव्यक्ति का सुनहरा मंच बताया। समरोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सह झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास ने स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय कोई साल-दो साल में बन जाने वाला कोई भौतिक भवन नहीं है बल्कि वहां पढ़ने वाले विद्यार्थी एवं पढ़ाने वाले शिक्षकों के वर्षों की त्याग-तपस्या के परिणाम स्वरूप हमें प्राप्त होता है। अभी इस विश्वविद्यालय को इतिहास बनाना है और एक गौरवशाली इतिहास तभी बनेगा जब हम अपने लक्ष्य को पहचानेंगे, उसे निर्धारित करेंगे और फिर उसे प्राप्त करने के लिए अपनी पूरी क्षमता से प्रयास करेंगे। यह यहां के विद्यार्थी एवं प्रशासन को तय करना है कि क्या हम इस विश्वविद्यालय को हॉवर्ड, कैम्ब्रिज या अन्य विश्वविद्यालय बनाना चाहते हैं या फिर हम इसे महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाना चाहते हैं। हम आने वाले इतिहास में खुद को कॉपी-पेस्ट पहचान के रूप में स्थापित देखना चाहते हैं या फिर खुद को एक मानक के रूप में स्थापित देखना चाहते हैं, यह हमें स्वयं तय करना होगा। इसलिए अपना लक्ष्य पहचानें, अपना उद्देश्य तय करें और पूरी शक्ति के साथ उसे प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ें, मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

समारोह को संबोधित करते हुए सारस्वत अतिथि के रूप में संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पद्मश्री प्रो. राजेन्द्र मिश्र ने कहा कि चंपारण की धरती जिसने गांधी को महत्मा बना दिया, जिस धरती से जागी सत्याग्रह की चिंगारी ने अंग्रेजों के हुकूमत को जलाकर खाक कर दिया, उस धरती पर स्थापित महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय अपना 8वां स्थापन दिवस मना रहा है, इसके लिए मैं आप सभी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यहां से शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले विद्यार्थी हमारे राष्ट्र की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत एवं मूल्यों को संरक्षित करने में अपना योगदान अवश्य देंगे।

समारोह को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित जय प्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रमेन्द्र कुमार वाजपेयी ने कहा कि यह बहुत हीं हर्ष की बात है कि एमजीसीयू आज अपना 8वां स्थापना दिवस समारोह मना रहा है। भौतिक संसाधनों की पूर्ण व्यवस्था ना होने के बावजूद गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में जो योगदान आप दे रहे हैं वो अतुलनीय है। स्वागत उद्बोधन में भाषा एवं मानविकी संकाय के अधिष्ठाता सह कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर कुलपति जी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है। हम सभी का यह दायित्व बनता है कि विश्वविद्यालय को जनसरोकारों से जोड़कर इसे ज्ञान और अनुसंधान का बड़ा केंद्र बनायें।समारोह में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, शिक्षकों, अधिकारियों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति थी। आभार ज्ञापन अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. बिमलेश कुमार सिंह एवं सफल संचालन सहायक प्रोफेसर डॉ. उमेश पात्रा ने की।

स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर रंगा-रंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय का 3 अक्टूबर गुरुवार को आठवां स्थापना दिवस समारोह मोतिहारी स्थित गाँधी प्रेक्षागृह में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम तीन चरणों में आयोजित हुई जिसकी शुरुआत सुबह हवन-पूजन द्वारा हुई। स्थापना दिवस समारोह की अंतिम कड़ी में संस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुई। इस अवसर पर सर्वप्रथम कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव का स्वागत भाषा एवं मानविकी संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने बुके प्रदान कर की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. राजेन्द्र मिश्र का स्वागत कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव द्वारा शॉल एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर की। गणेश वंदना द्वारा कार्यक्रम की शुभारंभ हुई, जिसकी सुंदर पेशकश मुस्कान कुमारी बीजेएमसी तृतीय सेमेस्टर की छात्रा द्वारा किया गया। तदुपरांत नवदुर्गा की संगीत की प्रस्तुति छात्रा नंदिनी, प्राची, सिमरन ने किया। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के गैर शैक्षणिक कर्मचारी तेतुल जी ने माँ दुर्गा का भजन गया तो वहीं मनीष दिवाकर शिक्षा शास्त्र विभाग से स्वर रचित कविता प्रस्तुत की। पुरानी यादों का जादू भरा खजाना दीपशिखा, सुप्रिया, सिया ने प्रस्तुत की। बसंत ने छतरियां नृत्य प्रस्तुत किया तो वही आशीष और श्रुति ने 'राधा कैसे न जले' की धुन में सबको समाहित कर दिया। विशाल व रूपाली ने सुंदर गाना गया। विवेक, सुरमई एवं कोविथ ने बिहू नृत्य प्रस्तुत की। अंकित सलोनी व सुनीता ने अपने नृत्य से धमाल मचा दिया।

स्थापना दिवस पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों के साथ कुलपति एवं अन्य पदाधिकारी

चंदा और अंजलि ने कथक नृत्य प्रस्तुत की। इसी कड़ी में 'मक्षकटीकम' नाटक भी प्रस्तुति हुई जिसने दर्शकों को मोहित कर लिया। नाटक को मीडिया अध्ययन विभाग के शोधार्थी आकाश कुमार के संयोजन में मंचित किया गया। अनुराग, प्रिया व मनीष ने बॉलीवुड डांस से तहलका मचा दिया। इसी कड़ी में संबलपुरी नृत्य की भी प्रस्तुति हुई। विशाल, रूपाली, मनीषा, सुरभि ने माहौल को संगीत मय बनाया। अंतिम प्रस्तुति डांडिया के साथ हुई तत्पश्चात सभी प्रतिभागियों को उनके बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक एवं साहित्य परिषद के अध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह, सदस्य डॉ. श्याम कुमार झा, डॉ. बिमलेश कुमार सिंह, डॉ. कुंदन किशोर रजक, डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र, डॉ. स्वेता, डॉ. अवनीश कुमार, डॉ. उमेश पात्रा, डॉ. अनुपम कुमार वर्मा, डॉ. मनीषा रानी, डॉ. बब्लू पाल ने सांस्कृतिक कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष भूमिका निभाई।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संयोजन समाजशास्त्र विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. स्वेता ने तथा कार्यक्रम का मंच संचालन मीडिया अध्ययन विभाग की स्नातक की छात्रा संजना श्रीवास्तव एवं छात्र नीतीश कुमार ने किया। सांस्कृतिक एवं साहित्य परिषद की देखरेख में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें सदस्यों की महत्वपूर्ण भागीदारी थी। उक्त कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी संकायों के अध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी , शोधार्थी तथा विद्यार्थी मौजूद थे।

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं नेपाल के नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान के बीच समझौता

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी तथा नेपाल के नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान के बीच शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में अकादमिक सहयोग हेतु पारस्परिक सहमति के बाद समझौता पत्र पर हस्ताक्षर हुआ। केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव तथा नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान के प्रेम न्यूपानी ने इस समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि नेपाल और भारत के बीच सांस्कृतिक-राजनीतिक संबंध प्राचीनकाल से ही प्रगाढ़ हैं। भारत और नेपाल के बीच का यह सांस्कृतिक संबंध दोनों राष्ट्रों की मैत्री का आधार भी है। दोनों देशों को एक साथ मिलकर एक दूसरे के विकास और सहयोग की दृष्टि से कार्य करने की आवश्यकता है। नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान के साथ इस समझौते से न केवल दोनों संस्थाओं के लोगों के लिए शिक्षा और शोध के क्षेत्र में नए अवसर विकसित होंगे बल्कि दोनों देशों की संस्थाएं मिलकर ऐसी शोध परियोजनाओं पर संयुक्त रूप से कार्य करेंगी, जो विकास के लिए कारगर होगीं। उन्होंने कहा कि पड़ोसी राष्ट्र एक नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान के साथ अकादमिक समझौता होना अत्यंत सुखद और संभावनापूर्ण है। हम इनके साथ मिलकर ऐसी शोध परियोजनाओं पर कार्य करेंगे, जो भारत और नेपाल के विकास के साथ ही साथ दोनों राष्ट्रों के मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास के लिए उपयोगी हों। हमारी कोशिश होगी कि दोनों देशों के बीच उभयनिष्ठ लोक-संस्कृति लोकाचार, ज्ञान-परंपरा और लोक प्रशासन से संबंधित नीतियों पर काम किया जाए।

दूसरी तरफ नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान से जुड़े प्रेम न्यूपानी जी ने महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव की अकादमिक सक्रियता, दूरदृष्टि तथा भारत और नेपाल के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास के लिए अकादमिक सहयोग की संभावनाओं को तलाशने के विचारों की सराहना की और आशा जताई कि नेपाल के साथ काम करते हुए महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय शोध और अनुसंधान के नए आयाम तक पहुँचेगा। विदित हो कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव शोध की गुणवत्ता में वृद्धि और शैक्षणिक एवं अकादमिक उन्नयन के उद्देश्य से देश-विदेश के कई प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के साथ समझौते पर काम कर रहे हैं। हाल ही में भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, मुजफ्फरपुर तथा डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के साथ

समझौता पत्र पर हस्ताक्षर करते दोनों संस्थाओं के पदाधिकारी

- **शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में अकादमिक सहयोग हेतु पारस्परिक सहमति के बाद समझौता पत्र पर हस्ताक्षर**

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने शिक्षा एवं शोध-क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग के लिए समझौता किया है। इसी क्रम में नेपाल के नीति अनुसंधान संस्थान के साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने बताया कि महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय शिक्षा एवं शोध कार्य के साथ ही अकादमिक उन्नयन के लिए दुनिया भर के प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध है। पड़ोसी राष्ट्र नेपाल के एक प्रमुख और प्रतिष्ठित संस्थान के साथ किया गया यह समझौता महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी अकादमिक क्षमता को प्रमाणित करने का एक सशक्त माध्यम बनेगा। साथ ही यह समझौता दोनों देशों के बीच शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम भी स्थापित करेगा।

विश्वविद्यालय के जन-संपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. श्याम नंदन ने बताया कि इस समझौता पत्र पर हस्ताक्षर होने के बाद अब नेपाल और भारत के लिए नीतिगत मुद्दों पर अध्ययन और अनुसंधान के लिए दोनों संस्थाएं मिलकर काम करेंगी। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय और नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान, नेपाल के बीच यह समझौता एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है और दोनों ही संस्थाओं के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

ज्ञात हो कि गत दिनों उनकी मुलाकात नेपाल की विदेश मंत्री डॉ. आरज़ू राणा देउबा से भी हुई थी, जहाँ उन्होंने नेपाल और महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के साथ अकादमिक क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग पर चर्चा की थी तथा विश्वविद्यालय में उन्हें आमंत्रित भी किया था।

नेपाल की विदेश मंत्री से कुलपति ने की मुलाकात

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने हाल ही में नेपाल दौरे के दौरान नेपाल की माननीय विदेश मंत्री डॉ. आरज़ू राणा देउबा से महत्वपूर्ण मुलाकात की। इस अवसर पर प्रो. श्रीवास्तव ने डॉ. देउबा को एमजीसीयू में आने का आमंत्रण दिया और भारत-नेपाल के बीच शैक्षिक सहयोग के संभावित आयामों पर चर्चा की। मुलाकात के दौरान प्रो. संजय श्रीवास्तव ने भारत और नेपाल के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को रेखांकित करते हुए शैक्षिक क्षेत्र में मजबूत सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने दोनों देशों के बीच संयुक्त शैक्षिक कार्यक्रमों, छात्र विनिमय योजनाओं और शोध परियोजनाओं के माध्यम से आपसी विकास और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने की अपनी दृष्टि साझा की।

डॉ. आरज़ू राणा देउबा ने प्रो. श्रीवास्तव के प्रयासों की सराहना की और शैक्षिक संबंधों को प्रगाढ़ करने में रुचि दिखाई। उन्होंने कहा कि एमजीसीयू जैसे विश्वविद्यालय दोनों देशों के बीच क्षेत्रीय सहयोग और छात्रों के लिए व्यापक शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।यह मुलाकात भारत और नेपाल के बीच शैक्षिक संबंधों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे दोनों देशों के छात्र और शिक्षाविद लाभान्वित होंगे। इसके अलावा, नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान, काठमांडू, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के साथ मिलकर नेपाल के साथ और अधिक सहयोग के अवसर प्रदान करेगा, जिससे दोनों देशों के बीच शैक्षिक रिश्ते और मजबूत होंगे।

'एमजीसीयू न्यूज़लेटर' का विमोचन

विमोचन कार्यक्रम में न्यूज़ लेटर को दिखाते सलाहकार समिति के सदस्य

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के 8वें स्थापना दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय की छमाही पत्रिका 'एमजीसीयू न्यूजलेटर' का विमोचन किया गया। पत्रिका का विमोचन महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति पद्मश्री प्रो. राजेन्द्र मिश्र तथा जय प्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रमेन्द्र कुमार वाजपेयी के कर कमलों द्वारा हुआ।

पत्रिका की सराहना करते हुए कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित न्यूज लेटर का जिक्र करते हुए प्रो. श्रीवास्तव ने इसे विश्वविद्यालय से सम्बंधित गतिविधियों और शिक्षकों व विद्यार्थियों के रचनात्मक अभिव्यक्ति का सुनहरा मंच बताया। पत्रिका के कलेवर और अंतर्वस्तु को सुंदर बताते हुए इसे निरन्तर प्रकाशित करने पर जोर दिया।

पत्रिका के संपादक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने बताया कि इस पत्रिका में विश्वविद्यालय की जनवरी से जून तक की सभी गतिविधि, कार्यक्रमों, उपलब्धियों आदि का विवरण दिया गया है। यह द्विभाषी और छमाही है, जिसमें विश्वविद्यालय के समाचार, शोध, महत्वपूर्ण संगोष्ठी, कार्यशाला, विद्यार्थियों के प्लेसमेंट एवं अन्य महत्वपूर्ण सूचना आदि को अंतर्वस्तु के रूप में शामिल किया गया है।

जनसम्पर्क प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ. श्याम नन्दन ने बताया कि पत्रिका को देश के विश्वविद्यालयों और महत्वपूर्ण अकादमिक संस्थाओं तक पहुँचाने का लक्ष्य जनसम्पर्क प्रकोष्ठ की ओर से निर्धारित है।

विमोचन के अवसर पर एमजीसीयू न्यूजलेटर के सलाहकार समिति के सदस्य प्रो. प्रसून दत्त सिंह, प्रो. शिरीष मिश्रा, प्रो. रणजीत कुमार चौधरी, पत्रिका के संपादक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र, संपादन मंडल के सदस्य डॉ. अंजनी कुमार झा, डॉ. श्याम नंदन, कुलसचिव सह प्रकाशक डॉ. सचिदानन्द सिंह, डॉ. उमेश पात्रा, डॉ. सुनील दीपक घोड़के, सुश्री शेफालिका मिश्रा आदि मंच पर उपस्थित थें।

एमजीसीयू और एम.आई.टी. के बीच एमओयू

एमओयु पर हस्ताक्षर करने के बाद दोनों संस्थानों के पदाधिकारी

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय और मुजफ्फरपुर प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईटी) ने सहयोग को बढ़ावा देने और ज्ञान साझा करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह साझेदारी परस्पर लाभ, सर्वोत्तम प्रयास और बार-बार होने वाले संवाद के आधार पर अकादमिक और अनुसंधान विनिमय को सुविधाजनक बनाने का लक्ष्य रखती है। इस एमओयू के अंतर्गत बौद्धिक ज्ञान और संसाधनों का आदान-प्रदान, नवाचार और उद्यमिता से प्रेरित अवसरों और संसाधनों में साझेदारी, वैज्ञानिक और तकनीकी नेटवर्क और बुनियादी ढांचा संसाधनों का साझा उपयोग, सहयोगी परामर्श और अनुसंधान परियोजनाएं जैसे प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग किया जाएगा।

एमओयू पर औपचारिक रूप से एमआईटी मुजफ्फरपुर के प्राचार्य प्रो. मिथिलेश कुमार झा और एमजीसीयू के अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर एमजीसीयू के भाषा और मानविकी संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून दत्त सिंह और राजीव गांधी पेट्रोलियम प्रौद्योगिकी संस्थान, अमेठी के पूर्व निदेशक ए.एस.के. सिन्हा भी उपस्थित थे।

सहयोग के प्रति अपनी उत्सुकता व्यक्त करते हुए एमजीसीयू के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा, "यह एमओयू दोनों संस्थानों के बीच सहयोग और ज्ञान-विनिमय का एक नया अध्याय है, जो अकादमिक उत्कृष्टता और सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारे बौद्धिक और बुनियादी ढांचा संसाधनों को एकत्रित कर, हम शिक्षा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी में प्रगति को प्रेरित करने वाले नवाचारों की खोज कर सकते हैं।

प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, अनुसंधान और विकास प्रकोष्ठ, एमजीसीयू ने कहा, "एमआईटी मुजफ्फरपुर के साथ यह साझेदारी सहयोगात्मक अनुसंधान और विकास के नए द्वार खोलती है। हम अपनी ताकतों का उपयोग करके ऐसे प्रभावशाली प्रोजेक्ट्स बनाने का लक्ष्य रखते हैं जो उद्यमिता, नवाचार और क्षेत्रीय शैक्षणिक विकास को प्रोत्साहित करेंगे।

एमआईटी मुजफ्फरपुर, जो देश के सबसे पुराने तकनीकी संस्थानों में से एक है, तकनीकी शिक्षा में दशकों का अनुभव रखता है। एमजीसीयू इस प्रतिष्ठित संस्थान के साथ सहयोग को लेकर उत्साहित है और दोनों विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक वातावरण को समृद्ध करने वाली सार्थक विनिमयों की अपेक्षा करता है।यह कदम दोनों संस्थानों के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जा रहा है, क्योंकि वे बिहार और देश के बड़े वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय परिदृश्य में योगदान देने का प्रयास कर रहे हैं।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

विश्वविद्यालय के 50 छात्रों ने यूजीसी-नेट जून 2024 परीक्षा में सफलता का परचम लहराया

एमजीसीयू ने एक बार फिर से अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता का परिचय देते हुए यूजीसी-नेट जून 2024 परीक्षा में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। विश्वविद्यालय के 50 छात्रों ने इस प्रतिष्ठित परीक्षा में सफलता प्राप्त की है, जिनमें से एक छात्र ने जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) के लिए योग्यता प्राप्त की है, 31 छात्रों ने सहायक प्रोफेसर के लिए और 18 छात्रों ने पीएचडी प्रवेश के लिए अपनी जगह बनाई है।

प्रबंधन विभाग की अनु कुमारी ने हासिल किया जेआरएफ:

इस सफलता में सबसे बड़ा योगदान प्रबंधन विज्ञान विभाग का रहा, जहाँ से कुल 17 छात्रों ने इस परीक्षा में सफलता हासिल की है। इसके बाद, राजनीति विज्ञान विभाग के 7 छात्रों ने यह परीक्षा पास की है। खास तौर पर अनु कुमारी जो कि प्रबंधन विज्ञान विभाग की छात्रा हैं, ने जेआरएफ की प्रतिष्ठित योग्यता प्राप्त की है। उनकी यह सफलता विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है।

इस शानदार उपलब्धि पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति

विभागवार सफलता

प्रबंधन विज्ञान	-	17	जन्तु विज्ञान	-	3
राजनीति विज्ञान	-	7	वाणिज्य	-	1
समाजशास्त्र	-	2	अर्थशास्त्र	-	1
पुस्तकालय विज्ञान	-	2	रसायन शास्त्र	-	1
कंप्यूटर विज्ञान	-	2	मीडिया अध्ययन	-	1
हिंदी	-	5	गांधी और शांति अध्ययन	-	1
अंग्रेजी	-	5	शिक्षा	-	1
			संस्कृत	-	1

प्रो. संजय श्रीवास्तव ने सभी सफल छात्रों, उनके अभिभावकों और शिक्षकों को बधाई दी है। उन्होंने कहा, "यह विश्वविद्यालय के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। हमारे छात्रों की यह सफलता उनकी कड़ी मेहनत, संकल्प और विश्वविद्यालय की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रतिफल है। यह उपलब्धि हमारे शिक्षकों के समर्पण और मार्गदर्शन का भी प्रमाण है। हमें विश्वास है कि ये छात्र अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर देश और समाज के उत्थान में योगदान देंगे। जनसंपर्क अधिकारी शेफालिका मिश्रा ने भी छात्रों की इस सफलता पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय परिवार के लिए गर्व का क्षण है। हमारे छात्रों ने यह साबित किया है कि यदि दृढ़ संकल्प और सही मार्गदर्शन हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। हम सभी सफल छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। सभी विभागाध्यक्षों ने भी सफल छात्रों को बधाई दी और उन्हें भविष्य में और अधिक सफलताएँ प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। विभागाध्यक्षों ने यह भी कहा कि यह सफलता उनके विभाग के शिक्षकों और छात्रों के संयुक्त प्रयास का परिणाम है और भविष्य में यह सिलसिला और आगे बढ़ेगा। विश्वविद्यालय के छात्रों की इस उपलब्धि ने एक बार फिर से यह साबित किया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सही दिशा में मेहनत से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। विश्वविद्यालय प्रशासन और समस्त शैक्षणिक समुदाय ने इन सफल छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और उनकी इस शानदार सफलता पर उन्हें शुभकामनाएँ दी है।

मीडिया अध्ययन विभाग के आशीष प्रथम प्रयास में यूजीसी नेट उत्तीर्ण

आशीष कुमार, छात्र, एमजेएमसी तृतीय सेमेस्टर

मीडिया अध्ययन विभाग के एमजेएमसी तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थी आशीष कुमार ने नेट परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की है। यूजीसी नेट परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद आशीष असिस्टेंट प्रोफेसर तथा पीएचडी नामांकन हेतु योग्य हैं। आशीष ने बीजेएमसी की पढ़ाई भी महात्मा गांधी केविवि से ही की है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने शुभकामनाएं देते कहा कि यह मीडिया अध्ययन विभाग तथा विश्वविद्यालय के लिए हर्ष का विषय है। उन्होंने कहा कि यह परिणाम विभाग की शैक्षिक गुणवत्ता का परिचायक है। सीएसआईसीटी के संकायाध्यक्ष प्रो. रंजीत चौधरी ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय और मीडिया अध्ययन विभाग लगातार उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों को बेहतर अवसर दिलाने के लिए प्रयासरत है। इस उपलब्धि पर विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने कहा कि यह आशीष की कड़ी मेहनत और विभाग के सभी प्राध्यापकों के उचित मार्गदर्शन का परिणाम है। विभाग सहित पूरा विश्वविद्यालय इस उपलब्धि से गौरवान्वित है। इस उपलब्धि से अन्य छात्रों को भी प्रेरणा मिलेगी। सहायक आचार्य डॉ. साकेत रमण ने कहा कि इस उल्लेखनीय उपलब्धि ने हमारे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाया है। डॉ. रमण ने कहा कि ऊर्जा, बुद्धि और दृढ़ संकल्प के साथ मीडिया अध्ययन विभाग अकादमिक उत्कृष्टता के लिए प्रयासरत है। साथ ही विभाग के सहायक आचार्य डॉ. परमात्मा कु. मिश्र, डॉ. सुनील दीपक घोडके, डॉ. उमा यादव, जनसंपर्क अधिकारी शेफालिका मिश्रा एवं विद्यार्थियों व शोधार्थियों ने भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

जूलॉजी विभाग के 3 छात्रों ने सीएसआईआर-यूजीसी नेट-जेआरएफ परीक्षा में पाई सफलता

■ ऑल इंडिया रैंक 117वीं, 177वीं तथा 256वीं के साथ जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) के लिए क्वालिफ़ाई

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के जूलॉजी विभाग के तीन विद्यार्थियों का चयन लाइफ साइंसेज विषय में जेआरएफ के लिए हुआ है। 14 अक्टूबर 2024 को घोषित जॉइंट सीएसआईआर-यूजीसी नेट के परिणाम में जूलॉजी विभाग की छात्रा शिखा भारद्वाज और छात्र अभिनव तथा रामाकृष्णा पॉल ने जूनियर रिसर्च फेलोशिप के लिए क्वालीफाई किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि यह सुखद परिणाम स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज के संकाय अध्यक्ष तथा जूलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रणवीर सिंह और शिक्षकों के मार्गदर्शन का प्रतिफल है।

स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज के संकायाध्यक्ष तथा जूलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रणवीर सिंह, ने सफल छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि विद्यार्थियों की कठोर मेहनत और संकाय के मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होंने कहा कि इन छात्रों ने विभाग और विश्वविद्यालय दोनों को गौरवान्वित किया है और भविष्य में वे शोध के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ छूएंगे। जूलॉजी विभाग के वरिष्ठ शिक्षक प्रो. आर्त्तत्राण पाल ने भी छात्रों की इस महत्वपूर्ण सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि विभाग के शिक्षकों और छात्रों की निरंतर कोशिशों से ही यह परिणाम संभव हुआ है। उन्होंने कहा कि विभाग हमेशा से शैक्षणिक और शोध क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए प्रयासरत है और इस सफलता ने विभाग की प्रतिष्ठा को और ऊंचा किया है।

विश्वविद्यालय में एमएससी जूलॉजी के पाठ्यक्रम तथा विद्यार्थी समन्वयक और सहायक प्राध्यापक डॉ. कुंदन किशोर रजक ने सफल छात्रों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उनके द्वारा की गई मेहनत की सराहना की। डॉ. रजक ने मीडिया से बातचीत करते हुए बताया कि सफल विद्यार्थियों में 117वीं रैंक लाने वाले रामाकृष्णा पॉल ओडिशा के छात्र हैं। वहीं 177वीं रैंक प्राप्त करने वाले अभिनव, जिले के अरेराज निवासी गिरीश सिंह और किरण सिंह के पुत्र हैं। अभिनव ने अपनी सफलता का श्रेय महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय अंतर्गत जूलॉजी विभाग के प्रेरणादायक और छात्र कल्याण के लिए समर्पित शिक्षकों को दिया है। ऑल इंडिया रैंक 256 से जेआरएफ क्वालीफाई करने वाली शिखा भारद्वाज, संग्रामपुर प्रखंड अंतर्गत जलहाँ गाँव निवासी सुधांशु कुमार सिंह की पुत्री हैं।

शिखा की रुचि प्रतिरक्षा प्रणाली में शोध करने की है, और वह इस क्षेत्र में गहन अनुसंधान के लिए प्रतिबद्ध हैं।

विश्वविद्यालय में जूलॉजी विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. प्रीति बाजपेई, सहायक प्राध्यापक डॉ. श्याम बाबू प्रसाद. डॉ. अमित रंजन और डॉ. बुद्धि प्रकाश जैन ने अपने छात्रों की इस विशेष उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि जूलॉजी विभाग निरंतर प्रगति करते हुए नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि ये छात्र भविष्य में शोध के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देंगे।

अन्य विभाग के प्राध्यापकों ने भी सफल छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि जूलॉजी विभाग में किए जा रहे शैक्षणिक और शोध कार्यों का यह उत्कृष्ट परिणाम है।

'एक भारत - श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के लिए चार विद्यार्थियों का चयन

एमजीसीयू मोतिहारी के चार छात्रों का चयन भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के लिए हुआ है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए छात्रों ने बिहार के 38 जिलों के 3000 से अधिक आवेदकों के बीच दो-स्तरीय साक्षात्कार प्रक्रिया में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। चयनित छात्रों में: ऋषभदेव शुक्ल, शोधार्थी गांधी अध्ययन एवं शांति विभाग; आदिल लतीफ, छात्र, बी.टेक(सीएसई); संजना कुमारी, छात्रा, बी.टेक(सीएसई); रूपाली कुमारी, छात्रा, सामाजिक कार्य विभाग शामिल हैं। यह कार्यक्रम कर्नाटक के आईआईटी धारवाड़ में आयोजित किया जाएगा। इस दौरान चयनित छात्र बिहार की

कर्नाटक के आईआईटी धारवाड़ में आयोजित होगा कार्यक्रम

समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेंगे। कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने छात्रों को बधाई देते हुए कहा, "यह हमारे विश्वविद्यालय के लिए गर्व का क्षण है। इन छात्रों ने अपनी प्रतिभा और मेहनत से यह सम्मान अर्जित किया है। यह चयन न केवल उनकी व्यक्तिगत सफलता है, बल्कि एमजीसीयू के शैक्षणिक और सांस्कृतिक उत्थान का प्रमाण भी है। मैं उन्हें उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ देता हूँ। जनसंपर्क अधिकारी शेफालिका

ऋषभदेव शुक्ल

आदिल लतीफ

रूपाली कुमारी,

संजना कुमारी

मिश्रा ने कहा, एमजीसीयू के छात्र हमेशा से अपनी बहुमुखी प्रतिभा से विश्वविद्यालय का नाम उज्ज्वल करते आए हैं। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों में हमारी भागीदारी यह दर्शाती है कि हमारे छात्र न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में बल्कि राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

प्रो. प्रणवीर सिंह विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में विषय विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग के अध्यक्ष और जीवन विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रणवीर सिंह ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार (DST-WISE) के अंतर्गत विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के विषय विशेषज्ञ समिति (SEC) की बैठकों में जीव विज्ञान के विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। ये बैठकें क्रमशः जुलाई और अगस्त के महीनों में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ और अमृता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, कोच्चि, केरल द्वारा आयोजित की गई थीं। प्रो. प्रणवीर पिछले 4 वर्षों से इस योजना के लिये अपनी विशेषज्ञता प्रदान कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने अपने दो लगातार कार्यकालों में सेवा दी है।

प्रो. प्रणवीर पिछले 4 वर्षों से इस योजना के लि
अपनी विशेषज्ञता कर रहे प्रदान

विषय-विशेषज्ञ समिति में भारत के शीर्ष संस्थानों, जैसे- IISc बैंगलोर, IIT मद्रास, NCL पुणे, JNU नई दिल्ली, BHU वाराणसी, DU नई दिल्ली, NIPER मोहाली आदि के विशेषज्ञ शामिल हैं। वीमेन इन साइंस एंड टेक्नोलोजी स्ट्रीम (WISE) पोस्ट-डॉक्टोरल फैलोशिप (WISE-PDF) विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग का एक नया कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य 27-60 वर्ष की आयु के बीच की महिला वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों को बेंच-स्तरीय वैज्ञानिकों के रूप में बुनियादी और अनुप्रयुक्त विज्ञान में अपने शोध को जारी रखने के अवसर प्रदान करना है। वहीं, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की "WISE पीएच.डी. फैलोशिप (WISE-PhD)" का उद्देश्य 27-45 वर्ष की आयु के बीच की महिला वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) क्षेत्रों में बेंच-स्तरीय वैज्ञानिक के रूप में डॉक्टोरल अनुसंधान करने का अवसर प्रदान करना है।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के साथ समझौता

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश के बीच शैक्षणिक एवं अकादमिक क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग के लिए समझौता (एमओयू) हुआ। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव और डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. प्रतिभा गोयल ने इस समझौता-पत्र पर हस्ताक्षर किए।

इस अवसर पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि इस समझौते से दोनों विश्वविद्यालयों के मध्य अकादमिक सहयोग की एक नयी राह खुलेगी, जिससे छात्र-छात्राओं को अध्ययन-अध्यापन में सहयोग मिलने के साथ-साथ विज्ञान, तकनीकी और अभियांत्रिकी के साथ शोध-परियोजनाओं में संयुक्त रूप से कार्य करने का अवसर मिलेगा। इसके साथ ही कार्यशाला, संगोष्ठी और शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रमों का संयुक्त रूप से आयोजन भी किया जाएगा, जो दोनों विश्वविद्यालयों के अकादमिक उन्नयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

एमओयू पर हस्ताक्षर करने के बाद दोनों संस्थानों के पदाधिकारी

डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. प्रतिभा गोयल ने कहा कि इस अनुबंध से दोनों विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को शिक्षा और शोध के क्षेत्र में सहयोग मिलेगा।

उन्होंने बताया कि वर्तमान परिवेश में शिक्षा को तकनीकी रूप से अपग्रेड करने के लिये यह अनुबंध सहायक होगा।

विदित हो महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीवास्तव शोध की गुणवत्ता में वृद्धि और शैक्षणिक एवं अकादमिक उन्नयन के उद्देश्य से देश के कई प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के साथ समझौते पर काम कर रहे हैं। हाल ही में भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, तथा भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, मुजफ्फरपुर के साथ महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय ने शिक्षा एवं शोध-क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग के लिए समझौता किया है।

प्रो. संजय श्रीवास्तव ने बताया कि शिक्षा मंत्रालय के निर्देशानुसार नई शिक्षा नीति के तहत महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय शिक्षा एवं शोध की गुणवत्ता बढ़ाने तथा अकादमिक उन्नयन के लिए देश के प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

ज्ञात हो केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति समझौते के साथ ही अयोध्या स्थित डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में अवध विश्वविद्यालय व ऑफसेट प्रिंटिंग एसोसिएशन, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में **'सस्टेनेबल प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग'** विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में मुख्य अतिथि के रूप में भी शामिल हुए। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में अपने वक्तव्य के दौरान उन्होंने कहा कि जैसे सीमाविहीन वैश्विक अर्थव्यवस्था बन रही है, वैसे ही संसाधनों का उपयोग भी काफी बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में प्राकृतिक संसाधनों को बचाये रखने के लिए पर्यावरण हितैषी प्रिंटिंग तकनीकी को अपनाना होगा। इसके लिए इको फ्रेंडली सामग्री का उपयोग आवश्यक है। इसके साथ-साथ ही रिसाकिल किये जाने वाले पेपर और बायोडिग्रेडेबल इंक का उपयोग करना होगा। नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करना होगा। उन प्रिंटिंग तकनीकों को अपनाना होगा जो कम कचरा उत्पन्न करती हैं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पुस्तकालय सहायक पद पर दो छात्रों का चयन

अनुभव कुमार सुमन (फाइल फोटो)

साकेत सुंदरम (फाइल फोटो)

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के शोधार्थी अनुभव कुमार सुमन एवं पूर्व विद्यार्थी साकेत सुंदरम का चयन इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज में पुस्तकालय सहायक पद पर हुआ है। मगांकेविवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अनुभव कुमार सुमन एवं साकेत सुंदरम को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह प्रसन्नता की बात है। हमारे विद्यार्थी अपनी मेहनत एवं लगन की बदौलत लगातार उच्च पदों पर रोजगार पाने में सफल हो रहे हैं जो विद्यार्थियों सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकों के कठिन परिश्रम का भी परिणाम है। उन्होंने पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. रणजीत कुमार चौधरी एवं शिक्षकों को भी बधाई दी। महात्मा बुद्ध परिसर के निदेशक और विभागाध्यक्ष प्रो. रणजीत कुमार चौधरी ने अनुभव कुमार सुमन एवं साकेत सुंदरम को बधाई देते हुए उन्हें अत्यंत परिश्रमी बताया। प्रो. चौधरी ने कहा कि यह उपलब्धि अन्य शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक होगी।विभाग के शिक्षकों डॉ. मधु पटेल और डॉ. सपना ने भी बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। अनुभव कुमार सुमन और साकेत सुंदरम ने अपने उपलब्धि का श्रेय अपने गुरुजनों, माता-पिता और मित्रों एवं शुभचिंतकों को दी। दोनों का मानना है कि सफलता के लिए कठिन परिश्रम और अनुशासन का होना जरुरी है।

'इन्नोवेट 2024' व्यापारिक विचार प्रतियोगिता का सफल आयोजन

कुल 72 व्यावसायिक विचार प्राप्त हुए जिनमें से 10 टीमों का चयन किया गया

प्रबंधन विज्ञान विभाग एवं इंटर्नशिप सेल द्वारा 'इन्नोवेट 2024' व्यापारिक विचार प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम का औपचारिक स्वागत और उद्घाटन विचार प्रतियोगिता की संयोजक और प्रबंधन विज्ञान विभाग की अध्यक्ष डॉ. सपना सुगंधा द्वारा दिया गया।

स्वागत भाषण में प्रबंधन विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. सपना सुगंधा ने कार्यक्रम के उद्देश्य और महत्व पर प्रकाश डाला तथा छात्रों की प्रतिभा और उनके उत्साह की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह प्रतियोगिता छात्रों के व्यावसायिक कौशल को निखारने और उनके विचारों को साकार करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने छात्रों को नवाचार और उद्यमशीलता के क्षेत्र में नए विचारों को विकसित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि रचनात्मकता और उद्यमशीलता देश के समग्र विकास में अहम भूमिका निभा सकती हैं। छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे मंच उन्हें अपने विचारों को व्यावहारिक रूप देने का अनूठा अवसर प्रदान करते हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्वी चंपारण के जिलाधिकारी श्री सौरभ जोरवाल उपस्थित रहे, जिन्होंने छात्रों का उत्साहवर्धन किया और नवाचार के महत्त्व पर बल दिया। मुख्य वक्ता नगर आयुक्त श्री सौरभ सुमन यादव ने अपने विचार रखते हुए कहा कि नवाचार और उद्यमशीलता के माध्यम से युवा समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। प्रतियोगिता में कुल 72 व्यावसायिक विचार प्राप्त हुए थे, जिनमें से 10 टीमों का चयन किया गया, जिन्होंने अपने अनूठे और समस्या-समाधान आधारित विचार प्रस्तुत किए। इन विचारों में सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के नवीनतम तरीके शामिल थे। चयनित टीमों ने विभिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, और डिजिटल तकनीक पर आधारित विचार प्रस्तुत किए, जो नवाचार और व्यावहारिक समाधान की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थे।

प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में जिलाधिकारी श्री सौरभ जोरवाल, नगर आयुक्त श्री सौरभ सुमन यादव, और रामसन प्लाजा के सीएमडी श्री अंगद सिंह शामिल थे।

इन निर्णायकों ने सभी प्रस्तुतियों का निष्पक्ष मूल्यांकन किया और विजेताओं का चयन किया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रुद्र कुमार पांडे और उनकी टीम ने प्राप्त किया। दूसरे स्थान पर हिमांशु और नवनीत की टीम रही, जबकि प्रबंधन विज्ञान विभाग के रचित कन्हैया और दीर्घा ने तीसरा स्थान हासिल किया।

पुरस्कार वितरण पूर्वी चंपारण के जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल के द्वारा किया गया। उन्होंने विजेताओं को बधाई दी और अन्य प्रतिभागियों को भी भविष्य में नवाचार और उद्यमशीलता के क्षेत्र में प्रयासरत रहने का प्रोत्साहन दिया।कार्यक्रम में उपस्थित अन्य विशिष्ट अतिथियों में पंडित मदन मोहन मालवीय स्कूल ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट साइंसेज के डीन प्रो. शिरीष मिश्रा, प्रतिष्ठित व्यवसायी यमुना सिकरिया, अरविंद सराफ, मनीष राज, और कार्यक्रम के प्रायोजक श्री चंदन सावन भी शामिल थे, जिन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कार्यक्रम में उपस्थित जिलाधिकारी, कुलपति, नगर आयुक्त एवं केविवि के अन्य पदाधिकारी

इस अवसर पर प्रबंधन विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. अल्का लल्हाल, हिंदी विभाग के सहायक प्रोफेसर श्याम नंदन कुमार, वाणिज्य विभाग के सहायक प्रोफेसर शिवेंद्र कुमार सिंह और अवनीश कुमार, डॉ. कमलेश कुमार और डॉ. स्नेहा चौरसिया सहित कई अन्य अतिथि शिक्षक भी उपस्थित रहे। शोधार्थियों में राजीव रंजन चौबे, रश्मि राज, सुरभि सुमन, श्री बाला, और प्रियंका उपस्थित थे।

कार्यक्रम में एमबीए और अन्य विभागों के छात्र-छात्राओं ने भी भाग लिया और प्रतियोगिता को सफल बनाया।

कार्यक्रम शुभारम्भ के अवसर पर उपस्थित विशिष्ट अतिथियों का स्वागत मोमेंटो और पौधे देकर किया गया, जिससे पर्यावरण के प्रति जागरूकता का भी संदेश दिया गया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अल्का लल्हाल ने दिया, जिसमें उन्होंने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों, और आयोजन समिति को सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

'इन्नोवेट- 2024' ने विश्वविद्यालय के छात्रों को अपने व्यापारिक विचारों को प्रस्तुत करने और उनके विकास की दिशा में महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया, जिसे सभी अतिथियों और विश्वविद्यालय प्रशासन ने सराहा।

लखनऊ विश्वविद्यालय में अनुभव का सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर चयन

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के शोधार्थी हैं अनुभव कुमार सुमन

अनुभव कुमार सुमन (फाइल फोटो)

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के शोधार्थी अनुभव कुमार सुमन का चयन लखनऊ विश्वविद्यालय में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर हुआ है। बतादें कि हाल ही में अनुभव की नियुक्ति इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज में पुस्तकालय सहायक पद पर भी हुई थी। मगांकेविवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अनुभव कुमार सुमन को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह प्रसन्नता की बात है। अनुभव का एक के बाद एक अच्छे पद एवं विश्वविद्यालय में नियुक्ति होना हम सभी के लिए गर्व की बात है। हमारे विद्यार्थी अपनी मेहनत एवं लगन की बदौलत लगातार उच्च पदों पर रोजगार पाने में सफल हो रहे हैं जो विद्यार्थियों सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकों के कठिन परिश्रम का भी परिणाम है। उन्होंने पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. रणजीत कुमार चौधरी एवं शिक्षकों को भी बधाई दी। महात्मा बुद्ध परिसर के निदेशक और विभागाध्यक्ष प्रो. रणजीत कुमार चौधरी ने अनुभव कुमार सुमन को बधाई देते हुए उन्हें अत्यंत परिश्रमी और अपने कार्य के प्रति समर्पित व्यक्ति बताया। प्रो. चौधरी ने कहा कि यह उपलब्धि अन्य शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक होगी।विभाग के शिक्षकों डॉ. मधु पटेल और डॉ. सपना ने भी बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। विश्वविद्यालय के शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने भी अनुभव को बधाई दी हैं। अनुभव कुमार सुमन ने अपने उपलब्धि का श्रेय अपने गुरुजनों, माता-पिता और मित्रों एवं शुभचिंतकों को दी। उनका मानना है कि सफलता के लिए कठिन परिश्रम, अनुशासन एवं दृढ़ संकल्प का होना जरुरी हैं।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

शोध परियोजना प्रस्ताव को अनुदान हेतु आईसीएसएसआर की मिली मंजूरी

डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव मुख्य परियोजना निदेशक और डॉ. अनुपम कुमार वर्मा परियोजना सह-निदेशक के रूप में शोध कार्य करेंगे

हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव (फाइल फोटो)

समाज कार्य विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अनुपम कुमार वर्मा (फाइल फोटो)

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव और समाजकार्य विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अनुपम कुमार वर्मा को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, दिल्ली द्वारा शोध परियोजना हेतु अनुदान की स्वीकृति मिली है। परिषद् की खोजपूर्ण एवं अनुप्रयुक्त सहयोगात्मक परियोजना के अंतर्गत डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव मुख्य परियोजना निदेशक और डॉ. अनुपम कुमार वर्मा परियोजना सह-निदेशक के रूप में शोध कार्य करेंगे।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा विजन विकसित भारत @2047 के अंतर्गत शोध परियोजना आमंत्रित की गयी थी। इसके अंतर्गत डॉ. श्रीवास्तव की शोध परियोजना "कहानियों से बीज बैंकों तक : ओडिशा की जनजातियों की देशज भाषाओं, प्रथाओं और पारिस्थितिक ज्ञान का संरक्षण" का चयन किया गया है। इसके अंतर्गत ओडिशा के तीन जिलों कोरापुट, मयूरभंज तथा सुन्दरगढ़ की जनजातियों की भाषा, संस्कृति, कृषि प्रणाली एवं औषधीय ज्ञान परम्परा का अध्ययन तथा डिजिटलाइजेशन किया जाएगा। विकसित भारत - 2047 में जनजातियों की ज्ञान परम्परा का क्या योगदान होगा, इस दृष्टि से यह अध्ययन महत्वपूर्ण होगा। इस सहयोगात्मक परियोजना में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रभात रंजन सेठी, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के समाज कार्य विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अनुपम कुमार वर्मा तथा जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय, पोर्ट ब्लेयर के वनस्पति विज्ञान के सहायक आचार्य डॉ.संतोष कुमार झा सह परियोजना निदेशक के रूप में कार्य करेंगे।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव तथा डॉ. अनुपम कुमार वर्मा एवं अन्य शिक्षकों को बधाई दी तथा इस परियोजना को भारतीय ज्ञान परम्परा की दृष्टि से उपयोगी बताते हुए कहा कि देश के संस्थानों का हमारे विश्वविद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ा है। आगे और भी ऐसी शोध परियोजनाओं पर हम काम करेंगे। विकसित भारत की संकल्पना को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय प्रतिबद्ध है।

मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने हर्ष प्रकट किया तथा शुभकामना देते हुए कहा कि जनजातीय ज्ञान के संरक्षण की दृष्टि से यह परियोजना महत्वपूर्ण होगी।

प्रबंधन विज्ञान विभाग में 'वित्तीय कार्यशाला' का आयोजन

मुख्य अतिथि के रूप में 'युवा उद्यमी' अंगद प्रताप सिंह ने छात्रों से साझा किया अपना अनुभव

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि का स्वागत करते विभाग के प्राध्यापक

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के -प्रबंधन विज्ञान विभाग' में एक विशेष 'वित्तीय कार्यशाला' का आयोजन किया गया, जिसमें बिजनेस और वित्तीय ज्ञान पर केंद्रित महत्वपूर्ण चर्चाएं हुई। कार्यशाला में मुख्य अतिथि 'युवा उद्यमी' अंगद प्रताप सिंह थे, जिनका व्यापक अनुभव और विशेषज्ञता छात्रों के लिए बेहद लाभकारी रही। इस कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के प्रबंधन विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. सपना सुगंधा के मार्गदर्शन में हुआ। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यवसायिक और वित्तीय ज्ञान प्रदान करना था, जिससे वे अपने करियर को सही दिशा में आगे बढ़ा सकें। श्री अंगद प्रताप सिंह ने बिजनेस की विभिन्न तकनीकों, फाइनेंशियल मैनेजमेंट और छात्रों को पाकेट मनी से बचत करके निवेश करने का सुझाव और प्रभावी निर्णय लेने के महत्व पर प्रकाश डाला।

उन्होंने छात्रों को वर्तमान व्यापारिक परिदृश्य और उद्योग में उभरती चुनौतियों के लिए तैयार रहने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित शिक्षकों ने भी सक्रिय भागीदारी की। डॉ. अलका लल्हाल, डॉ. कमलेश कुमार, डॉ. स्नेहा चौरसिया और रिसर्च स्कॉलर राजीव कुमार ने वित्तीय प्रबंधन और व्यवसाय विकास के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार साझा किए।

उन्होंने छात्रों को व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने और अपने ज्ञान को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार अद्यतन करने की सलाह दी। छात्रों ने कार्यशाला में अत्यधिक रुचि दिखाई और विशेषज्ञों से विभिन्न सवाल पूछे। छात्रों ने इस कार्यशाला को बेहद प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक बताया। कार्यक्रम का माहौल इंटरएक्टिव रहा, जिससे छात्रों को उद्योग विशेषज्ञों से सीधे संवाद करने और उनके अनुभवों से सीखने का अवसर मिला।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें डॉ. सपना सुगंधा ने सभी प्रतिभागियों और विशेषज्ञों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने छात्रों से इस प्रकार की कार्यशालाओं का अधिकतम लाभ उठाने का आग्रह किया। इस कार्यशाला ने छात्रों को वित्तीय प्रबंधन और व्यवसायिक कौशल के महत्व को समझने में सहायता प्रदान की। साथ ही, यह उन्हें भविष्य में बेहतर करियर के लिए प्रेरित करने में सफल रही। विश्वविद्यालय के इस प्रयास की सराहना सभी प्रतिभागियों ने की।

संविधान दिवस पर होने वाले वर्ष पर्यंत समारोह के श्रृंखला की प्रथम कड़ी का आयोजन

राजनीतिक विज्ञान विभाग तथा गाँधी एवं शांति अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ आयोजित

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि एवं विश्वविद्यालय के पदाधिकारी

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के राजनीतिक विज्ञान विभाग तथा गाँधी एवं शांति अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में संविधान दिवस पर होने वाले वर्ष पर्यंत समारोह के श्रृंखला की प्रथम कड़ी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत राजनीतिक विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ सरिता तिवारी के द्वारा किया गया। उन्होंने अतिथियों का अभिनंदन करते हुए संविधान के महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि, माननीय श्री अमिताभ सिन्हा, वरिष्ठ अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि संविधान का बिहार से गहरा नाता है। डॉ. सचिदानंद सिन्हा ने संविधान सभा की स्थापना की, और डॉ. राजेंद्र प्रसाद इसके अध्यक्ष बने। उन्होंने संतुलन के सिद्धांत पर जोर देते हुए कहा कि अधिकारों के साथ कर्तव्यों का पालन आवश्यक है। उन्होंने न्यायिक सक्रियता की आलोचना करते हुए नागरिकों को सकारात्मक बदलाव लाने का संदेश दिया।

विशिष्ट अतिथि प्रो. रवि रंजन, राजनीति विज्ञान विभाग, जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय ने संविधान को "जीवंत दस्तावेज" बताते हुए कहा कि यह न केवल गरीबों को सशक्त बनाता है बल्कि शक्ति के दुरुपयोग पर भी रोक लगाता है। उन्होंने संविधान द्वारा प्रदत्त स्वतंत्रता, समानता और बंधुता के महत्व पर जोर दिया।

दूसरे विशिष्ट अतिथि, प्रो. धनंजय कुमार वर्मा, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय एमएलबी गर्ल्स पीजी कॉलेज, भोपाल ने संविधान को "उधार की थैली" कहे जाने को खारिज करते हुए कहा कि हमारी परंपरा और श्रोतों ने इसे समृद्ध बनाया है। उन्होंने नागरिकों से संविधान के प्रति जागरूक और सतर्क रहने की अपील की।

अध्यक्षीय भाषण में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने संविधान को भारत के विचार और आदर्शों का प्रतीक बताते हुए इसे राष्ट्र के लिए पवित्र दस्तावेज कहा। उन्होंने कहा कि संविधान दिवस न केवल संविधान को समझने का अवसर है, बल्कि संविधान के प्रति अपने नागरिक दायित्व को आत्मसात कर उसे अपने जीवन में उतारने का भी दिन है।

कार्यक्रम की थीम "हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान" का परिचय प्रो. सुनील महावर, संकायाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान संकाय ने कराया। उन्होंने संविधान निर्माण के इतिहास, गाँधीजी की भूमिका और डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में गठित प्रारूप समिति के योगदान पर चर्चा की। उन्होंने संविधान को राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बताया।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिषद के अध्यक्ष, प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने मौलिक अधिकारों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जुगल किशोर दाधीच, अध्यक्ष, गांधीवादी एवं शांति अध्ययन विभाग ने किया। इस अवसर पर प्रो. सुनील महावर ने उपस्थित सभी को संविधान अपनाने की शपथ दिलाई।

यह आयोजन राजनीति विज्ञान विभाग और गाँधी एवं शांति अध्ययन विभाग के संयुक्त प्रयास से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का समापन

समापन समारोह के बाद अतिथि एवं कार्यक्रम में शामिल प्रशिक्षु

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के गणित विभाग द्वारा आयोजित एक सप्ताह के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का समापन समारोह सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कुलानुशासक एवं संकायाध्यक्ष (मानविकी एवं भाषा अध्ययन विभाग), प्रोफेसर प्रसून दत्त सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, श्री अंजन चौधरी (ई एवं आईसीटी अकादमी, IIT गुवाहाटी), को धन्यवाद ज्ञापित किया और भविष्य में ऐसे कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित होने की आशा व्यक्त की।

शिक्षकों के समग्र विकास पर केंद्रित प्रशिक्षण पांच दिवसीय इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को उच्च शिक्षा में शिक्षण की नई तकनीकों और हमारे आचरण में सुधार के लिए प्रशिक्षित किया गया। प्रतिभागियों को यह सिखाया गया कि कैसे वे अपने शिक्षण कौशल को बेहतर बनाकर विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक और सक्षम बदलाव ला सकते हैं। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों पर भी प्रकाश डाला गया।इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 40 प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें से 31 प्रतिभागियों ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा कर प्रमाणपत्र प्राप्त किया। प्रशिक्षण के प्रत्येक दिन प्रतिभागियों का मूल्यांकन भी किया गया।

प्रमुख वक्ताओं का अनुभव और फीडबैक कार्यक्रम में प्रमुख वक्ताओं, श्री अंजन चौधरी और श्री नीलोत्पल शर्मा (ई एवं आईसीटी अकादमी, IIT गुवाहाटी), ने प्रतिभागियों को संबोधित किया और अपने पांच दिवसीय अनुभव साझा किए। इसके साथ ही, कुछ प्रतिभागियों ने भी अपना फीडबैक दिया और कार्यक्रम से मिली प्रेरणा को साझा किया।

कार्यक्रम का संचालन गणित विभाग की शोधार्थी अपूर्वा भारती द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. शिव कुमार सिंह और डॉ. राजेश प्रसाद, साथ ही शोधार्थी अजीत कुमार, प्रवीण कुमार, और सुदेश कुमार ने विशेष योगदान दिया। समापन समारोह में धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम की संयोजिका, डॉ. बबीता मिश्रा ने किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों और आयोजन समिति के सदस्यों को उनकी मेहनत और समर्थन के लिए धन्यवाद दिया।

प्रबंधन विज्ञान विभाग के छात्र अमन की भारतीय डाक भुगतान बैंक में नियुक्ति

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के मदन मोहन मालवीय वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान स्कूल के प्रबंधन विज्ञान विभाग के पूर्व छात्र, श्री अमन कुमार (MBA वित्त और विपणन, सत्र 2020-22) को भारतीय डाक भुगतान बैंक में कार्यकारी पद पर नियुक्ति मिली है, जो संचार मंत्रालय, डाक विभाग (भारत सरकार) के अंतर्गत आता है। केसरिया, पूर्वी चंपारण, बिहार के निवासी महावीर प्रसाद के पुत्र, अमन की यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय है। डीन, प्रो. शिरीष मिश्रा, विभागाध्यक्ष, डॉ. सपना सुगंधा, और सभी संकाय सदस्य ने अमन को बधाई दी।

अमन कुमार (फाइल फोटो)

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

www.mgcub.ac.in

parisarpratibimb@mgcub.ac.in

@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

स्नातक छात्रों के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम का आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में स्नातक सत्र 2024 के छात्रों के लिए 'दीक्षारंभ' कार्यक्रम का आयोजन बृहस्पति सभागार में किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव सहित सभी विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी, संकाय सदस्य और नए छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों के स्वागत, दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुई। इसके बाद विश्वविद्यालय का कुलगीत प्रस्तुत किया गया।

कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने नवागंतुक छात्रों को संबोधित करते हुए उन्हें विश्वविद्यालय का प्रमुख हितधारक बताते हुए कहा कि एमजीसीयू एक रैगिंग मुक्त परिसर है, जहाँ हर छात्र को एक मेंटर नियुक्त किया गया है। उन्होंने कहा, "आपके व्यक्तित्व के कौशल विकास के लिए यहां विभिन्न अवसर उपलब्ध हैं। विनम्र रहें, परस्पर सम्मान करें, और बड़ी सोच रखें।" उन्होंने छात्रों से परिश्रम का महत्व बताते हुए कहा, "जो व्यक्ति शांति के दिनों में पसीना बहाता है, वही संघर्ष के समय विजय प्राप्त करता है।

कार्यक्रम में उपस्थित विश्वविद्यालय के पदाधिकारी

डॉ. बिमलेश कुमार सिंह ने सभी अतिथियों और नवागंतुक छात्रों का स्वागत किया। इसके पश्चात प्रो. अर्तात्रण पाल (डीन, छात्र कल्याण) ने एमजीसीयू में छात्र कल्याण से संबंधित सुविधाओं की जानकारी दी, जिसमें स्वास्थ्य बीमा, एम्बुलेंस सुविधा, खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ, नए छात्रों के लिए मेंटर-मेंटी कार्यक्रम तथा फेलोशिप शामिल हैं।मुख्य अनुशासन अधिकारी प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने छात्रों को अनुशासन के महत्व और विश्वविद्यालय के एंटी-रैगिंग उपायों की जानकारी दी।

प्रोवोस्ट प्रो. रफीक उल इस्लाम ने छात्रावास आवंटन, सुविधाओं और अनुशासन पर अपने विचार साझा किए। प्रोवोस्ट ने छात्रावास में उपलब्ध आवश्यक सुविधाओं पर भी चर्चा की और छात्रों से नियमों का पालन कर एक सकारात्मक माहौल बनाए रखने का आह्वान किया।

परीक्षा नियंत्रक (प्रभारी) प्रो. संतोष त्रिपाठी ने प्रमोशन और पासिंग क्राइटेरिया, परीक्षा आयोजन एवं मूल्यांकन पैटर्न के बारे में बताया। प्रो. रफीक उल इस्लाम (प्रोवोस्ट) ने छात्रावास आवंटन, वहां की सुविधाओं एवं अनुशासन का परिचय दिया।

लाइब्रेरी प्रभारी और संगणक विज्ञान सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर रंजीत चौधरी ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी के नियमों के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि लाइब्रेरी का उद्देश्य विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करना है, और इसके सही उपयोग से हर विद्यार्थी लाभान्वित हो सकता है। उन्होंने स्कूल के नियमों पर भी प्रकाश डाला और विद्यार्थियों से अनुशासन का पालन करने का आग्रह किया।

पंडित मदन मोहन मालवीय स्कूल ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट साइंसेज के प्रभारी अधिष्ठाता डॉ. सुभ्रता रॉय ने विद्यार्थियों को वाणिज्य और प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान और अध्ययन के महत्व पर जोर दिया।

उन्होंने विश्वविद्यालय के शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि यह समय उनके भविष्य निर्माण के लिए अति महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि हम सभी शिक्षक आप सभी विद्यार्थियों के लिए यहाँ हैं। आपको शिक्षा के क्षेत्र में जो भी सहायता चाहिए वो हम यथा संभव आपको उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम सभी प्राध्यापक आपके भविष्य निर्माण के लिए आपके साथ हैं।

वित्त अधिकारी प्रो. विकास पारीक ने समय पर फीस जमा करने, छात्रवृत्ति योजनाओं और विलंब शुल्क से संबंधित जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय फीस जमा करने की प्रक्रिया को डिजिटलीकरण की दिशा में कार्य कर रहा है, जिससे विद्यार्थियों को किसी भी असुविधा का सामना न करना पड़े।

कुलसाचिव डॉ. सच्चिदानंद सिंह ने प्रशासनिक सेटअप, कार्यप्रवाह और पदानुक्रम पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में व्यवस्थित और पारदर्शी प्रशासनिक प्रक्रिया का पालन किया जाता है, जो विद्यार्थियों और स्टाफ दोनों के लिए लाभकारी है।

प्रो. आनंद प्रकाश (अध्यक्ष, एनईपी कार्यान्वयन) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला।

अंत में अकादमिक अफेयर्स के निदेशक प्रो. बृजेश पांडे ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. स्वेता ने किया।

"वुमेन इन स्टेम: ब्रेकिंग बैरियर्स एंड बिल्डिंग द फ्यूचर" विषय पर व्याख्यान का आयोजन

व्याख्यान में उपस्थित प्रतिभागी

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) और लैंगिक संवेदीकरण प्रकोष्ठ (जीएससी) द्वारा एक विशेष अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीरामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय, लखनऊ की अनुसंधान निदेशक, डॉ. शिखा सिंह ने "वुमेन इन स्टेम: ब्रेकिंग बैरियर्स एंड बिल्डिंग द फ्यूचर" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे किसी भी बाधा से निराश न हों और सफलता की ओर निरंतर प्रयासरत रहें। साथ ही, डॉ. सिंह ने विज्ञान में अध्ययनरत छात्राओं के लिए उपलब्ध विभिन्न सरकारी योजनाओं की भी जानकारी दी। आईसीसी की अध्यक्षा, प्रो. शहाना मजूमदार ने स्वागत भाषण में सभी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य एक ऐसा सुरक्षित वातावरण बनाना है जहाँ हर छात्र-छात्रा अपने सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त कर सके। इसके पश्चात, जीएससी की अध्यक्ष, डॉ. सपना सुगंधा ने नवप्रवेशित छात्राओं को भारत में महिलाओं की सुरक्षा के लिए उपलब्ध विभिन्न कानूनी संरक्षणों से अवगत कराते हुए उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का समापन जीएससी की अध्यक्षा डॉ. मनीषा रानी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने आशा व्यक्त किया कि भविष्य में महिलाएँ भय और असमानता से मुक्त जीवन जी सकेंगी। इस कार्यक्रम में विज्ञान संकाय के छात्राओं के साथ-साथ आईसीसी और जीएससी के सदस्य एवं शिक्षकगण उपस्थित थे।

"आधुनिक भारत के निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय की भारतीय ज्ञान परम्परा समिति के द्वारा **राष्ट्रीय एकता दिवस** के अवसर पर "आधुनिक भारत के निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका" विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव के संरक्षकत्व में इस एक दिवसीय संगोष्ठी का संयोजन भारतीय ज्ञान परम्परा के सदस्य सचिव डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव द्वारा किया गया। अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विमलेश कुमार द्वारा संगोष्ठी में मुख्य वक्तव्य प्रस्तुत किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने संदेश के माध्यम से सरदार पटेल के योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा "राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आज भारत का जो स्वरूप हम देख रहे हैं वह उनकी निर्मिति है। जिस सूझबूझ से उन्होंने रियासतों का भारत में विलय कराया वह उनकी विलक्षण प्रतिभा और दूरदर्शिता का परिचायक है।" मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसूनदत्त सिंह ने अपने संदेश में सरदार पटेल को राष्ट्र के एकीकरण का सबसे बड़ा नायक बताते हुए उनके मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

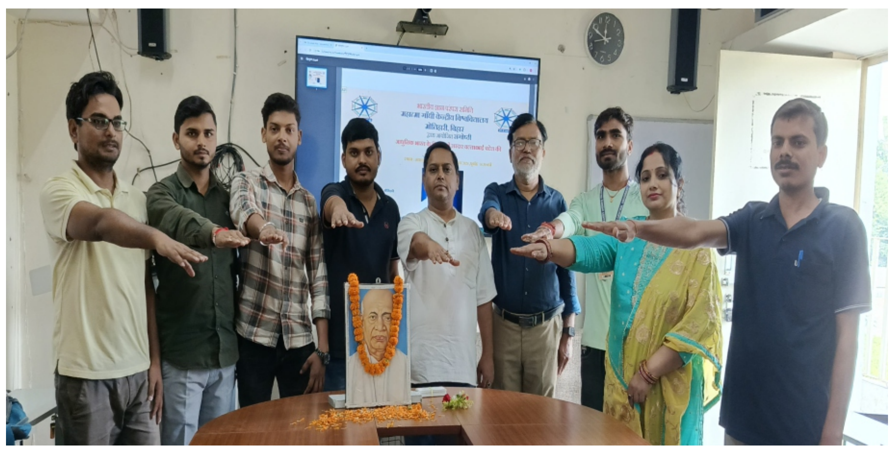

राष्ट्र के एकीकरण में योगदान देने की शपथ लेते संगोष्ठी में शामिल प्रतिभागी

सरदार वल्लभभाई पटेल के चित्र पर पुष्पांजलि से संगोष्ठी का आरम्भ हुआ। डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और सरदार वल्लभभाई पटेल के व्यक्तित्व तथा राष्ट्रनिर्माण में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

उन्होंने हैदराबाद और जूनागढ़ रियासतों के विलय में उनकी भूमिका की विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा कि यदि उन्हें कश्मीर की समस्या को हल करने का अवसर दिया जाता तो उसका भी समाधान कब का हो गया होता।

डॉ. विमलेश कुमार ने कहा " जो कार्य प्राचीन भारत में चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया वही कार्य सरदार पटेल ने आधुनिक भारत में किया। अंग्रेजी विभाग के छात्र विनीत गौरव ने सरदार पटेल के प्रशासनिक योगदान को रेखांकित किया। अनुराग और शहरयार ने भी पटेल जी के व्यक्तित्व पर चर्चा की। इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता शपथ भी उपस्थिति द्वारा लिया गया। कार्यक्रम का अत्यंत सफल संचालन हिन्दी विभाग के शोधार्थी मुकेश कुमार द्वारा किया गया। उपस्थिति का धन्यवाद ज्ञापन शोधार्थी विकास कुमार द्वारा किया गया। राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

विश्वविद्यालय में ऑनलाइन सतर्कता जागरूकता सत्र का आयोजन, नैतिकता और जवाबदेही को बढ़ावा

एमजीसीयू के सतर्कता प्रभाग द्वारा एक ऑनलाइन सतर्कता जागरूकता सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र का उद्देश्य संस्थान में नैतिकता और सतर्कता की संस्कृति को सुदृढ़ करना था। सत्र में विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों और वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव और नेशनल एकेडमी ऑफ कस्टम्स, एक्साइज और नारकोटिक्स के फैकल्टी और सेवानिवृत्त आई.आर.एस. (IRS) अधिकारी श्री रमन मल्होत्रा जैसे सम्मानित वक्ताओं ने अपने विचार साझा किए। सत्र की शुरुआत महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय की केन्द्रीय सतर्कता अधिकारी (CVO) डॉ. सपना सुगंधा द्वारा स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने सतर्कता और नैतिकता की संस्कृति को बढ़ावा देने में विश्वविद्यालय के मिशन पर जोर दिया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में, कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने संस्थागत नैतिकता बनाए रखने और विश्वविद्यालय की पारदर्शिता की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने सतर्कता की आवश्यकता को रेखांकित किया और इसे विश्वविद्यालय में नैतिकता के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया। उनके प्रोत्साहनपूर्ण शब्दों और प्रश्नों ने नैतिक आचरण और सतर्कता के महत्व पर चर्चा को और भी गहरा कर दिया।

मुख्य वक्ता श्री रमन मल्होत्रा ने सतर्कता के महत्व को "24/7 जिम्मेदारी" के रूप में समझाते हुए प्रतिभागियों को प्रेरित किया।

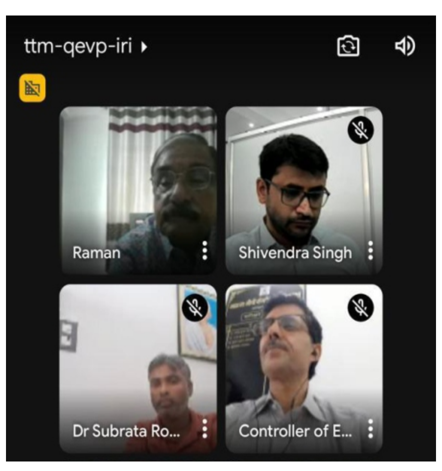

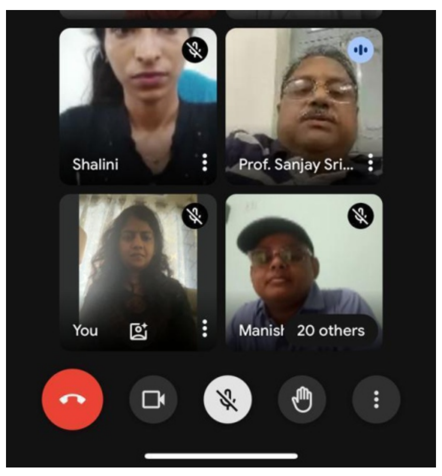

ऑनलाइन जागरूकता सत्र में आभासी रूप से शामिल प्रतिभागी

उन्होंने कहा कि सतर्कता का आभाव आपके लिए समस्या खड़ी कर सकता है।

आगे उन्होंने कहा कि सतर्कता का अर्थ है निरंतर जागरूकता और जवाबदेही को बढ़ावा देना, और इस सिद्धांत का पालन करना व्यक्ति को एक सक्षम एवं मजबूत व्यक्तित्व के निर्माण की ओर ले जाता है।

श्री मल्होत्रा ने पारदर्शिता और सतर्कता के व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया, जिससे उपस्थित सभी को प्रेरणा मिली।

इस सत्र ने एमजीसीयू के एक पारदर्शी और उत्तरदायी संस्थान के निर्माण के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दोहराया, जिससे भविष्य के लिए एक नैतिक वातावरण का निर्माण हो सके।

इस ऑनलइन वेबिनार का संचालन, प्रबंधन विज्ञान विभाग की छात्रा शालिनी सुप्रिया ने किया, और धन्यवाद ज्ञापन प्रबंधन विज्ञान विभाग के शोधार्थी राजीव रंजन चौबे द्वारा प्रस्तुत किया गया।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

केविवि के ई समाचार पत्र 'परिसर प्रतिबिंब' का विमोचन समारोह आयोजित

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के जन-सम्पर्क प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के ई-समाचार पत्र 'परिसर प्रतिबिंब का विमोचन बुद्ध परिसर स्थित बृहस्पति सभागार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने की। मंच पर परिसर प्रतिबिंब के वरिष्ठ परामर्शदाता मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा, मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक प्राध्यापक एवं संपादक डॉ. सुनील दीपक घोड़के और हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक एवं उप संपादक डॉ. श्यामनंदन उपस्थित थे।

कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि यह समाचार पत्र विद्यार्थियों को रचनात्मक तौर पर मजबूत करेगा। इसके द्वारा विश्वविद्यालय व विद्यार्थियों के द्वारा किए गए कार्यों को विस्तार रूप से जानने को मिलेगा। इस नई पहल के द्वारा विद्यार्थियों को ले-आउट डिजाइनिंग, एडिटिंग, रिपोर्टिंग, समाचार लेखन आदि कई चीज़ें सीखने को मिली हैं और भविष्य में मिलती रहेंगी। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए अनेक सुविधाएँ दी जा रही हैं व भविष्य मे भी दी जाती रहेंगी। उन्होंने कहा कि छात्राओं के लिए मार्शल आर्ट सिखाने की शीघ्र ही व्यवस्था की जाएगी तथा जल्द ही कुछ वर्षों में विश्वविद्यालय की अपने जमीन पर कक्षाएँ भी संचालित होती दिखेंगी। उन्होंने छात्रों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि हमारे विद्यार्थी अनेक क्षेत्रों में अपने कौशल को बढ़ाने की दिशा में बहुत उमंग से कार्य कर रहे हैं, जो कि विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है।ई-समाचारपत्र के परामर्शदाता डॉ. अंजनी कुमार झा ने कहा कि यह समाचार पत्र विश्वविद्यालय के कार्यों को प्रदर्शित करेगा तथा यहाँ की समस्त जानकारी को समाज तक पहुँचाने का भी कार्य करेगा। जिससे नये विद्यार्थी विश्वविद्यालय की ओर आकर्षित होंगे। इस ई-समाचार द्वारा न केवल पत्रकारिता के विद्यार्थियों को बल्कि विश्वविद्यालय के सभी विभागों के

विमोचन समारोह में उपस्थित कुलपति एवं संपादन मंडल के सदस्य

विद्यार्थियों को अपने कलात्मक विचार को निखारने का अवसर प्रदान होगा। लेखन कौशल का विकास होगा और उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

ई-समाचार 'प्रतिबिंब परिसर' पत्र के संपादक डॉ. सुनील दीपक घोड़के ने कहा कि इस ई-समाचार पत्र के प्रकाशन में मीडिया अध्ययन विभाग के विद्यार्थियों का अहम योगदान रहा हैं, जिन्होंने इसके लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने कहा की यह ई-समाचारपत्र विश्वविद्यालय के विभिन्न गतिविधियों का एक आईना है। इसकी रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि यह मासिक, द्विभाषी ई- समाचारपत्र नियमित रूप से प्रकाशित होगी। इसमें विश्वविद्यालय से संबंधित समाचारों के साथ कविता, कहानी और संक्षिप्त लेख का भी प्रकाशन होगा। इससे विश्वविद्यालय के आंतरिक एवं बाह्य गतिविधियों के बारे में जानकारी, विश्वविद्यालय परिवार एवं शिक्षा जगत से जुड़े लोगों को मिलेगी। ई- समाचार पत्र होने के कारण इसकी पहुँच दूर तक होगी। इस ई-समाचार का लेआउट डिज़ाइन एमजेमसी तृतीय सेमेस्टर के छात्र प्रतीक कुमार ने की है।

धन्यवाद ज्ञापन जनसम्पर्क प्रकोष्ठ के समन्वयक एवं परिसर प्रतिबिंब के उप-संपादक डॉ. श्याम नंदन ने की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अपने सीमित संसाधनों के बावजूद भी अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहा है। किसी भी कार्य को करने के लिए बेहतर सोच और समन्वय होना चाहिए। खुशी की बात है कि माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव के नेतृत्व में यहाँ के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने लगातार बेहतर कार्य किया है और आगे भी जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि परिसर प्रतिबिंब के नियमित प्रकाशन से उसकी विविध गतिविधियों को जानने और समझने का लोगों को अवसर प्राप्त होगा। ई-समाचार में योगदान देने वाले सभी छात्रों को कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव के कर कमलों द्वारा संपादकीय मंडल के सदस्यों एवं ले-आउट डिजाइन, कंपोज़िंग, समाचार संकलन आदि विभिन्न कार्यों में संलग्न प्रतीक कुमार, तुशाल, शिवानी, जनमेजय, लकी, सुशील, आशीष, रुचि, पूजा आदि विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

मंच संचालन अंग्रेजी विभाग के सहायक प्रध्यापक डॉ. उमेश पात्रा ने की। कार्यक्रम में कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह, अधिष्ठाता प्रो. शिरीष मिश्र, प्रो. रणजीत कुमार चौधरी, प्रो. सुनील महावर, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. जुगल किशोर दाधीच, डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र, डॉ. आशा मीणा, डॉ. दुर्गेश्वर, डॉ. बब्लू पाल, डॉ. ओमकार पैथलोथ, डॉ. कुंदन किशोर, डॉ ताराचन्द्र, डॉ. अनुपम कुमार वर्मा, डॉ शिवेंद्र सिंह, डॉ. कमलेश, डॉ. रश्मि श्रीवास्तव, सुश्री शेफालिका मिश्रा आदि सहित बड़ी संख्या में शिक्षक और छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

'प्रबंधन विज्ञान विभाग' मैनेजमेंट छात्रों के लिए मॉक इंटरव्यू का आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के 'प्रबंधन विज्ञान विभाग' में प्लेसमेंट सेल के द्वारा एमबीए तीसरे सेमेस्टर के छात्रों के लिए मॉक इंटरव्यू का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य छात्रों को आगामी कैंपस सलेक्शन और वास्तविक इंटरव्यू की तैयारी करवाना था। साथ ही, इस प्रक्रिया के जरिए छात्रों की स्किल्स और नॉलेज का परीक्षण भी किया गया।

इस मॉक इंटरव्यू में छात्रों को विभिन्न प्रकार की वास्तविक इंटरव्यू स्थितियों का अनुभव कराया गया, जिससे वे अपने आत्मविश्वास को बढ़ा सकें और पेशेवर दुनिया की चुनौतियों के लिए खुद को तैयार कर सकें।

इस आयोजन में शिक्षकों ने छात्रों का मार्गदर्शन दिया, ताकि वे अपने संचार कौशल, आत्मप्रस्तुति, और तकनीकी ज्ञान में सुधार कर सकें। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से विश्वविद्यालय के शिक्षक और विशेषज्ञ शामिल रहे।

विभागाध्यक्षा डॉ. सपना सुगंधा के नेतृत्व में प्लेसमेंट सेल की डॉ. अलका लल्हाल, अरुण कुमार, डॉ. कमलेश कुमार, डॉ. स्नेहा चौरसिया, राजीव रंजन चौबे, प्रियंका प्रियदर्शी, रोहित गुप्ता ने छात्रों को महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इन विशेषज्ञों ने छात्रों को साक्षात्कार प्रक्रिया, सही उत्तर देने के तरीके, और व्यक्तित्व विकास पर मूल्यवान टिप्स दिए। छात्रों ने इस आयोजन में बड़ी रुचि और जोश के साथ भाग लिया।

उन्होंने इंटरव्यू के दौरान पूछे गए सवालों का आत्मविश्वास से उत्तर दिया और अपने अनुभव साझा किए। मॉक इंटरव्यू के माध्यम से छात्रों को अपनी कमियों की पहचान करने का अवसर मिला और उन्हें सुधार के लिए मार्गदर्शन भी मिला।

इस आयोजन से छात्रों को न केवल आगामी इंटरव्यू के लिए तैयार होने में मदद मिलेगी, बल्कि वे भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना भी बेहतर तरीके से कर सकेंगे।

विभागाध्यक्षा डां सपना सुगन्धां ने इस कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की और इसे छात्रों के लिए महत्वपूर्ण अवसर बताया। इस तरह के आयोजनों से विश्वविद्यालय के 'प्रबंधन विज्ञान विभाग' का उद्देश्य छात्रों को प्रोफेशनल वर्ल्ड के लिए तैयार करना है। मॉक इंटरव्यू जैसे अनुभव छात्रों को उनकी क्षमताओं को पहचानने और निखारने का मंच प्रदान करते हैं। छात्रों ने इस पहल के लिए 'प्रबंधन विज्ञान विभाग' का आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी ऐसे आयोजनों की मांग की।

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयन्ती पर व्याख्यान का आयोजन

जनजातियों के अधिकार के लिए बिरसा मुंडा का योगदान अति महत्वपूर्ण

व्याख्यान में उपस्थित प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयन्ती पर चाणक्य परिसर के राजकुमार शुक्ल सभागार में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित इस व्याख्यान में कूच बेहार पंचनाम बर्मा विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शक्तिपाद कुमार मुख्य वक्ता के रूप में ऑनलाईन माध्यम से जुड़े। उन्होंने बिरसा मुंडा को स्मरण करते हुए उनके द्वारा किये गये योगदान को बताया।

बिरसा मुंडा ने मात्र बीस वर्ष की आयु में ही अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था। उनका जन्म झारखण्ड के खूंटी जिला के अन्तर्गत उलिहातू नामक ग्राम में हुआ था। बिरसा के बचपन का नाम दाऊद था और आदिवासी मुंडा समुदाय से सम्बन्ध होने से मुंडा नाम जुड़कर दाऊद मुंडा हुआ किन्तु बाद में बिरसा मुंडा के नाम से प्रसिद्ध हो गए। जनजातियों के हित के लिए उनका अपने प्राणों को न्यौछावर कर देना, उनके देशहित को दर्शाता है।

आगे मुख्य वक्ता ने उनके सांगीतिक प्रेम को स्पष्ट करते हुए आदिवासी जनजाति के दो गीतों को भी स्पष्ट करते हुए मधुर स्वर में सुनाकर सबका मन मोह लिया।

व्याख्यान के अन्त में प्रश्नोत्तरी भी रखा गया जिसमें प्रश्नों का उत्तर वक्ता ने दिया।

हिन्दी विभाग के प्रोफेसर राजेन्द्र बडगूजर ने कहा कि आदिवासियों के अधिकार के लिए बिरसा मुंडा का योगदान अति महत्त्वपूर्ण रहा है। आपने कहा कि तिलक जी के "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" का सम्बन्ध कहीं न कहीं आदिवासी उक्ति से प्राप्त होता है।

अन्त में बिरसा मुंडा को समर्पित करते हुए एक कविता से अपना व्याख्यान समाप्त किया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि जनजातीय संस्कृति को देखकर भारतीय संस्कृति का ज्ञान आज भी हमें प्राप्त होता है।

आस्तिक और नास्तिक के भेद को स्पष्ट करते हुए कहा कि वैदिक संस्कृति की संस्कृति के समीप जनजातीय परम्परा हमें दिखाई पड़ती है। वैदिक काल में रुद्र, मरुत, अग्नि इत्यादि देवी-देवताओं की पूजा करते थे, तो उन सभी को हम जनजातीय समूहों में स्पष्ट रूप से देखते है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पूर्व ही जनजातीयों के सन्दर्भ में बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों का डंटकर सामना करते हुए अपने प्राणों की बलि दिया था और अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करा दिया।

प्रो. सिंह ने आगे कहा कि हमें इस दिन को गौरव की तरह मनाना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन समाजशास्त्र विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ श्वेता ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन अंग्रेजी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ उमेश पात्रा ने किया।

ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों ही माध्यम से हो रहे इस व्याख्यान में सौ से अधिक लोग उपस्थित रहे।

"मीडिया अर्थशास्त्र और नैतिकता" विषयक संगोष्ठी का आयोजन

मीडिया के नैतिक पहलु को समझने के लिए मीडिया की कार्यप्रणाली को समझना आवश्यक : प्रोफेसर अनुराग दवे

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर स्थित पण्डित राजकुमार शुक्ल सभागार में मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा "मीडिया अर्थशास्त्र और नैतिकता" विषयक एक एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य वक्ता प्रोफेसर अनुराग दवे, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, बीएचयू, बनारस और अध्यक्षता डॉ. अंजनी कुमार झा, विभागाध्यक्ष मीडिया अध्ययन विभाग और संयोजक डॉ परमात्मा कुमार मिश्र थे।

बतौर मुख्य वक्ता प्रो. अनुराग दवे ने विस्तार से मीडिया की कार्यप्रणाली और स्वरूप पर चर्चा की। उन्होंने पत्रकारों के नैतिक मूल्य एवं दायित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। नैतिकता के बारे में बताते हुए कहा कि "सत्य", "सटीकता" और "निष्पक्षता" पत्रकारिता के नैतिक आधार हैं। पत्रकारों को अपने रिपोर्टिंग में संभावित पूर्वाग्रहों को कम करने के लिए विभिन्न धर्मों, समूहों या वाद से ऊपर उठकर एक हद तक अलगाव बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित की।

प्रो. दवे ने मीडिया के आर्थिक पहलू पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मीडिया अर्थशास्त्र, मीडिया उद्योगों और फ़र्मों को प्रभावित करने वाले मुद्दों से जुड़ा एक विषय है।

संगोष्ठी में उपस्थित प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

इसमें अंतरराष्ट्रीय व्यापार, व्यापार रणनीति, मूल्य निर्धारण नीतियां, प्रतिस्पर्धा, और औद्योगिक संकेन्द्रण जैसे विषय शामिल हैं।

मीडिया अर्थशास्त्र में मीडिया का वित्तीय विश्लेषण भी की फिर विद्यार्थियों से कहा कि वित्तीय विवरणों से एकत्रित डेटा और वित्तीय अनुपातों का अध्ययन करना चाहिए। अध्यक्षीय संबोधन में डॉ अंजनी कुमार झा ने कहा कि मीडिया किसी के दबाव में काम नहीं कर सकती। मीडिया के बगैर विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

डॉ. झा ने कहा कि मीडिया को नैतिकता का पालन करना चाहिए और समाज व राष्ट्र निर्माण की अपनी भूमिका को अच्छी तरह से समझनी चाहिए। यदि नैतिक पहलुओं पर ध्यान नहीं दिया गया तो फिर मीडिया के होने का कोई औचित्य नहीं है।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने कहा कि मीडिया को नैतिकता पर टिके रहना चाहिए और सत्य को निडरता के साथ लिखना चाहिए।

उन्होंने कहा की वर्तमान परिदृश्य में मीडिया अर्थशास्त्र और नैतिकता पर चर्चा करने की आवश्यकता है, जिससे प्रदर्शित और जवाबदेही बनी रहें और नई पीढ़ी के पत्रकारों को एक सही मार्गदर्शन मिल सके। इससे मीडिया की गुणवत्ता भी बनी रहेगी।

मुख्य वक्ता का परिचय बीएजेएमसी तृतीय सेमेस्टर की छात्रा रानी कुमारी ने प्रस्तुत की। मंच संचालन एमएजेएमसी प्रथम सेमेस्टर के छात्र आदर्श आर्य ने की। कार्यक्रम में छात्रों ने "मीडिया अर्थशास्त्र और नैतिकता" से संबंधित प्रश्न किया, जिसका समुचित उत्तर मुख्य वक्ता ने दी। कार्यक्रम में मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. साकेत रमण, डॉ सुनील दीपक घोड़के, डॉ उमा यादव सहित विद्यार्थी एवं शोधार्थी मौजूद थे।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

'विकसित भारत की संकल्पना और मीडिया की भूमिका' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

● विकसित भारत की संकल्पना में संस्कृति का बड़ा योगदान- डॉ. राकेश उपाध्याय ● विकसित भारत का लक्ष्य में सम्पूर्ण भारतवासियों की मौलिक जरूरत पूर्ण करना एक महत्वपूर्ण चुनौती

मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा 'विकसित भारत की संकल्पना और मीडिया की भूमिका' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी वृहस्पति सभागार, बुद्ध परिसर, बनकट में आयोजित हुई। संगोष्ठी के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य वक्ता डॉ. राकेश उपाध्याय 'विभागाध्यक्ष- भाषा पत्रकारिता विभाग' भारतीय जनसंचार विभाग, नई दिल्ली थे। स्वागत उद्बोधन एवं विषय प्रवर्तन डॉ. अंजनी कुमार झा ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम के संयोजक मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र थे। बतौर मुख्य वक्ता डॉ. राकेश उपाध्याय ने कहा कि वर्तमान समय सूचना क्रांति का है। आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। विकसित भारत की संकल्पना में भारतीय मीडिया की भूमिका बढ़-चढ़ के होनी चाहिए।

विकसित भारत की संकल्पना का लक्ष्य मौजूदा सरकार का 2047 है, जिसमें सभी प्रकार की वेदना से भारत के लोगो को मुक्त कराना है। हमारी प्रगति की निशानी हमारी बढ़ती अर्थव्यवस्था है। विकसित भारत का लक्ष्य में सम्पूर्ण भारतवासियों की मौलिक जरूरत पूर्ण करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। हमने संरचना तो विकसित कर ली, पर क्या वह गुणवत्ता के पैमाने पर खरा उतर रही हैं? यह महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। देखा जाएं तो देश के विकास में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मीडिया सरकार के द्वारा चलाए जा रहें तमाम परियोजना व योजना कहां तक सफल हो रही है? इस चीज को प्रत्यक्ष रूप से समाज के समक्ष लाती है। मीडिया की भूमिका इसमें भी है कि वह समाज के हित की बात करें। मीडिया को जमीनी हकीकत पर कार्य करने की जरूरत है, ताकि उसमें सत्यता और तथ्य का भरपूर समावेश हो।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता का स्वागत करते विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी संयोजक

डॉ. उपाध्याय ने उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि जिस समाज में बेटे अपने माँ-बाप को घर से निकाल दे रहे हैं, इसमें मीडिया की भूमिका यह है की वे समाज में इन सब चीजों को बंद करने लिए जागरूक करें। उन्होंने यह भी कहा की जितनी तेजी से डिजिटल तकनीक आगे बढ़ रही है, उतनी तेजी से साइबर क्राइम का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। जो एक बड़ी समस्या है।

स्वागत उद्बोधन में विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने कहा की सभी जगह केंद्र में मीडिया ही है। इसके बिना काम किसी का नहीं चलता, चाहें वह कार्यपालिका हो, न्यायपालिका हो या व्यवस्थापिका हो। इन सभी के धराशाई होने पर समाज मीडिया पर ही निर्भर होता हैं। अगर हम मीडिया मे बदलाव चाहते हैं तो उसके लिए हमें तैयार भी होना पड़ेगा।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रश्नों का जवाब देते मुख्य वक्ता एवं उपस्थित विद्यार्थी

उसके लिए जरूरी है कि हम सभी अपने नैतिकता का पालन करें व मीडिया हाउस भी पूर्वाग्रह से मुक्त हो। धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय संगोष्ठी संयोजक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने कहा कि आज देश के विकास और संचालन में जिस सॉफ्ट पॉवर की बात हो रही है उसमें मीडिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अभाव में विकास की बात करना बेमानी है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए सभी देशवासियों के सकारात्मक ऊर्जा की जरूरत है विशेषकर युवाओं की। युवाओं को इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए आगे आना होगा और अपनी पूरी ताकत के साथ प्रयास करना होगा।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. साकेत रमण एवं डॉ. उमा यादव उपस्थित थे। मंच संचालन अपूर्वा त्रिवेदी बीजेएमसी पंचम सेमेस्टर एवं सूरज राज श्रीवास्तव बीजेएमसी तृतीय सेमेस्टर ने की। मुख्य वक्ता के वक्तव्य के उपरांत छात्रों ने कई प्रश्न किए जिसका समुचित उत्तर मुख्य वक्ता ने दिया। कार्यक्रम में विशेष सहयोग तुषाल, प्रतीक, लकी, आदर्श व अंकित की थी। मंच की सजावट अंशिका, मुस्कान, रानी, खुशी, अदिति व प्रीति की थी। संगोष्ठी में मीडिया अध्ययन विभाग सहित विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की सैकड़ों की संख्या में उपस्थिति थी।।

हिंदी भारतीय ज्ञान परंपरा की संवाहिका है : प्रो. संजय श्रीवास्तव

कार्यक्रम में अतिथि का स्वागत करते कुलपति

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि एवं विश्वविद्यालय के पदाधिकारी

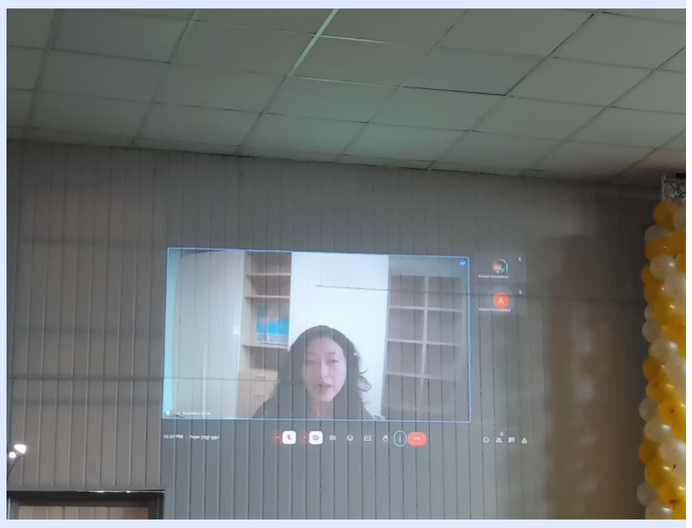
आभासी माध्यम से कार्यक्रम में जुड़ी विशिष्ट अतिथि

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हिंदी विभाग और भारतीय ज्ञान परंपरा समिति द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा-2024 सह अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन समारोह बुद्ध परिसर स्थित बृहस्पति सभागार में सोमवार को संपन्न हुआ ।कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य संरक्षक प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का एक सुदृढ आधार दर्शन रहा है।

पिछले पांच हजार वर्षो से निरंतर यह ज्ञान परंपरा पूरे विश्व को लाभान्वित कर रही है। श्रुति परंपरा एवं ऋषि परंपरा से यह निरंतर आगे बढ़ती रही। यह कई प्रकार के समस्याओं का समाधान करती है, कई विकारों से आपको दूर रखती है। ये सनातनता के सुदृढ़ता का आधार है। यही कारण है कि सनातन को अन्य प्रकार से विकसित नहीं किया जा सकता है। यह एक स्वतंत्र प्रक्रिया है। एक वैज्ञानिक एवं एक दार्शनिक आधार पर हमें इसे कालजयी मानते है।

हिंदी भारतीय ज्ञान परंपरा की संवाहिका है। हिंदी एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में संचरण करती रहती है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से पधारे हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. प्रमोद कुमार सिंह ने कहा कि विचार-विमर्श भारतीय ज्ञान परंपरा की थाती है। भारत भूगोल नहीं भावना है, यहां ज्ञान व्यवहारिक है, परंपरा प्रवाह है, हिंदी भाषा नहीं बोलियां का गुच्छा है। भारतीय ज्ञान परंपरा की एक ग्राह्यता है जो भाषा में अधिक मिलती है। हमारा यह दायित्व है कि हम उसे विभिन्न शब्दों से समृद्ध करें। भारतीय ज्ञान परंपरा में सभी प्रकार की सभ्यता एवं संस्कृति आकर एकाकार हो जाती है। हिंदी भाषा व्यावहारिकता को ग्रहण करती है।कार्यक्रम में संरक्षक के तौर पर मानविकी व भाषा संकाय के अध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि वेद भारतीय ज्ञान परंपरा की गंगोत्री है। सौ वर्षों तक निरोगी काया के साथ जीवित रहना ही भारतीय ज्ञान परंपरा है। हम अपने ज्ञान परंपरा को अक्षुण नहीं रख पाये, यह हमारी असफल रही है। हम सभी भाषाओं का सम्मान करके हिंदी को और अधिक समृद्ध कर सकते है, क्योंकि हिंदी का विकास हम तभी कर पाएंगे जब हम दूसरे भाषा के साथ समन्वय कर सकेंगे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर दरभंगा से पधारे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. प्रभाकर पाठक ने कहा कि हमारे ज्ञान परंपरा में वर्तमान का विशेष महत्व है। ज्ञान परंपरा में शरीर का विशेष स्थान है। इसको सुदृढ रखने के लिए हमारे शास्त्रों में विशेष ज्ञान की बातें कही गई है क्योंकि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ्य मस्तिष्क का वास होता है जो विभिन्न प्रकार के ज्ञान का भंडार है। हमारे ज्ञान परंपरा में शरीर के सुरक्षा की भी बातें की गई है। जीवन-मृत्यु की साधना हमारे ज्ञान परंपरा में सन्निहित है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में आभासी माध्यम से बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज दक्षिण कोरिया से विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में जुड़ी डॉ. यन् तू सोन उर्फ सूर्या ने कहा कि भारतीय शिक्षण प्रणाली में हिंदी के लिए मानक पाठ्यक्रम नहीं था, जबकि इसके लिए एक मानक पाठ्यक्रम की आवश्यकता है। विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक प्रणालियों के आ जाने से हिंदी में पठन-पाठन सरल हो गया है। हम किसी देश की सांस्कृतिक विरासत को अंग्रेजी भाषा में नहीं देख सकते, इसलिए यह कहना कि केवल अंग्रेजी से भारत में काम चल जाएगा, यह सत्य नहीं है। हिंदी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए और हिंदी को शैक्षणिक वातावरण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम पर अवश्य बल दिया जाना चाहिए।

कार्यक्रम के संयोजक, हिंदी विभागाध्यक्ष एवं राजभाषा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि विश्व में भारत के ज्ञान परंपरा का सबसे अधिक योगदान है। भारतीय ज्ञान परंपरा का हम उपयोग विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में करें तो यह देश की प्रगति के लिए लाभदायक होगा। अंग्रेजी शासन एवं विज्ञान की केंद्रीयता ने हमारे ज्ञान की परंपरा को बाधित किया। देशी भाषा के स्रोत की अपेक्षा की गई। विभिन्न प्रकार के कारणों से हमारे ज्ञान की परंपरा को नीचा दिखाने की कोशिश की गई। अंग्रेजों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को अवरूद्ध किया। हिंदी भाषा के विकास को भी अवरूद्ध किया गया। यही कारण है की नई शिक्षा नीति ने भारतीय भाषाओं पर ध्यान दिया है। हिंदी के माध्यम से हम भारतीय ज्ञान परंपरा को संचित कर सकते है इसलिए हिंदी आज अधिक महत्वपूर्ण है।

वहीं हिंदी पखवाड़ा-2024 के तहत कई कार्यक्रमों का आयोजन विश्वविद्यालय में किया गया। इसमें भाग लेने वाले विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में मनीष कुमार दिवाकर, लोकेश पाण्डेय, संजीत कुमार, निखिल पाण्डेय को पुरस्कृत किया गया। जबकि निबंध लेखन प्रतियोगिता में संजीत कुमार, अनुराग कुमार आनंद, राजनंदनी गुप्ता, रूपेश आदर्श को पुरस्कार मिला। वहीं भाषण प्रतियोगिता में रश्मि सिंह, लोकेश पाण्डेय, निखिल पाण्डेय, कुलदीप कुमार को पुरस्कार दिया गया। राजभाषा प्रश्न प्रतियोगिता जो कर्मचारी के लिए थी, उसमें सुनील पाण्डेय, मनीष जायसवाल, बबलू कुमार, अभिषेक ठाकुर, मनीष मिश्रा को पुरस्कृत किया गया।इससे पहले कार्यक्रम में सर्वप्रथम सभी अतिथियों के द्वारा मां सरस्वती और महात्मा गांधी के प्रतिमा के समक्ष पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्वलन करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। शोधार्थी लोकेश पाण्डेय ने सरस्वती वंदना का पाठ किया। सभी मंचस्थ अतिथियों को पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र व प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। हिंदी विभाग में स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सभी का स्वागत विभाग के आचार्य प्रो.राजेंद्र बडगूजर ने किया। मंच का सफल संचालन हिंदी विभाग में सहायक आचार्य डॉ. गरिमा तिवारी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग के ही सहायक आचार्य डॉ. श्यामनंदन ने किया।

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

विकसित भारत के निर्माण में खेलों का है बड़ा योगदान : प्रो. संजय श्रीवास्तव

भारत जैसा विशाल राष्ट्र आज आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में खेलों के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। किसी भी देश में खेल तभी आगे बढ़ पाते है जब खिलाड़ियों का भविष्य सुरक्षित होता है आज मोदी जी की सरकार में हर खिलाड़ी को संसाधन, ट्रेनिंग की आधुनिक सुविधाएं, अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर और चयन में पारदर्शित रूपी चार शस्त्र प्राप्त है। जिससे युवाओं का रूझान और विश्वास खेलों की ओर बढ़ा है। आज खेल के माध्यम से देश के खिलाड़ी विकसित भारत के निर्माण में अपना अहम योगदान दे रहे है।

उक्त उद्गार महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय की कबड्डी टीम की घोषणा पर कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि मोदी जी के फिट इंडिया मूवमेंट के तहत खेलो इंडिया की मुहिम को आगे बढ़ाते हुए बिहार के माननीय राज्यपाल सह कुलाधिपति श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर जी द्वारा बिहार में चांसलर ट्रॉफी अंतर-विश्वविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन खेलों और खिलाड़ियों के विकास की दृष्टि से एक दूरगामी निर्णय है। जिसके सकारात्मक परिणाम मिलेंगे।

विश्वविद्यालय की कबड्डी टीम के साथ कुलपति एवं अन्य पदाधिकारी

चांसलर ट्रॉफी कबड्डी प्रतियोगिता के विषय में जानकारी देते हुए एमजीसीयूबी स्पोर्ट्स बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रो. शिरीष मिश्रा ने बताया कि राजभवन बिहार द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय की कबड्डी की टीमें दिनांक 15 अक्टूबर 2024 से 20 अक्टूबर 2024 तक पटना के पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स कंकड़बाग में प्रतिभागिता करेगी।

इस प्रतियोगिता में पूरे प्रदेश से लगभग 35 टीमें प्रतिभाग करेंगी। एमजीसीयूबी की पुरुष कबड्डी टीम में अंकित राज, आनंद कुमार, अरविंद कुमार, अभिषेक सिंह, श्रीवास्तव दिग्विजय राज, शशांक कुमार, दीपू कुमार, नितिन यादव, रोशी सिंह, सूरज भान, अंकित कुमार मिश्रा, यश पांडे और महिला कबड्डी टीम में मुस्कान कुमारी, ख़ुशी कुमारी, जूही सिंह, मलका शाइदा परवीन, स्वाति दुबे, सुरभि तिवारी, अंकिता सिंह, अदिति कुमारी, स्नेहा भारती, रंजनी कुमारी, सपना कुमारी और मुस्कान कुमारी का चयन किया गया है।

इन दोनो टीमों को राष्ट्रीय खिलाड़ी भानु प्रकाश और कोमल कुमारी प्रशिक्षण देंगे। टीम चयन के दौरान स्पोर्ट्स मैनेजर तथा विशेष कार्याधिकारी (प्रशासन) डॉ. सच्चिदानंद सिंह, स्पोर्ट्स बोर्ड के सदस्य डॉ. सपना सुगंधा, डॉ. असलम खान, डॉ. राकेश पाण्डे डॉ. उमेश पात्रा, डॉ. अरविंद कुमार, डॉ उपमेश तलवार व डॉ. सुनील दीपक घोडके मौजूद रहें और टीम को प्रतियोगिता में विजय प्राप्त करने के लिए शुभकामनाएं दी।

एमजीसीयूबी में ताइक्वांडो प्रशिक्षण शुरू

ताइक्वांडो का प्रदर्शन करते खिलाड़ी

विद्यार्थियों को संबोधित करते कुलपति

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के खेल बोर्ड द्वारा आयोजित ताइक्वांडो प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने विश्वविद्यालय में ताइक्वांडो प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ करते हुए कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी विशेषकर छात्राओं को आत्मरक्षा के लिए मार्शल आर्ट्स का ज्ञान होना चाहिए। इससे उनके भीतर आत्मविश्वास भी बढेगा।

सीमित संसाधनों और बुनियादी ढांचे के बावजूद हम अपने खेल गतिविधियों को मजबूत कर रहे हैं। यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है। खेल बोर्ड का पुनर्गठन हाल ही में किया गया और अब इसके परिणाम सामने आ रहे हैं।

मोतिहारी खेल भवन में दोस्ताना कबड्डी मैच का हुआ आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाम पूर्वी चम्पारण जिला कबड्डी संघ के बीच दोस्ताना कबड्डी मैच खेला गया। ये मैच पुरुष व महिला खिलाड़ी दोनो के लिए आयोजित की गई थी। दोनों संघ के खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। आपको बता दें, विश्वविद्यालय की कबड्डी टीम पटना में 15 से 20 अक्टूबर 2024 के बीच होने वाली 'चांसलर ट्रॉफी कबड्डी' के लिए प्रतिभागिता करेगी।

पूर्वी चम्पारण और एमजीसीयू की महिला कबड्डी टीम के साथ खेल बोर्ड के अधिकारी

इस दोस्ताना कबड्डी प्रतियोगिता के मौके पर महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रो. शिरीष मिश्रा, डॉ. उमेश पात्रा, डॉ. अरविंद कुमार एवं डॉ. सुनील दीपक घोड़के सहित पूर्वी चंपारण जिला कबड्डी संघ उपाध्यक्ष रस्मी रंजन एवं अमित कश्यप, पूर्वी चंपारण जिला कबड्डी संघ के सचिव भानू प्रकाश, एथलेटिक संघ पूर्वी चंपारण के सचिव डॉ. अरविंद कुमार, पूर्वी चंपारण टेबल टेनिस संघ के सचिव शैलेन्द्र मिश्र बाबा, कब्बडी संघ की सदस्य कोमल कुमारी, विवेक रंजन सहित अन्य खेलप्रेमी उपस्थित थे। दर्शकों की उपस्थिति भी भारी मात्रा मे थी।

कार्यशाला

जहां अवसर मिले वहीं से कैरियर की शुरुआत करें- डॉ राकेश उपाध्याय

मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा पत्रकारिता का बदलता स्वरूप: टीवी न्यूज़ पैकेजिंग विषयक कार्यशाला का आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय की मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा पत्रकारिता का बदलता स्वरूप: टीवी न्यूज़ पैकेजिंग विषयक कार्यशाला का आयोजन डीडीयू परिसर के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित हुई।

कार्यशाला के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य वक्ता भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली के भाषा पत्रकारिता विभाग के निदेशक डॉ. राकेश उपाध्याय थे।

अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने की। कार्यशाला के संयोजक मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ परमात्मा कुमार मिश्र थे। धन्यवाद ज्ञापन सहायक आचार्य डॉ. साकेत रमण ने प्रस्तुत की।

बतौर मुख्य वक्ता डॉ राकेश उपाध्याय ने टेलीविजन न्यूज़ रूम के सभी आयामों के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जहां अवसर मिले हमें वही से कैरियर की शुरुआत करनी चाहिए। उन्होंने रोचक ढंग से समझाया कि टीवी न्यूज़ चैनल काम कैसे करते हैं।

जिसमें उन्होंने विभिन्न महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि टेलीविजन सॉफ्टवेयर ऑक्टोपस 8 फोंट पर एकसाथ चीजों को लेकर चलता है। इसमें रन डाउन ब्रॉडकास्ट कंट्रोल रूम, मास्टर कंट्रोल रूम तथा ब्रेकिंग प्लेट के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने टेलीविजन न्यूज रूम सेटअप और टेलीविजन न्यूज रूम सेटअप के इनपुट ओर आउटपुट डिस्क के बारें में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि इनपुट डेस्क केवल खबरों को एकत्रित कर आउटपुट डेस्क तक पहुँचाता है और टेलीविजन न्यूज चैनल पर क्या दिखाना है इसका निर्णय आउटपुट डेस्क करता है। उन्होंने न्यूज़ चैनल पर प्रदर्शित वाले विभिन्न बिंदुओं के बारें में बताया कि ऊपर हेडर तथा नीचे लोअर होती है, जिस पर हेडलाइंस होते हैं। वहीं लोअर बैंड पर जो ब्रेकिंग न्यूज़ चलती है उसे टिकर कहते हैं। उन्होंने आगे हेडलाइन प्रोड्यूसर के मुख्य कार्यों के बारें में बताते हुए कहा कि टेलीविजन एंकर्स रन डाउन प्रोड्यूसर के अनुदेशों पर कार्य करते हैं, साथ ही हेडलाइन प्रोड्यूसर आकर्षक हैडलाइंस का निर्माण करते हैं।

कार्यशाला में मुख्य वक्ता का स्वागत करते विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक

कार्यशाला में उपस्थित विभाग के विद्यार्थी के साथ मुख्य वक्ता एवं प्राध्यापक

उन्होंने न्यूज़ बुलेटिनों के बारें में समझाते हुए बताया कि सभी न्यूज़ बुलेटिनों का समय अलग-अलग होता है। किस न्यूज बुलेटिन्स को कब आना है इसका समय निर्धारित होता है।

उन्होंने पत्रकारिता के नीतिशास्त्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक पत्रकार का कार्य देश, विदेश व समाज में हो रही सभी आवश्यक घटनाओं के बारें में जनता को निष्पक्षता के साथ सूचित करने की होती है। पत्रकार और पत्रकारिता नैतिक मूल्यों को दरकिनार कर नहीं चल सकते हैं। आपके पास जो भी सूचना आती है तो पहले उसे सत्यापित करें तत्पश्चात प्रकशित करें।

उन्होंने आगे विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा की आप तकनीकी से जुड़े सभी पहलुओं के बारे में पक्की जानकारी लें, तकनीक में दक्षता प्राप्त करें और तेजी के साथ टाइपिंग करने का वैज्ञानिक कौशल भी सीखें जिससे पत्रकारिता पेशे में आपको परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्यक्षीय उद्बोधन में मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अंजनी कुमार झा ने कहा कि एक अच्छा पत्रकार बनने के लिए सभी विद्यार्थियों में जोश व उत्साह और निडरता होनी आवश्यक है, जिससे वे सूचनाओं के बारे में निर्भीकतापूर्वक लिख और बोल सके। लेकिन साथ ही साथ संयम को भी आत्मसात करें।

डॉ. झा ने कहा कि पत्रकारिता में अपने आप को अपडेट रखना वहुत जरूरी है। अध्ययन का विस्तार विशेष पत्रकार बनाता है।

उन्होंने कहा कि आज सूचना क्रांति के युग में सत्य और तथ्यपूर्ण समाचार को देना भी एक चुनौती है, जिसे पत्रकारों को स्वीकार करनी चाहिए।

कार्यशाला संयोजक डॉ परमात्मा कुमार मिश्र ने कहा कि पत्रकारिता का स्वरूप बदल रहा है। बदलते हुए परिवेश के अनुरूप विद्यार्थियों को प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की समस्त जानकारी होनी अत्यंत आवश्यक है, जिससे वे भविष्य में एक अच्छे पत्रकार बन सकें।

करियर की दृष्टि से भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जगत में छात्रों के लिए बहुतायत अवसर हैं, लेकिन उन अवसरों को प्राप्त करने के लिए आपको अपने भीतर इस इंडस्ट्री के लिए आवश्यक कौशल में दक्षता प्राप्त करनी होगी और उसके लिए आपको अभ्यासरत रहना होगा।

कार्यशाला में विद्यार्थियों ने टीवी पत्रकारिता जगत से जुड़े अपने कई सारे प्रश्न पूछे जिनका समुचित उत्तर मुख्य वक्ता डॉ राकेश उपाध्याय ने दिया।

धन्यवाद ज्ञापन मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ साकेत रमण ने किया।

मुख्य वक्ता का परिचय एमएजेएमसी तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थी जनमेजय ने दी। कार्यक्रम में मीडिया अध्ययन विभाग के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की उपस्थिति थी।

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

"रामकथा : लोक एवं शास्त्र" विषयक द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल हुए विश्वविद्यालय के प्राध्यापक व शोधार्थी

संगोष्ठी में उपस्थित हिन्दी विभाग के सहायक आचार्य डॉ श्याम नंदन

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर द्वारा आयोजित **"रामकथा: लोक एवं शास्त्र"** विषयक द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार के हिन्दी विभाग के सहायक आचार्य डॉ गोविन्द प्रसाद वर्मा एवं डॉ श्यामनन्दन तथा संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ बबलू पाल के साथ ही हिन्दी विभाग की शोधच्छात्रा अपराजिता तथा संस्कृत विभाग के शोधच्छात्र गोपाल कृष्ण मिश्र एवं ज्योति मिश्रा ने सहभागिता की। उक्त संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिन्दी विभाग के सहायक आचार्य डॉ श्याम नंदन ने "संशय की एक रात" खण्डकाव्य को आधार बनाकर श्रीराम के परमार्थपरक चिन्तन को अत्यन्त सूक्ष्म एवं तार्किक रूप से प्रस्तुत किया। डॉ श्यामनन्दन ने कहा कि राम जनमानस के मन में रचने-बसने वाले हैं। अपने वक्तव्य में डॉ श्याम नंदन ने कहा कि भगवान श्रीराम अपने बारे में नहीं अपितु लोक कल्याण के बारे में पहले सोचते हैं। युद्ध के समय वे इस बात से विचलित हो रहे थे कि युद्ध से लोक का अहित अधिक होगा। व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए युद्ध करके जनहानि उचित नहीं है। उन्होंने ये कहा कि श्रीराम का यही लोक चिन्तन उन्हें पुरुषोत्तम बनाता है। राम का सम्पूर्ण जीवन मर्यादा और धर्म पालन से युक्त रहा है। संगोष्ठी के दूसरे दिन के द्वितीय सत्र में विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ गोविन्द प्रसाद वर्मा ने "हिन्दी साहित्य में राम कथा" विषय पर अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया।

डॉ वर्मा ने राम के समग्र चरित्र को समाज के लिए अनुकरणीय बताया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि राम न केवल हमारे जीवन में है बल्कि लोक साहित्य में भी श्रीराम का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान दृष्टिगत होता है।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ बबलू पाल ने भवभूति के उत्तररामचरित नाटक के आधार पर राम के समग्र चरित्र को समाज के लिए अनुकरणीय बताया। डॉ पाल ने उत्तररामचरित में वर्णित श्रीराम कथा को भाषा विज्ञान, व्याकरण शास्त्र और काव्यशास्त्र की दृष्टि से यथार्थ सिद्ध करते हुए राम के ऊपर लगे कलंकों को श्री राम के पुरुषोत्तम या मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का साधन बताया। उन्होंने कहा कि राम केवल पितृ वचन का पालन करने मात्र से ही मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं बन सकते अपितु उनकी मर्यादा वनगमन से लेकर जीवन के सम्पूर्ण उत्तरभाग में दिखाई देती है। डॉ पाल ने कहा कि जैसे प्राकृतिक द्वन्द्वो को सह सकने वाला बीज ही वृक्ष बन पाता है। प्रभु श्रीराम भी अपने जीवन की कठिनाइयों को धैर्यपूर्वक सहन करके ही मर्यादा पुरुषोत्तम बन पाए।

इस कार्यक्रम के समापन सत्र के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर ओम प्रकाश सिंह ने महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय से आए हुए शिक्षकों के शोध परक व्याख्यान तथा विद्यार्थियों की उत्तम प्रस्तुति हेतु महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय का विशेष रूप से आभार प्रकट किया।

उन्होंने कहा कि आगे भी हम महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय से जुड़े रहकर के ऐसे ही उत्तम विषयों के चिन्तन के लिए प्रयत्न करते रहेंगे। यह हमारे महाविद्यालय के लिए सौभाग्य का विषय है कि महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय का हमें सहयोग प्राप्त हुआ, इसके लिए मैं समस्त महाविद्यालय परिवार की तरफ से महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव सर के प्रति आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने अपने ऐसे परिश्रमी व प्रतिभा सम्पन्न शिक्षकों और विद्यार्थियों को हमें उपलब्ध कराने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

विश्व गर्भनिरोधक दिवस के अवसर पर एक दिवसीय विशिष्ट व्याख्यान

विशिष्ट व्याख्यान में उपस्थित विद्यार्थी

राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार के निर्देशानुसार महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में स्थापित सेहत केंद्र के द्वारा विश्व गर्भनिरोधक दिवस के अवसर पर एक दिवसीय विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन 26 सितंबर को गाँधी भवन परिसर में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य संरक्षक के रूप में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव सर का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। उक्त जागरूकता अभियान कार्यक्रम में जन्तु विज्ञान विभाग,महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के सहायक आचार्य डॉ बुद्धि प्रकाश जैन ने विशिष्ट वक्ता के रूप में अपना उद्बोधन दिया।

मुख्य वक्ता के रूप में वनस्पति विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य डॉ दुर्गेश्वर सिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में गर्भ निरोधक के उपयोग विधि, जागरूकता की महत्ता, इससे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले अनुकूल तथा प्रतिकूल प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम के संयोजक तथा सेहत केन्द्र के समन्वयक डॉ बबलू पाल तथा डॉ गोविन्द प्रसाद वर्मा कार्यक्रम के सह-संयोजक एवं सेहत केन्द्र के सह समन्वयक भी उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता डॉ दुर्गेश्वर सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि वर्तमान समय में हेल्दी रिप्रोडक्टिव फेज को ध्यान में रखते हुए विवाह की आवश्यकता है, जिससे गर्भधारण न हो पाने की समस्याएं नहीं होती हैं।

डॉ सिंह ने अपने वक्तव्य के माध्यम से बताया कि मोबाईल के रेडिएशन, माइक्रो प्लास्टिक का उपयोग, यूरिया इत्यादि का बहुतायत में प्रयोग करना भी हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है, जिसका प्रभाव गर्भधारण करने की समस्याओं में भी देखा जाता है।

जन्तु विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य और कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता डॉ बुद्धि प्रकाश जैन ने कहा कि एस्ट्रोजन और प्रोजेस्ट्रॉन हार्मोन के द्वारा गर्भधारण को रोका जा सकता है, जिसमें गोली, इंजेक्शन, इम्प्लांट, नसबन्दी और लेक्टेशन एनीमोरिया मेथेड इत्यादि विधियों का प्रयोग किया जाता है।

सेहत केन्द्र के समन्वयक डॉ बबलू पाल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमारे शास्त्रों में गर्भाधान संस्कार को 16 संस्कारों में से एक महत्त्वपूर्ण संस्कार माना गया है। गर्भाधान संस्कार की विधि अत्यन्त ही वैज्ञानिक व स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अनुकरणीय है। स्वस्थ व्यक्ति ही अपना और समाज का हित कर सकता है। जिसे आयुर्वेद में कहा भी गया है कि **"प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते"**। इसके अतिरिक्त महाकवि कालिदास ने भी लिखा है कि **"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्"**। अतः शरीर के स्वस्थ रहने पर अपना बौद्धिक, शारीरिक और मानसिक विकास कर सकते हैं। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग के शोधार्थी गोपाल कृष्ण मिश्र ने किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग के शोधार्थी सोनू ने किया। व्याख्यान में हिन्दी विभाग की सहायक आचार्य डॉ श्याम नंदन, डॉ आशा मीणा और डॉ गरिमा तिवारी के साथ ही शोधार्थी और छात्र उपस्थित रहे।

गाँधी जयंती पर एमजीसीयू में प्रार्थना सभा का आयोजन

प्रार्थना सभा में उपस्थित विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं प्राध्यापक

गाँधी जयंती के शुभ अवसर पर एमजीसीयू में एक भव्य प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन और आदर्शों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। यह आयोजन गाँधी भवन में हुआ, जहां मुख्य अतिथि के रूप में माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव, प्रो. एस.के. श्रीवास्तव (पूर्व कुलपति, नेहू विश्वविद्यालय) और प्रो. मज़हर असीफ (प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली) की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्रों विशाल कुमार, सुरभि, विपिन कुमार सिंह और डॉ. श्याम कुमार झा द्वारा राम धुन और अन्य भजनों की सुमधुर प्रस्तुति से हुई, जिससे वातावरण में शांति और मनन का भाव उत्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रो. प्रसून दत्त सिंह, अधिष्ठाता मानविकी संकाय एवं गांधी भवन परिसर निदेशक, ने सभी विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया।

अपने संबोधन में माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने महात्मा गाँधी की आज की दुनिया में स्थायी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और स्वच्छता के सिद्धांत केवल अतीत की बातें नहीं हैं, बल्कि एक प्रगतिशील और एकजुट भारत के लिए मार्गदर्शक हैं। उनके स्वावलंबन के दृष्टिकोण से हमें प्रेरणा मिलती है कि हम एमजीसीयू को उत्कृष्टता का केंद्र बनाएं।"प्रो. एस.के. श्रीवास्तव ने अपने भाषण में महात्मा गाँधी की सादगी और विनम्रता का उल्लेख करते हुए युवाओं से उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा, "महात्मा गाँधी का सर्वभ्रातृत्व का संदेश आज की बिखरी हुई दुनिया में अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें अकादमिक और समाज में शांति और समावेशिता को बढ़ावा देना चाहिए।

प्रो. मज़हर असीफ ने अपने प्रेरणादायक भाषण में गाँधी जी के एकता और सौहार्द के मूल्यों पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "महात्मा गाँधी का मानवीय एकता में विश्वास सभी विभाजनों से परे था। शिक्षाविदों और नागरिकों के रूप में हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनकी विरासत को आगे बढ़ाएं और ऐसी शिक्षा का प्रचार करें जो आपसी सम्मान और संवाद को प्रोत्साहित करे।

इस अवसर पर डॉ. अनुपम वर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ. श्याम झा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने सभी विशिष्ट अतिथियों और उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया।

समारोह का समापन महात्मा गाँधी के शाश्वत सिद्धांतों को अपनाने की सामूहिक प्रतिज्ञा के साथ हुआ, जिससे उपस्थित सभी लोगों को एक स्वच्छ, शांतिपूर्ण और समावेशी समाज के निर्माण के लिए प्रेरणा मिली।

प्रार्थना सभा में संकाय सदस्यों, छात्रों शोधार्थियों विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों और प्रशासनिक कर्मचारियों की बड़ी संख्या में भागीदारी रही।

"हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था: दृष्टि, नवाचार और स्थिरता" पर संगोष्ठी आयोजित

संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्य वक्ता

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग द्वारा विश्व हाइड्रोजन और ईंधन सेल दिवस के अवसर पर "हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था: दृष्टि, नवाचार और स्थिरता" शीर्षक से एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजीव गांधी पैट्रोलियम प्रद्योगिकी संस्थान, अमेठी, उत्तरप्रदेश के पूर्व निदेशक प्रोफेसर ए.एस.के सिन्हा, एम.आई.टी. मुजफ्फरपुर के प्राचार्य प्रोफेसर एम.के. झा, और जे.आई.आई.टी, नोएडा से डॉ. आशीष भटनागर ने भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं कुलपति प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव के अध्यक्षीय उद्बोधन से हुई। उन्होंने हाइड्रोजन ऊर्जा के क्षेत्र में शोध और इसके उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला, खासकर वर्तमान ऊर्जा स्रोतों की तेजी से खपत और पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में।

संकाय अध्यक्ष प्रोफेसर देवदत्त चतुर्वेदी और भौतिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो सुनील श्रीवास्तव ने भी अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. श्वेता सिंह ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के विषय के महत्व की जानकारी दी।

प्रोफेसर ए.एस.के सिन्हा ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि हाइड्रोजन ऊर्जा आने वाले दिनों में पेट्रोलियम आधारित ऊर्जा स्रोतों का बेहतर विकल्प बनकर उभरेगी, बशर्ते इस क्षेत्र में और शोध कार्य किए जाएं। प्रोफेसर एम.के. झा ने ऊर्जा के विभिन्न वैकल्पिक स्रोतों के बारे में जानकारी दी, जबकि डॉ. आशीष भटनागर ने हाइड्रोजन गैस के भंडारण और परिवहन के नए मटेरियल्स की खोज के बारे में चर्चा की।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डा अरविंद शर्मा ने किया।

इस अवसर पर प्रोफेसर आनंद प्रकाश, प्रोफेसर सहना मजूमदार, और भौतिकी विभाग के अन्य शिक्षक एवं छात्र-छात्राएं भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान कार्यक्रम का उद्घाटन

वृक्षारोपण कार्यक्रम में उपस्थित प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार 27 सितंबर को विश्वविद्यालय में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान कार्यक्रम का उद्घाटन पौधरोपण करके किया गया। कार्यक्रम के संरक्षक महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव का मार्गदर्शन और सानिध्य प्राप्त हुआ।

कुलपति प्रो. श्रीवास्तव शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अहर्निश प्रयत्नशील हैं। अपने उद्बोधनों में कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव भारत सरकार की नीतियों और उद्देश्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इस कार्यक्रम के आयोजक विश्वविद्यालय के नोडल अधिकारी डॉ बबलू पाल थे।

कार्यक्रम में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अंजनी कुमार श्रीवास्तव, डॉ गोविंद कुमार वर्मा, डॉ श्याम नंदन, डॉ विश्वजीत बर्मन, डॉ नरेंद सिंह, डॉ अम्बिकेश त्रिपाठी, डॉ राम लाल बगाड़िया आदि विभिन्न विभागों के शिक्षकगण उपस्थित होकर वृक्षारोपण कर 'एक पेड़ मां के नाम' कार्यक्रम को सफल बनाये। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के गैर शैक्षणिक कर्मचारी भी उपस्थित रहकर वृक्षारोपण कार्यक्रम में अपनी भूमिका निभाई।

इस कार्यक्रम में संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी आदि अनेक विभागों के स्नातकोत्तर के छात्र तथा शोधार्थियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर उपस्थित सभी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव सर के दूरदर्शी व कुशल नेतृत्व की सराहना की।

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान रैली कार्यक्रम का आयोजन

शिक्षा मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार तथा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार 28 सितंबर को विश्वविद्यालय में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान रैली कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण किया गया।

इस कार्यक्रम के संरक्षक महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के नोडल अधिकारी डॉ. बबलू पाल ने ग्रामीण लोगों को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के उद्देश्यों से अवगत कराते हुए कहा कि वर्तमान भारत सरकार स्वच्छ और स्वस्थ भारत के निर्माण में दिन रात प्रयास कर रही है। अतः सभी भारतवासियों को इस अभियान के महत्व के प्रति जागरुक होकर वृक्षारोपण में बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिए।

ग्रामीण लोगों ने भारत सरकार की इस पहल की प्रशंसा करते हुए महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया। सभी ग्रामवासियों ने कहा कि विश्वविद्यालय पठन पाठन के अतिरिक्त यह भी कार्य कर रहा है यह बड़ी बात है, हम लोग भी विश्वविद्यालय से प्रेरित होकर इस मुहिम में शामिल होने की प्रतिज्ञा ली। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अंजनी कुमार श्रीवास्तव, डॉ विश्वजीत बर्मन आदि विभिन्न विभागों के शिक्षकगण उपस्थित होकर वृक्षारोपण कर 'एक पेड़ मां के नाम' कार्यक्रम को सफल बनाये। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के गैर शैक्षणिक कर्मचारी भी उपस्थित रहकर वृक्षारोपण कार्यक्रम में अपनी भूमिका निभाई। इस कार्यक्रम में संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी आदि अनेक विभागों के स्नातकोत्तर के छात्र तथा शोधार्थियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

वृक्षारोपण अभियान का समापन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में 'एक पेड़ मां के नाम ' अभियान के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के गाँधी भवन परिसर बनकट में वृक्षारोपण करके 27 से 30 सितंबर तक चले गतिशील वृक्षारोपण अभियान का समापन किया गया।

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव जी का स्वस्थ एवं स्वच्छ भारत निर्माण की इस संकल्पना में निरन्तर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है।

इस अवसर पर गाँधी परिसर के परिसर निदेशक प्रो प्रसून दत्त सिंह ने वृक्षारोपण करके भारत सरकार की इस समावेशी एवं सतत विकास की नीति की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार के प्रयासों को सार्थक बनाने हेतु सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिवार कृतसंकल्पित है। इस अवसर पर 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के नोडल अधिकारी डॉ बबलू पाल की उपस्थिति में व्यापक रूप से विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया।

डॉ पाल ने कहा कि सरकार की यह पहल प्रशंसनीय है, क्योंकि प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना व्यर्थ है। अतः प्रकृति के साथ आत्मीय रूप से जुड़कर जीवन यापन की संस्कृति को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है और वर्तमान सरकार इस दिशा में निरन्तर कार्य कर रही है इसलिए धन्यवाद की पात्र है। समापन समारोह के अवसर पर डॉ कुंदन किशोर रजक, डॉ परमात्मा कुमार मिश्र, डॉ अवनीश कुमार, डॉ श्याम नंदन, डॉ गोविंद प्रसाद वर्मा, डॉ आशा मीणा, डॉ गरिमा तिवारी, डॉ नरेंद सिंह, डॉ अम्बिकेश त्रिपाठी, डॉ दीपक तथा अन्य शिक्षक उपस्थित रहे।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के छात्र व शोधार्थी उपस्थित रहे।

सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कुलपति जी को तथा भारत सरकार की इस दूरगामी परिणाम वाले प्रयास की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

कार्यशाला

'स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता' विषयक कार्यशाला का आयोजन

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निर्देशानुसार कार्यक्रम का हुआ आयोजन

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निर्देशानुसार 27 सितंबर को महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में 'स्वच्छता ही सेवा 2024' कार्यक्रम के अन्तर्गत **'स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता'** विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव थे। कुलपति जी शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के उद्देश्यों की सम्पूर्ति हेतु अहर्निश प्रयत्नशील हैं। गाँधी जी के स्वच्छ और स्वस्थ भारत के सपनों को पूरा करने के लिए वर्तमान सरकार कृतसंकल्पित है।

कार्यक्रम का आयोजन 'स्वच्छता ही सेवा 2024' के विश्वविद्यालय के नोडल अधिकारी प्रो प्रसूनदत्त सिंह के दिशानिर्देशों पर किया गया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डेंटल सर्जन डॉ अमित कुमार ने स्वास्थ्य तथा स्वच्छता विषय पर अपना वक्तव्य दिया।

सारगर्भित वक्तव्य में डॉ अमित कुमार ने कहा कि जिसकी इन्द्रियां तथा मन प्रसन्न रहती हैं वही स्वस्थ माना जाता है।

कार्यशाला में उपस्थित प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

उन्होंने कहा कि केवल बाह्य स्वच्छता ही स्वस्थ रहने का साधन नहीं है बल्कि स्वस्थ रहने के लिए आंतरिक स्वच्छता भी महत्त्वपूर्ण होता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता से सम्बन्धित अनेक वैश्विक चुनौतियों का भी उन्होंने उल्लेख किया।

उद्बोधन में डॉ अमित ने कहा कि तकनीकी कचरा भी आने वाले समय में मनुष्य के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालेगा, इसलिए हमें संसाधनों का सावधानी पूर्वक उपयोग करने हेतु जागरुक होना पड़ेगा। यह कार्यक्रम जागरूकता अभियान का एक महत्वपूर्ण प्लेटफार्म के रूप में सिद्ध होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि प्राचीन भारत की संस्कृति में स्वच्छता का विशेष महत्व था। उन्होंने कहा अँग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय संस्कृति को बहुविध रूप से प्रभावित किया है। डॉ. श्रीवास्तव ने भारत सरकार की नीतियों को प्राचीन भारत की ओर लौटो की नीति से प्रेरित बताया। उन्होंने कहा कि यदि स्वस्थ्य और स्वच्छ भारत की संकल्पना को साकार करना है तो भारतीय शिक्षा नीति को आत्मसात करना ही होगा। कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ बबलू पाल ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित विद्वानों तथा श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ विश्वजीत बर्मन ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के गैर शैक्षणिक कर्मचारी भी उपस्थित रहे। संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी आदि विभागों के छात्र तथा शोधार्थियों ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर उपस्थित सभी ने विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव के दूरदर्शी व कुशल नेतृत्व की सराहना की।

15 दिवसीय स्वच्छ भारत अभियान का समापन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय द्वारा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2024 तक आयोजित 15 दिवसीय स्वच्छ भारत अभियान का समापन समारोह संपन्न हुआ, जिसमें स्वच्छता को व्यवहार और संस्कार का अभिन्न हिस्सा बनाने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों, फैकल्टी सदस्यों और छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए प्रो. प्रसून दत्त, अधिष्ठाता, मानविकी संकाय, ने अतिथियों का स्वागत किया और इस अभियान को निरंतर जारी रखने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा, "हमें स्वच्छता को अपने व्यवहार और संस्कृति में ढालना होगा ताकि यह हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाए। आज हमने शपथ ली है कि स्वच्छता हमारे जीवन का मूल हिस्सा बने।

"प्रो. शिरीष मिश्रा, डीन, पंडित मदन मोहन मालवीय स्कूल, ने अपने संबोधन में स्वच्छता को दैनिक जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उन्होंने कहा, "स्वच्छता को आत्मसात करना आवश्यक है। पूरी दुनिया ने COVID-19 महामारी के दौरान समझा कि इस महा संकट का निदान स्वच्छता ही था। हमें डेनमार्क से भी आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने एमजीसीयू के सफाई कर्मचारियों का सम्मान करते हुए कहा, "स्वच्छता पखवाड़ा एमजीसीयू द्वारा उठाई गई एक अत्यंत सराहनीय पहल है। इस दौरान हमने कई कार्यक्रम आयोजित किए, लेकिन स्वच्छता का यह भाव सिर्फ इन 15 दिनों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बनना चाहिए। क्योंटो, जापान में कूड़ेदान नहीं हैं क्योंकि वहां कूड़ा उत्पन्न ही नहीं होता। भारत को भी उसी दिशा में बढ़ना है।

इस कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. गरिमा तिवारी ने किया, जबकि डॉ. बिमलेश कुमार सिंह, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

मस्ती और धमाल के बीच मना मीडिया अध्ययन विभाग का फ्रेशर पार्टी 'नोवोन्मेष-2024'

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा वृहस्पति सभागार, बुद्ध परिसर में सीनियर विद्यार्थियों द्वारा नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए फ्रेशर्स पार्टी नवोन्मेष-2024 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संरक्षक मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अंजनी कुमार झा थे।

कार्यक्रम के आयोजक एमएजेएमसी तृतीय सेमेस्टर एवं बीएजेएमसी पंचम तथा तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थी थे। जज के रूप में जंतु विज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ कुंदन किशोर रजक, अंग्रेजी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ उमेश पात्रा और शिक्षा शास्त्र विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ मनीषा रानी थी।

कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती और महात्मा गाँधी के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन व माल्यार्पण करके की से हुई।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा पूरे उत्साह के साथ अपने जूनियर्स के स्वागत के लिए रंगारंग कार्यक्रम पेश किया गया, जिसमें संगीत , नृत्य, पंजाबी, अंग्रेजी व हिंदी गानों की प्रस्तुति, ड्रामा , रैंप वॉक तथा विशेष रूप से नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए कैटवॉक तथा क्वेश्चन राउंड का आयोजन हुआ जिसमें विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह व उमंग के साथ भाग लिया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम बीजेएमसी तृतीय सेमेस्टर की मुस्कान कुमारी द्वारा गणेश वंदना की प्रस्तुति हुई। उसके बाद सिमरन कुमारी बीजेएमसी प्रथम सेमेस्टर ने चटक मटक..., जय कुमार, एम एमएजेएमसी तृतीय सेमेस्टर ने झलक दिखला जा... ,आकाश कुमार शोधार्थी द्वारा कविता सब माया है.., मृणाल तथा शांभवी ने युगल नृत्य और श्वेता प्रिया ने ऐसी लागी लगन कि शानदार प्रस्तुति दी।

इसी क्रम में मुस्कान कुशवाहा के मैशअप गीत (गीतों का समूह), श्रुति श्रीवास्तव द्वारा राधा ऑन डांस फ्लोर..., राशि ने खुदाया खैर , आर्य कुमारी ने राधा कैसे न जले.., इशू पराशर ने रमता जोगी..., प्राची ने स्वीटी तेरा ड्रामा की प्रस्तुति कर दर्शको को झूमने पर मजबूर कर दिया। शांभवी द्वारा नैनो वाले ने..., आरुषि ने लंदन ठुमकदा... तथा प्रशांत झा द्वारा जन्नत सजाई मैंने तेरे लिए.. गीतों पर नृत्य प्रस्तुत किये।

एमजेएमसी और बीजेएमसी के मिस्टर और मिस फ्रेशेर्स (क्रमशः बाएँ से दाएँ)

पीएचडी शोधार्थी मयूरी घोष द्वारा तुझसे नाराज नहीं जिंदगी हैरान हूँ ... गीत की रोचक प्रस्तुति दी। वहीं जयकुमार ने रामधारी सिंह दिनकर रचित रश्मिरथी तृतीय पद की प्रस्तुति पेश की।

कार्यक्रम के अंतिम कड़ी में नव आगुंतक विद्यार्थियों के लिए कैटवॉक व क्वेश्चन राउंड का आयोजन हुआ। जिसमें जजों ने सभी विद्यार्थियों की कैटवॉक देखी और कई सारे प्रश्न किये, जिसका समुचित उत्तर नव आगुंतकों द्वारा दिया गया।

इस बीच एमएजेएमसी प्रथम सेमेस्टर के सौरभ कुमार सिंह और श्रेया ने क्रमशः मिस्टर व मिस फ्रेशर का खिताब जीता।

वहीं बीएजेएमसी प्रथम सेमेस्टर के प्रशांत झा और सिमरन कुमारी ने क्रमशः मिस्टर व मिस फ्रेशर का खिताब जीता।

नृत्य, गीत, नाटक से परिपूर्ण इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष ने कहा कि समाज में पत्रकारों की बहुत बड़ी भूमिका होती है और हम आशा करते हैं कि हमारे विद्यार्थी भविष्य में एक अच्छे पत्रकार और रचनात्मक कौशल से युक्त बनेंगे और अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करेंगे। निर्णायक मंडल की तरफ से डॉ. मनीषा रानी ने कहा कि विद्यार्थियों में उमंग व उत्साह की भावना हमेशा रहनी चाहिए तथा वे भविष्य में जो भी कार्य करें पूरे उत्सव व उमंग के साथ करें। साथ ही सभी जजों ने नव प्रवेशित विद्यार्थियों को मंगलमयी आशीर्वाद दिया और भविष्य में सफल होने की कामना की।

मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ परमात्मा कुमार मिश्रा ने कहा कि यह कार्यक्रम पूरे विद्यार्थियों के लिए आपस में एक सामंजस्य बनाने और स्वस्थ वातावरण बनाने की ओर एक नई पहल है।

डॉ. सुनील दीपक घोड़के ने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यह है कि सीनियर्स और जूनियर्स विद्यार्थी एक दूसरे को जाने व समझे और आपस में बंधुता व भाईचारा बनाए रखें। कार्यक्रम में मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. साकेत रमण एवं डॉ. उमा यादव ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया और कार्यक्रम की सराहना की।

कार्यक्रम में मंच का सफल संचालन प्रतीक कुमार ,वागीशा, संजना और नीतीश कुमार ने की।

ओपेन जिम का हुआ लोकार्पणआज

ओपन जिम के उद्घाटन सत्र में उपस्थित स्थानीय सांसद, कुलपति एवं अन्य पदाधिकारी

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के बनकट स्थित गाँधी भवन परिसर में ओपेन जिम का लोकार्पण किया गया। अवसर पर पूर्व केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और लोकसभा सांसद राधा मोहन सिंह ने कहा कि मोदी सरकार ने फिट इंडिया अभियान की शुरूआत जब से की है उसके बाद देश में फिटनेस के प्रति लोगों में रुझान कुछ अधिक बढ़ा है। स्वास्थ्य और फिटनेस के बारे में जागरूकता लगातार बढ़ रही है और लोगों की सक्रियता भी बढ़ी है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि योग, व्यायाम, पैदल चलना, दौड़ना, स्वस्थ भोजन की आदतें और स्वस्थ जीवन शैली हमारी जागरूकता का हिस्सा बन गई हैं। फिट इंडिया अभियान ने प्रतिबंधों के बावजूद इस कोरोना काल में अपने प्रभाव और प्रासंगिकता को साबित किया है।श्री सिंह ने कहा कि आज दुनिया भर में फिटनेस को लेकर जागरूकता बढ़ी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन - डब्ल्यूएचओ ने आहार, शारीरिक गतिविधि और स्वास्थ्य पर एक वैश्विक रणनीति बनाई है। जिम आज सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। आज ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, ब्रिटेन और अमेरिका जैसे कई देशों ने फिटनेस के लिए नए लक्ष्य तय किए हैं और उन पर काम कर रहे हैं। इस तरह के कई देशों में बड़े पैमाने पर अभियान चल रहा है और अधिक से अधिक नागरिक दैनिक व्यायाम की दिनचर्या में शामिल हो रहे हैं।इस अवसर पर महात्मा गाँधी केंद्र विश्वविद्यालय के कुलपति ने कहा कि हम सभी को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना चाहिए। स्वस्थ जीवन शैली अपनानी चाहिए। योग, प्राणायाम और आसन के साथ ही पथ्य-अपथ्य विचार भी महत्वपूर्ण है। प्रो प्रसून दत्त सिंह ने कहा की स्वास्थ्य ही सब कुछ है। स्वास्थ्य धन ही सबसे बड़ा धन है। इसलिए स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिए हमें सचेत और संकल्पित होना चाहिए। इस अवसर पर प्रो. शिरीष मिश्रा विश्वविद्यालय के जनसंपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. श्याम नंदन, डॉ मुकेश कुमार, डॉ. जुगल किशोर दाधीच, डॉ. बबलू पाल डॉ सुनील घोटके, कनिष्ठ अभियंता उत्पल कुमार सहित कई शिक्षक एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

समाज कार्य विभाग ने गेट-टुगेदर प्रोग्राम का किया आयोजन

गेट टुगेदर प्रोग्राम में उपस्थित विभाग के विद्यार्थी एवं प्राध्यापक

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के नवागंतुक विद्यार्थियों के स्वागत एवं पूर्ववर्ती सत्र के विद्यार्थियों के फेयरवेल के लिए आचार्य वृहस्पति सभागार में 'गेट टुगेदर प्रोग्राम' का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में प्रथम सेमेस्टर एवम पूर्ववर्ती सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने तृतीय सेमेस्टर के छात्रों द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया एवं साथ ही सभी ने अपनी कला का प्रदर्शन भी किया।

कार्यक्रम में गीत, नृत्य का रंगारंग आयोजन हुआ। छात्रों ने रैंप पर फैशन और ट्रेंड का जलवा बिखेरा। सामाजिक विज्ञान के अधिष्ठाता सह समाज कार्य के विभागाध्यक्ष प्रो. सुनील महावर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन तथा सरस्वती वंदना से हुई।

प्रो. सुनील महावर ने कहा कि समाज कार्य विभाग के विद्यार्थी अपने बहुमुखी प्रतिभा के लिए जाने जाते हैं। इस तरह के कार्यक्रम से उनमें छिपी प्रतिभा बाहर निकल कर आती हैं। प्रो. महावर ने नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की एवं अध्यापकों के साथ मिलकर हर तरह की सुविधा और सहयोग की बात की।

इस अवसर पर समाज कार्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. उपमेश तलवार, डॉ. अनुपम कुमार वर्मा एवम अतिथि व्याख्याता डॉ. अल्पिका त्रिपाठी मौजूद रहे।

स्वागत समारोह में समाज कार्य तृतीय सेमेस्टर के अभिषेक कुमार, अभिषेक सिंह, अमन, आनंद, अरविंद, अनुपम, बादल, दीपशिखा, गौरव, सुप्रिया गुप्ता, मानस, मुस्कान, निशा , रवि भूषण , रितिक, रूपाली ,सोनाली, सुप्रिया पाठक, विशाल गुप्ता तथा अन्य छात्रों की अहम भूमिका थी।

इस गेट टूगेदर पार्टी में नव आगंतुक छात्रों के स्वागत के साथ-साथ पास आउट छात्रों को विदाई भी दी गई।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें पास आउट छात्रों में से विजेता हिमांशु रंजन को मिस्टर फेयरवेल और विजेता श्रीवास्तव को मिस फेयरवेल घोषित किया गया।

इसी तरह नव आगंतुक विद्यार्थियों में से विजेता श्री प्रशांत को मिस्टर फ्रेशर और सत्यम राज को मिस फ्रेशर चुना गया।

प्रबंधन विज्ञान विभाग द्वारा 'संगमोत्सव' का आयोजन

मिस्टर फ्रेशर और मिस फ्रेशर के साथ विभाग के प्राध्यापक

'प्रबंधन विभाग' के 2023-25 सत्र के प्रबंधन शिक्षार्थीयों द्वारा 'संगमोत्सव' फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का श्री गणेश कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त, 'प्रबंधन विभाग' की विभागाध्यक्षा डॉ. सपना सुगंधा, डॉ. अलका लल्हाल, अरुण कुमार, डॉ. कमलेश कुमार और डॉ. स्नेहा चौरसिया ने सामूहिक रुप से दीप प्रज्वलित कर किया।

विभागाध्यक्षा डॉ. सपना सुगंधा अपने संबोधन में जूनियर्स के स्वागत करने की परंपरा को अनुकरणीय और सराहनीय बतायीं और नवागंतुक 2024-26 बैच के शिक्षार्थीयों का सहृदय स्वागत करते हुए उनके उज्ज्वलतम भविष्य की कामना की।

कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त 'प्रबंधन विभाग' के शिक्षार्थीयों द्वारा किए गए इस आयोजन की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहें कि प्रत्येक आयोजन में उनकी प्रबंधन क्षमता और कार्यकुशलता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

इस पावन अवसर पर 'मिस्टर फ्रेशर' का खिताब मनमीत कुमार और 'मिस फ्रेशर' का खिताब रागी कुमारी को प्रदान किया गया।

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

विकसित भारत की परिकल्पना विकसित बिहार के बिना अधूरी है : आईपीएस विकास वैभव

एमजीसीयू में 'विकसित भारत' पहल के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने की, और मुख्य अतिथि के रूप में आईपीएस और आईजी श्री विकास वैभव उपस्थित रहे, जिन्होंने बिहार की समृद्ध धरोहर, वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की दिशा पर अपने विचार साझा किए।कार्यक्रम के स्वागत भाषण में प्रो. प्रसून दत्त सिंह, मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने बिहार के गौरवशाली अतीत की चर्चा करते हुए इसे भविष्य के निर्माण का आधार बताया। उन्होंने बिहार की ज्ञान, शासन और उद्यमिता में ऐतिहासिक योगदान की बात करते हुए राज्य की महत्ता पर बल दिया।मुख्य भाषण में आईपीएस और आईजी श्री विकास वैभव ने चिंतन और पुनरुत्थान की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "विकसित भारत की परिकल्पना विकसित बिहार के बिना पूरी नहीं हो सकती," और बिहार की उस धरोहर को रेखांकित किया जिसने प्राचीन विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ी। श्री वैभव ने युवाओं से आग्रह किया कि वे बिहार की पूर्व गौरवशाली ऊंचाइयों पर ध्यान दें और समझें कि बिहार का पतन क्यों हुआ।

उन्होंने कहा कि बिहार के पूर्वजों के व्यापक दृष्टिकोण से प्रेरणा लेकर वर्तमान पीढ़ी को भविष्य निर्माण और राष्ट्रीय प्रगति के लिए अपनी सामूहिक ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए। अपने अध्यक्षीय भाषण में कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने बिहार की समृद्ध कृषि और मछली आधारित अर्थव्यवस्था की चर्चा की, जो कभी फली-फूली थी, लेकिन शिक्षा, कानून और व्यवस्था, स्वास्थ्य और अन्य क्षेत्रों में प्रणालीगत विफलताओं के कारण राज्य पिछड़ता गया। उन्होंने बिहार के उच्च शिक्षा तंत्र में सुधार के लिए व्यापक शोध की आवश्यकता पर बल दिया और कई सुधारात्मक उपायों का प्रस्ताव रखा।प्रो. श्रीवास्तव ने यह भी बताया कि बिहार की प्रतिभा भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के मार्ग पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उन्होंने कहा कि बिहार के लोग विदेशों में बड़ी सफलताएं हासिल कर रहे हैं, लेकिन राज्य में यह प्रगति नहीं दिखती। उन्होंने आगामी परियोजनाओं जैसे रक्सौल हवाई अड्डा और रेलवे स्टेशनों के आधुनिकीकरण का उल्लेख करते हुए कहा कि बिहार की कनेक्टिविटी में सुधार हो रहा है और इससे राज्य में नए अवसर उत्पन्न होंगे।

कार्यक्रम में आइपीएस विकास वैभव का स्वागत करते कुलपति

एमजीसीयू के नए कैंपस की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि 2027 तक यह विश्व-स्तरीय सुविधाओं से सुसज्जित होगा।उन्होंने छात्रों से इन अवसरों का लाभ उठाने और भविष्य की जिम्मेदारियों के लिए तैयार होने का आग्रह किया।

आप सभी सौभाग्यशाली हैं कि आपके पास विश्व-स्तरीय सुविधाएं हैं; उन्हें अपनाएं और अपने कर्तव्यों को समर्पण के साथ पूरा करें," उन्होंने कहा।बुद्ध परिसर के निदेशक प्रो. रणजीत चौधरी ने कहा कि विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में बुनियादी ढांचे की भूमिका महत्वपूर्ण है।

उन्होंने विश्वविद्यालय की तेज गति से हो रही अधोसंरचना वृद्धि का उल्लेख करते हुए कहा कि एमजीसीयू जल्द ही उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता का केंद्र बन जाएगा।

प्रो. शिरीष मिश्रा,अधिष्ठाता, वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान विभाग, ने धन्यवाद ज्ञापन किया और कहा कि ऐसे कार्यक्रम न केवल अकादमिक विमर्श को बढ़ावा देते हैं, बल्कि छात्रों के मन में अपने राज्य और राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान की भावना भी उत्पन्न करते हैं।

कार्यक्रम का सञ्चालन डॉ. उमेश पात्रा द्वारा किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, शोधार्थी और प्रशासनिक कर्मचारी उपस्थित रहे।

यह कार्यक्रम बिहार की महत्ता और भारत की विकास आकांक्षाओं के संदर्भ में एक विचारोत्तेजक संवाद था, जिसने युवाओं को भविष्य निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

राजभाषा प्रकोष्ठ तथा हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

निबंध प्रतियोगिता में निर्णायक समिति के सदस्य

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय राजभाषा प्रकोष्ठ तथा हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय 'ज्ञान विज्ञान की भाषा के रूप में हिंदी' था।

हिंदी पखवाड़ा 2024 के अंतर्गत निबंध प्रतियोगिता के निर्णायक समिति में मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ परमात्मा कुमार मिश्र और सहायक आचार्य सुनील दीपक घोडके उपस्थित रहे।

निबंध प्रतियोगिता की संयोजिका हिंदी विभाग की सहायक आचार्य डॉ आशा मीणा थी। हिंदी विभाग के शोधार्थी अशर्फीलाल, अवधेश कुमार और परास्नातक हिंदी के छात्र कुलदीप कुमार सहसंयोजक की भूमिका में थे।

डॉ परमात्मा कुमार मिश्रा ने अपने वक्तव्य में सभी प्रतिभागियों को निबंध के संबंध में जानकारी देते हुए उनके नियमों के बारे में बताया और प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि निबंध साहित्य की विधा है, जो विषय के गहरे तथ्य को उद्घाटित करने की विधा है।

डॉ सुनील दीपक घोड़के ने अपने उद्बोधन में हिंदी की गद्य विधाओं पर चर्चा करते हुए निबंध विधा के बारे में बताया। निबंध प्रतियोगिता के लिए सभी प्रतिभागियों को एक घंटे का समय दिया गया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी विभाग के छात्र कुलदीप कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन हिंदी विभाग के शोधार्थी अशर्फी लाल द्वारा किया गया।

भाषा, हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक-प्रो. संजय श्रीवास्तव

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के **मीडिया अध्ययन विभाग** में "हिंदी पत्रकारिता में भाषागत चुनौतियाँ" विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्वी चंपारण के जिलाधिकारी श्री सौरभ जोरवाल, मुख्य वक्ता भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के संस्कृत विभाग के आचार्य प्रो. श्रीप्रकाश पाण्डेय थे। विषय प्रवर्तन मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने की। स्वागत संगोष्ठी संयोजक डॉ. सुनील दीपक घोड़के ने की।अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि पत्रकारिता के विद्यार्थी जिस भी क्षेत्र में अपनी पत्रकारिता करना चाहते हैं, उस विषय में उनकी अच्छी पकड़ होनी चाहिए। जिस भी भाषा का उपयोग करें वह संपूर्ण रूप से शुद्ध और तथ्य से परिपूर्ण होनी चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को सुझाव दिया कि विद्वान वक्ताओं को सुनना चाहिए और कौशल को विकसित करना चाहिए। शुद्ध भाषा एक दूसरे को प्रभावित करती है। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि अधिकाधिक

संगोष्ठी में उपस्थित जिलाधिकारी, केविवि के कुलपति, मुख्य वक्ता एवं विभाग के प्राध्यापक

संगोष्ठी को संबोधित करते जिलाधिकारी

संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्या वक्ता

अपने भाषा में वार्तालाप करें और निज भाषा पर गर्व करें। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि हमारी भाषा, हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक है। जिस का ख्याल पत्रकारिता के विद्यार्थियों को रखनी चाहिए।

बतौर मुख्य अतिथि जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल ने कहा कि हम देशवासी अंग्रेजों के प्रभुत्व से आजाद हो गए परंतु हम आज भी मानसिक तौर पर उनकी भाषा के गुलाम है। हमें अंग्रेजी भाषा से अधिक अपनी मातृ भाषा हिंदी पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, ताकि देश को नई दशा दिशा मिले। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा पत्रकारिता में अत्यधिक महत्व रखता है तथा पत्रकारिता के विद्यार्थियों को हिंदी भाषा की शुद्धता पर ध्यान देने की आवश्यकता हैं। हम सभी हिंदी भाषा में सोचते हैं तथा एक पत्रकार का अहम कार्य यह होता है कि वह समाज को सरल भाषा में जानकारी उपलब्ध कराएं, जिससे लोगों को सहजता से समझ आ जाएं।

मुख्य वक्ता प्रो. श्रीप्रकाश पाण्डेय ने कहा कि हम भारतवासियों को अपनी मातृभाषा हिंदी पर गर्व होनी चाहिए। आज हिंदी भाषा में अंग्रेजी भाषा का सम्मिलन और व्याकरणीय अशुद्धियां देखी जा रही हैं, जो की हमारे भाषा की गिरावट की ओर संकेत दे रही है। उन्होंने कहा कि एक पत्रकार में सुनने, बोलने ,लिखने और पढ़ने के गुण विद्यमान होनी चाहिए, जिससे वे शुद्धता पूर्वक अपनी जानकारी को समाज तक पहुंच सकें। उन्होंने विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति शुद्धता व उच्चारण सम्बन्धी विशेष बातों पर बल देते हुए कहा की भाषा से संस्कार का निर्माण होता है तथा संस्कार से संस्कृति का निर्माण होता है। पत्रकारिता के विद्यार्थियों का आह्वाहन करते हुए कहा कि मातृभाषा को अपने समाज में लोकप्रिय बनाने की जरूरत है। ताकि लोग ज्यादा से ज्यादा अपनी भाषा में अध्ययन करें और अपने दैनिक जीवन में इसका अधिक से अधिक उपयोग करें। विषय प्रवर्तन करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने कहा कि डिजिटल मीडिया के आने से हिंदी पत्रकारिता में भाषागत चुनौतियाँ बढ़ी है। हिंदी पत्रकारिता में भाषा को समृद्ध करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में सरल भाषा के साथ शुद्ध भाषा हो इसकी चिंता करनी होगी। विभिन्न समाचारपत्रों में भाषा की शुद्धता और अशुद्धता का भी जिक्र किया और विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के प्रति प्रेरणा प्रदान की।अतिथियों का स्वागत संगोष्ठी संयोजक डॉ. सुनील दीपक घोड़के ने की। उन्होंने हिंदी और हिंदी पत्रकारिता के प्रति अनुराग विकसित करने और भाषागत चुनौतियों का जिक्र किया।धन्यवाद ज्ञापन मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने की। कार्यक्रम में मुख्य नियंता एवं गाँधी परिसर के निदेशक प्रो. प्रसून दत्त सिंह, डीडीयू के निदेशक प्रो. शिरीष मिश्र, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. श्याम कुमार झा, मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. साकेत रमण, डॉ. उमा यादव, डॉ. सुब्रतो रॉय, डॉ. शिवेंद्र सिंह, डॉ.रवीश चंद्र वर्मा, डॉ. शेफालिका मिश्रा आदि मौजूद थे। मंच का संचालन तुशाल कुमार और पूजा कुमारी के द्वारा किया गया।अतिथियों का परिचय अंशिका कुमारी, अपूर्वा त्रिवेदी एवं राशि कुमारी ने दिया। चर्चा सत्र में रुचि भारती, गजेंद्र कुमार, अदिति सिंह एवं अंशिका कुमारी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का समुचित जवाब मुख्य वक्ता प्रो श्रीप्रकाश पांडेय के द्वारा दिया गया। संगोष्ठी का समापन राष्ट्रगान से हुई।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

हिंदी दिवस की पूर्व संध्या के अवसर पर 'राष्ट्रीय एकता और हिंदी' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ के हिंदी विभाग की 'नवज्योतिका' संस्था द्वारा हिंदी दिवस की पूर्व संध्या के अवसर पर 'राष्ट्रीय एकता और हिंदी' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी इस संगोष्ठी में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार, के सहायक आचार्य डॉ. श्याम नन्दन विशिष्ट वक्ता के रूप में शामिल हुए। लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रो. पवन अग्रवाल, श्री जयनारायण मिश्र पी .जी .कालेज के डा. रमेश प्रताप सिंह, महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो मंजुला उपाध्याय, हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो मंजुला यादव, प्रो अमिता रानी सिंह, डा. अपूर्वा अवस्थी, श्रीमती अंकिता पांडेय, सुश्री मेघना यादव उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और माँ सरस्वती की वन्दना से हुआ।अतिथियों का स्वागत पुष्प-पौध और स्मृति चिन्ह भेंटकर किया गया। विशिष्ट वक्ता डा. श्याम नंदन ने अपने वक्तव्य में कहा कि साहित्य के स्वरूप निर्माण में जनता की चित्तवृत्ति महत्वपूर्ण होती है। जनता की चित्तवृत्ति सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक कारकों से प्रभावित होती है। साहित्य में ये प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती हैं। साहित्य में प्रकट होने वाली प्रवृत्ति केवल जन- समुदाय की ही नहीं होतीं। इन प्रवृत्तियों से भाषा के स्वाभाव को भी समझा जा सकता है। हिंदी स्वभावत: समन्वयवादी है। हिंदी सभी भाषाओं के साथ मिलकर चलती है।

हिंदी भारत की सभी भाषाओं के साथ भगिनी-भाव रखती है। हिंदी का अन्य भारतीय भाषाओं के साथ भगिनी-भाव और समन्वयवादी स्वभाव देश की एकता को मजबूत करता है। हिंदी ने राष्ट्रीय आंदोलनों में निर्णायक भूमिका निभाई है।

हिंदी ही है, जो देश की सभी भाषाओं के साथ चलकर देश की एकता के सूत्र को मजबूत करती है। हिंदी का सामर्थ्य ही है कि संपर्क भाषा के रूप में हिंदी लगातार बढ़ती जा रही है। तकनीकी के युग में हिंदी तकनीकी से जुड़कर युगीन आवश्यकताओं के साथ खुद को समायोजित कर रही है।

हिंदी सभी भारतीय भाषाओं के सुरक्षा और संवर्धन की गारंटी है। कोई भी विदेशी भाषा भारतीय भाषा के साथ न तो भगिनी भाव रखती है, न ही मैत्री भाव। राजनीतिक कारणों से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच विभेद उत्पन्न करने का प्रयास किया जा रहा है लेकिन राष्ट्रीयता का भाव सभी भाषाओं में समान रूप से दिखाई पड़ता है और यही राष्ट्रीयता का भाव सभी भाषाओं को एक साथ जुड़ने का सूत्र प्रदान करता है।

राष्ट्रीयता के भाव और एकता को मजबूत करने में हिंदी सभी भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करती है। हिंदी भाषा में प्रायः सभी भाषाओं के शब्द मिलते हैं और हिंदी भाषी समाज तथा भारत सरकार लगातार भारतीय भाषाओं की प्रचलित शब्दावली को हिंदी के साथ जोड़ने के लिए काम कर रही है।

निकट भविष्य में हिंदी पूरे भारत की भाषाओं के साथ सांस्कृतिक और राजनीतिक एकता की संवाहक और नेतृत्वकर्ता भाषा के रूप में विकसित होगी।

संगोष्ठी को प्रो. पवन अग्रवाल, डॉ. रमेश प्रताप सिंह ने भी संबोधित किया। संगोष्ठी के अंत में हिंदी दिवस के उपलक्ष में आयोजित भाषण प्रतियोगिता और काव्यपाठ प्रतियोगिता में विजेता छात्राओं को पुरस्कार भी प्रदान किये गये।

हिंदी आरंभ से ही एकीकरण की भाषा रही है- डॉ.अंजनी कुमार श्रीवास्तव

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार में राजभाषा प्रकोष्ठ एवं हिंदी विभाग द्वारा हिंदी पखवाड़ा -2024 के अन्तर्गत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन बनकट स्थित नारायणी कक्ष में 25 सितम्बर को हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजभाषा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष एवं हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने की।

इस कार्यक्रम की संयोजक राजभाषा प्रकोष्ठ की सदस्य एवं हिंदी विभाग की सहायक आचार्य डॉ. गरिमा तिवारी रहीं। कार्यक्रम में निर्णायक समिति के सदस्य के रूप में हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ गोविंद प्रसाद वर्मा, राजनीति विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य डॉ.नरेंद्र सिंह एवं शैक्षणिक अध्ययन विभाग की सहायक आचार्य डॉ. मनीषा रानी उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त जन संपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. श्याम नन्दन एवं डॉ. आशा मीणा सहायक आचार्य, हिंदी विभाग की भी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी किसी एक क्षेत्र की भाषा नहीं है। हिंदी आरंभ से ही एकीकरण की भाषा रही है। संस्कृत के बाद हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जो भारत के एकीकरण में समर्थ है। स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी के माध्यम से ही उपनिवेशवाद के खिलाफ हमने संघर्ष किया।निर्णायक समिति की सदस्य डॉ. मनीषा रानी ने कहा कि एकीकरण का मतलब समन्वय की भावना है। हिंदी की शैली और बोधगम्यता अन्य भाषाओं से श्रेष्ठ है। भारत के समग्र विकास में सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने पर ही नई शिक्षा नीति के लक्ष्य को हम प्राप्त कर सकेंगे।

निर्णायक समिति के सदस्य डॉ. नरेंद्र सिंह ने पुरस्कारों की घोषणा की। इस प्रतियोगिता में कुल पन्द्रह प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें प्रथम पुरस्कार रश्मि सिंह, शोधार्थी, हिंदी विभाग, द्वितीय पुरस्कार लोकेश पाण्डेय, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, तृतीय पुरस्कार निखिल पाण्डेय, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग एवं सांत्वना पुरस्कार कुलदीप कुमार स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग को प्राप्त हुआ।

जन संपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ.श्याम नंदन ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी समावेशीकरण की भाषा है। सभी भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय का भाव रखती है। इसीलिए हिंदी भाषाई आधार पर देश की एकता को मजबूत करने वाली भाषा है।

सभी भारतीय भाषाएँ राष्ट्रीयता के संस्कार से युक्त हैं। राष्ट्रीयता का यह सूत्र सभी भाषाओं में समान है। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि है। इसलिए हिंदी भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गरिमा तिवारी सहायक आचार्य, हिंदी विभाग ने किया वहीं कार्यक्रम का संचालन राजेश पाण्डेय, मीडिया सचिव, हिंदी साहित्य सभा ने किया।

इस कार्यक्रम की आयोजन सचिव हिंदी साहित्य सभा की अध्यक्ष सुनंदा गराई रहीं। सह संयोजक राजेश पांडेय,सुप्रिया कुमारी एवं अस्मिता पटेल शोधार्थी, हिंदी विभाग थीं।

हिंदी साहित्य सभा का हुआ पुनर्गठन

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की हिंदी साहित्य सभा का पुनर्गठन किया गया। हिंदी साहित्य सभा के अंतर्गत विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन छात्रों द्वारा किया जाता है।

हिंदी साहित्य सभा में सुनंदा गराई को अध्यक्ष तथा विकास कुमार को सचिव का दायित्व दिया गया है। अपराजिता को उपाध्यक्ष, सहसचिव अवधेश कुमार, कोषाध्यक्ष प्रियंका सिंह, सह कोषाध्यक्ष संजीत कुमार एवं रजनीश कुमार, संस्कृति सचिव अशर्फी लाल, संस्कृति सह सचिव काजल कुमारी एवं रुद्राणी; साहित्य सचिव कुलदीप, साहित्य सह सचिव अनन्या सिंह एवं मनु भगत, मीडिया सचिव राजेश पाण्डेय, मीडिया सहसचिव अंशु एवं रूपेश, प्रबंध सचिव अनुराग कुमार आनंद, प्रबंध सहसचिव अमनदीप एवं कुमारी सिया को घोषित किया गया। मुस्कान कौशिक, शिवानी कुमारी, खुशबू कुमारी, संजना कुमारी,लवली कुमारी और ज्योति कुमारी को कार्यकारिणी का सदस्य बनाया गया।

हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने हिंदी साहित्य सभा के नए दायित्व धारियों को शुभकामनाएं दी। हिंदी साहित्य सभा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य सभा छात्रों के साहित्यिक अभिरुचि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इसने अपनी उपादेयता सिद्ध की है।

कार्यक्रम का आरंभ हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा के स्वागत वक्तव्य के साथ हुआ। हिंदी साहित्य सभा के पूर्व सचिव सोनू कुमार ठाकुर द्वारा सभा का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया तथा इकाई भंग करने की घोषणा की गई। तत्पश्चात विभाग अध्यक्ष द्वारा नवीन इकाई का गठन किया गया।

मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून दत्त सिंह, अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. विमलेश कुमार सिंह तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. श्याम कुमार झा ने दायित्व धारियों को शुभकामनाएं दी।

स्वरचित काव्य प्रतियोगिता का आयोजन

राजभाषा प्रकोष्ठ तथा हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में स्वरचित काव्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा 2024 के अंतर्गत आयोजित स्वरचित काव्य प्रतियोगिता के निर्णायक समिति में हिंदी विभाग के प्रोफेसर राजेंद्र सिंह बडगूजर,समाज कार्य विभाग के सहायक आचार्य डॉ.अनुपम वर्मा , पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डॉक्टर मधु पटेल एवं वाणिज्य विभाग के सहायक आचार्य डॉक्टर रवीश चंद्र वर्मा उपस्थित रहे। शिक्षाशास्त्र विभाग की सहायक आचार्य डॉ रश्मि श्रीवास्तव कार्यक्रम की संयोजक थी तथा स्वागत वक्तव्य दिया। हिंदी विभाग की प्रियंका सिंह एवं अपराजिता , अमनदीप कार्यक्रम के सह-संयोजक थे।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफेसर राजेंद्र सिंह बडगूजर ने कार्यक्रम में उपस्थित निर्णायक समिति एवं सभी प्रतियोगियों को शुभकामनाएं दी। इसके साथ ही ज्ञानग्रह पत्रिका की अगले अंक की घोषणा की गई।

समाज कार्य विभाग के सहायक आचार्य डॉक्टर अनुपम वर्मा ने हिंदी भाषा के प्रति अपनी रुचि दिखाई और अपनी स्वरचित कविता का पाठ किया। .उन्होंने कहा कि कविता ज्ञान की भाषा है जो अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाती है। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डॉ मधु पटेल ने भी सभी प्रतियोगियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

वाणिज्य विभाग के सहायक आचार्य डॉक्टर रवीश चंद्र वर्मा ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी तथा अपनी स्वरचित कविता का पाठ किया।विश्वविद्यालय के राजभाषा अधिकारी श्रद्धानंद पांडेय ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी।

स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता के अवसर पर लोकेश पांडेय, निखिल पांडेय, मनीष दिवाकर, कुलदीप , मुकेश , संजीत , आशीष कुमार , विवेक , अनुराग , आयुष रंजन, रूपेश , संजना पांडेय , कविता ,मदन सिन्हा ने अपनी कविता प्रस्तुत की।

स्वरचित काव्य प्रतियोगिता के विजेताओं का नाम घोषित किया गया। जिसमें सांत्वना पुरस्कार निखिल पांडेय, तृतीय पुरस्कार संजीत , द्वितीय पुरस्कार लोकेश पांडेय तथा प्रथम पुरस्कार मनीष दिवाकर को प्रदान करने की घोषणा की गई। कार्यक्रम के अंत में हिंदी विभाग की शोधार्थी प्रियंका सिंह ने धन्यवाद किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन हिंदी विभाग की शोधार्थी अपराजिता द्वारा किया गया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर "विकसित भारत" विषयक विशेष व्याख्यान आयोजित

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयू) में भारत के महान दार्शनिक और राजनेता डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर "विकसित भारत" विषयक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अपने विचारोत्तेजक भाषण में समाज में शिक्षकों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "शिक्षकों का हमेशा सम्मान रहा है, और आज हम इसे औपचारिक रूप से मान्यता देते हैं। एक शिक्षक नेता होता है, और डॉ. राधाकृष्णन का जीवन इस नेतृत्व का प्रतीक है।"

उन्होंने डॉ. राधाकृष्णन की यात्रा का वर्णन किया, जिसमें उन्होंने ज्ञान, प्रज्ञा और विद्वत्ता के माध्यम से कठिनाइयों को पार करते हुए राष्ट्रपति पद तक का सफर तय किया। प्रो. श्रीवास्तव ने सोवियत नेता जोसेफ स्टालिन का एक किस्सा साझा किया, जिसमें स्टालिन ने कहा था कि "डॉ. राधाकृष्णन पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मुझे सम्मान से देखा।" उन्होंने छात्रों को बड़े सपने देखने, जोश और मेहनत के साथ काम करने और यह समझने के लिए प्रेरित किया कि ज्ञान के बल पर ही नई ऊंचाइयों को हासिल किया जा सकता है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व डीन और वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. अशिम कुमार मुखर्जी ने शिक्षा की समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की।

उन्होंने सुधा मूर्ति का उद्धरण देते हुए कहा कि "यदि डॉक्टर गलती करता है, तो मरीज को नुकसान होता है; यदि मजिस्ट्रेट गलती करता है, तो न्याय प्रभावित होता है; लेकिन अगर शिक्षक गलती करता है, तो पूरी पीढ़ी प्रभावित होती है।"

उन्होंने शिक्षकों और छात्रों के आपसी संबंध पर जोर दिया और कहा कि "छात्र विश्वविद्यालय के सच्चे राजदूत होते हैं।"शैक्षणिक मामलों के निदेशक डॉ. बृजेश पाण्डेय ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की शिक्षा में नेतृत्व और उनके यूजीसी अध्यक्ष रहते हुए किए गए योगदान पर चर्चा की।

उन्होंने कहा कि डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा नीति में परंपरा और आधुनिकता का अनूठा मिश्रण है, जो आज के संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण है जब नैतिक और मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

पुस्तकालय विज्ञान विभाग के अध्यक्ष और डीन प्रो. रणजीत कुमार चौधरी ने शिक्षकों के प्रति सम्मान पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जो छात्र अपने शिक्षकों का सम्मान नहीं करते, उन्हें जीवन के पथ पर आगे बढ़ने में कठिनाई का सामना करते हैं।

उन्होंने एनईपी 2020 की भी महत्ता पर जोर दिया और कहा कि शिक्षक का ज्ञान तभी छात्रों तक पहुँच सकता है जब वे अपने शिक्षकों का आदर करें।

कार्यक्रम की शुरुआत शैक्षिक अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार द्वारा स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने डॉ. राधाकृष्णन के एक प्रगतिशील भारत के दृष्टिकोण पर चर्चा की।

उन्होंने यह भी बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 डॉ. राधाकृष्णन के आधुनिक और विकसित भारत के स्वप्न के अनुरूप है, जो शिक्षा सुधारों और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से संभव होगा।

उन्होंने कहा कि यह आयोजन डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा क्षेत्र में दिए गए अतुलनीय योगदान का सम्मान था और शिक्षकों और छात्रों के लिए उनके विकसित भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने की प्रेरणा का स्रोत बना।

विभाग की सहायक आचार्य डॉ. रश्मि श्रीवास्तव ने विषय प्रवर्तन किया और डॉ. राधाकृष्णन के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे एक साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर डॉ. राधाकृष्णन भारत के सबसे प्रतिष्ठित विद्वानों में से एक बने और शिक्षा के वैश्विक प्रतीक के रूप में पहचान प्राप्त की।

इस कार्यक्रम में डीन, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और छात्रों ने भाग लिया और डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा और राष्ट्र निर्माण में किए गए योगदान पर प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम का समापन शोधार्थी मनीष कुमार दिवाकर द्वारा कविता पाठ के साथ हुआ।

शोधार्थी सुश्री शुभ्रा सिंह चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

मीडिया अध्ययन विभाग में विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग में विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने की। कार्यक्रम की शुरुआत विभागाध्यक्ष एवं शिक्षकों द्वारा भारत रत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ। तदुपरांत, विद्यार्थियों द्वारा विभाग के शिक्षकों के साथ अब तक के अनुभवों को विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में व्यक्त किया गया।

मंच का संचालन बीएजेएमसी की छात्रा आर्या कुमारी एवं नीतीश कुमार ने किया।

स्वागत उद्बोधन श्रुति ने दी।

विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा की अपने लक्ष्य के प्रति सदैव सजग रहें।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जीवन को आसान और सरल बनाने के लिए जरूरी है कि असामाजिक तत्वों से दूर रहें। साथ ही सकारात्मक वातावरण बनाएं व अपने कौशल विकास पर कार्य करें। जिस क्षेत्र में आप विशेषज्ञता हासिल करना चाहते है वहां आप व्यावहारिक रूप से शामिल हो, जिससे आपकी रचनात्मकता और नवीनता में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि शिक्षक का कठोर बोलना बुरा नहीं है क्योंकि वह विद्यार्थियों के हित के लिए ऐसा करता है। शिक्षक आपको एक बेहतर इंसान बनने के लिए समर्पित है।

सहायक आचार्य डॉ. साकेत रमण ने कहा कि "यह दिन हम शिक्षकों से ज्यादा विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है। हम आशा करते है की आप एक अच्छे व्यक्ति बनेंगे व विश्वविद्यालय का ध्वज विश्व पटल पर लहराएंगे।

डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को याद करते हुए कहा कि शिक्षक व विद्यार्थी का संबंध अद्वितीय है तथा शिक्षक कक्षा तक ही सीमित नहीं है बल्कि आपके मनो-मस्तिष्क तक विराजमान है। प्राचीन गुरू शिष्य परंपरा की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि समय के साथ इसमें बदलाव आया है। परंतु विद्यार्थियों को यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने परिवार और समाज के साथ देश हित के लिए भी कार्य करने को सजग रहें।

सहायक आचार्य डॉ. सुनील दीपक घोड़के ने शिक्षक दिवस के ऐतिहासिक पहलुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षक की पूँजी विद्यार्थी हैं।

उनकी सफलता व असफलता में जितना योगदान उनका है उतना ही योगदान शिक्षकों का भी हैं। विद्यार्थियों को अपने कार्य क्षेत्र से संबंधित चीजों को देखनी व सीखनी चाहिए।

सहायक आचार्या डॉ. उमा यादव ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अपने क्षेत्र में मजबूत बनें। अपने कार्यों को समय पर पूर्ण करें और सम्बन्धित क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल करें।

शिक्षक दिवस का कार्यक्रम विभाग के बीएजेएमसी और एमएजेएमसी के प्रथम, तृतीय और पंचम के विद्यार्थियों द्वारा मनायी गई।

कार्यक्रम के दौरान रानी एवं शाम्भवी ने स्वरचित कविता प्रस्तुत किया व दीपक एवं मृणालिनी ने भाषण प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन खुशी पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम में विशेष योगदान मुस्कान, अंकित, आदर्श, सूरज, सचिन, अंशिका व राज का रहा।

साथ ही राजनंदनी, काजल कुमारी, पुरुषोत्तम, आदर्श आर्यन, ऋषि राज, आकाश अस्थाना, सौरभ, अपर्णा, सौरभ, शिवेष, विवेक गुप्ता, रौशन, आर्यन, नंदनी, अभिषेक, नंदनी, अपूर्वा, मुस्कान और सुप्रिया आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

जन्तु विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने मनाया शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस के सुअवसर पर महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के जिला स्कूल स्थित चाणक्य परिसर में जन्तु विज्ञान विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थीयों तथा शोधार्थियों द्वारा शिक्षक वृन्दों के सम्मान में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वन्दना तथा दीप प्रज्जवलन के साथ की गई।

कार्यक्रम में जन्तु विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रणवीर सिंह ने विद्यार्थी जीवन में समयबद्धता, अनुशासन तथा कर्तव्य परायणता पर व्याख्यान दिया। शिक्षक पेशे से कोई नहीं है बल्कि कोई भी और हर कोई जो सीखाने और पाठ देने की प्रक्रिया में शामिल है वह शिक्षक है। मैंने खुद को विकसित किया है और एक शिक्षक के रूप में विकसित होना जारी है हालांकि छात्रों को पढ़ाने के लिए मूल रूप से शिक्षक हमेशा एक छात्र होता है और सीखने के लिए भूख और प्यास वाला कोई व्यक्ति होता है।

उन्होने छात्र को कहा की आप प्राणीशास्त्र परिवार के ब्रांड एंबेसडर हैं आपके अच्छे काम और बुरे काम केवल मेरे अच्छे या बुरे को प्रतिबिंबित करेंगे इसलिए अच्छा काम करते रहें और हम सभी को गौरवान्वित करें।

सह प्राध्यापक डॉ. प्रीती बाजपेयी सहायक ने कहा अध्यापन के कार्य में उत्कृष्टता तभी संभव है जब विद्यार्थी मौलिक चिंतन, प्रखर प्रश्नों व रचनात्मक सोच से कक्षा में पढ़ने आए। विद्यार्थी की प्रखर मनीषा और जिज्ञासु संस्कार शिक्षक को प्रेरित करते हैं। प्रतिस्पर्धा की प्रक्रिया में और ऊंचाई की उत्कंठा में विद्यार्थी अनुशासन और आपसी सौहार्द सदा बनाए रखे। सफलता के शिखर पर पहुचने की यह कुंजी है।

डॉ.श्याम बाबू प्रसाद, सहायक प्रोफेसर ने शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। साथ ही इस बात पर जोर दिया की विद्यार्थियों का जीवन अत्यंत धन्य जीवन है जहां वे विभिन्न शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और सफल जीवन के लिए अर्जित ज्ञान को अपने जीवन में शामिल कर सकते हैं।

सहायक प्राध्यापक डॉ. कुन्दन किशोर रजक ने अपने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए यह अपील किया की अपने भविष्य के सपने को तनाव मुक्त वातावरण में पूरा करने की कोशिश करें। डॉ.रजक ने ये भी कहा कि पढ़ाई को एन्जॉय करते हुए लक्ष्य को आसानी से हासिल किया जा सकता है।

डॉ. बुद्धि प्रकाश जैन ने शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं दि तथा सभी प्रिय छात्रों को आपके भविष्य के लिए शुभकामनाएं दिए। पोस्ट ग्रेजुएट विद्यार्थीयों द्वारा गायन, कविता पाठ तथा भाषण की प्रस्तुति दी गई। मंच संचालन विवेकानन्द साहू तथा राजनन्दिनी कुमारी ने किया।

अन्दिता कुमारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

श्री राम का कृतित्व ही हमारी आचार संहिता

त्रेता युग के मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का नाम ही आदर्श रूप से जीवन जीने की प्रवृति का नाम है। मन को वश में करना ही मनुष्य रूप है। अयोध्या जिसे साकेत और रामनगरी भी कहा जाता है, यह ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नगर है। सरयू नदी के तट पर बसी इस नगरी का वाल्मीकि रामायण में अयोध्या नाम वर्णित है। अथर्ववेद में अयोध्या को भगवान का नगर बताया गया है। पुराणों में भी इसका उल्लेख है।

लेखक :
डॉ. अंजनी कुमार झा
विभागाध्यक्ष
मीडिया अध्ययन विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

जो बीज वाल्मीकि ने बोए, वे फल-फूल रहे हैं। उनका सम्पूर्ण दृष्टिकोण चरित्रयोग की जिज्ञासा है। चरित्रवान व्यक्ति को ढूँढने के लिए ही आदि-काव्य 'रामायण' की रचना की गई। उनके लिए चरित्र और धर्म पर्यायवाची हैं। श्री राम सनातन धर्म वृक्ष के बीज हैं। वे नीतिमान और वाग्मी, कुशल वक्ता हैं।

रामचरितमानस तुलसीदास के लिए लोकजागरण और लोक संस्कार का माध्यम है। राम शील, सौन्दर्य और शक्ति का समन्वित रूप है और उनका चरित्र आदर्श है। राम कथा की रचना उड़िया, बांग्ला, कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम आदि में है। अपने राज्याभिषेक के बाद भी उनका अभियान जारी रहा। उन्होंने लक्ष्मण, शत्रुघ्न और हनुमानजी को विभिन्न दिशाओं में भेजा और पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया। भारतीय संस्कृति समूची वसुधा को कुटुंब मानती है और संसार का एक-एक प्राणी उसके अंग हैं। सभी समाज, वर्ग और क्षेत्र जन परस्पर प्रीति करें, एक – दूसरे का पूरक बनें, यह संदेश उनकी प्रत्येक यात्रा और अभियान में रहा। आसुरी प्रवृतियाँ वन में थीं, इसीलिए वही चुना और संत समाज और मनुष्य को शांति प्रदान की।

देवों की पुरी और आठ चक्रों वाली स्वर्ण नगरी अयोध्या के चक्रवर्ती को सूर्य का अवतार भी माना जाता है। मुनि अगस्त्य उन्हें सूर्य की स्तुति के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र रावण के संहार के लिए देते हैं।

बौद्ध धर्मावलम्बी उन्हें बुद्ध का विशेष अवतार मानते हैं। जैन मतावलंबियों के लिए भी इसका महात्म्य है। 'राम' शब्द ईश्वर का पर्यायवाची या दशरथनन्दन श्रीराम के नाम की सूचक, व्यक्तिवाचक संज्ञा ही नहीं है। इस देश के अमृत – पुत्रों, ऋषि- मुनियों, साधु- संतों, श्रमिकों- कृषकों, यहाँ तक कि भिक्षुओं के जीवन में इस शब्द कि अनिवार्य सत्ता और असीम महत्ता सदैव देखी जा सकती है। उनका जन्म भी इस शब्द के उच्चारण के साथ होता है। मनुष्य को मृत्यु के बाद मोक्ष भी उन्हीं के नाम के स्मरण से होता है। जीवन का हर छोटा-बड़ा कार्य और परस्पर मिलने के लिए भी उन्हीं के नाम का सहारा लेना पड़ता है। उनका चरित्र तो सिंधु की भाँति है। अपार – अपरिमित, अनंत।

उनके लिए केवट, शबरी, जटायु, सुग्रीव और हनुमान सभी बराबर हैं। सामाजिक समरसता का यह सटीक उदाहरण है। पूरा समाज एक शरीर की तरह है। इसे उन्होंने अपने कर्म से दिखलाया। इस माध्यम से एक संदेश दिया कि मनुष्य के अंदर एक ही जीव आत्मा है- ईश्वर अंश जीव अविनाशी।

श्रीराम ने – **विप्र धेनु सुर संत हित, लिन्ही मनुज अवतार** को ही चरितार्थ किया है।

राम और रावण का युद्ध विचारों का है। भौतिकतावाद की अंध दौड़ में आध्यात्म को त्याज्य करने को लेकर है। राम कथा धरती का कल्पवृक्ष है। वे धर्मज्ञ हैं, धर्म –प्राण, धर्म- रक्षक, धर्म- ज्ञाता, धर्म के व्याख्याता हैं। वे आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई और आदर्श पति हैं। राम उत्तर से दक्षिण को जोड़ते हैं। कबीर मुख से सदा राम ही बोलते रहे। उनसे जुड़े मूल्य ही भारतीय सभ्यता के मर्मभूत मूल्य हैं। वे एक ऐसे अवतारी पुरुष हैं, जिसमें सर्वोच्च दैवीय शक्ति अभिव्यक्त हुई है।

काम कोह मद मान न मोहा, लोभ न छोभ न राग न द्रोहा। जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया। प्रत्येक भारतीय को अपने हृदय को ऐसा बनाना चाहिए।

तुलसीदास ने मर्यादा पुरुषोत्तम के व्यक्तित्व पर कहा – राम ही ब्रह्म थे- अचिंत्य, अदृष्ट, अखण्ड, संपूर्ण, निर्विशेष चिन्मात्र, सर्वव्यापी और निर्गुण। इसी बात को गोस्वामीजी ने पूरे मानस में रेखांकित किया है। रामावतार की विशिष्टता उनके मर्यादा पुरुषोत्तम होने की है, जो सत्यनिष्ठा के प्रतीक, निष्कलंक आचरण की कसौटी और एक आदर्श मनुष्य के साकार- रूप हैं। वे कलह के नहीं सद्भाव के, विभाजन नहीं संयोग के, शत्रुता नहीं, सौहाद्र के और कटुता नहीं, सद्भावना के पक्षधर थे। राम सभी के हैं। राम सभी में हैं। वे सगुण साकार भी हैं और निर्गुण निराकार। दोनों ही दृष्टियों, धारणाओं – अवधारणाओं के राम गुणों से समृद्ध हैं, सद्गुणों के स्वामी हैं। वाल्मीकि तो समग्र रामाख्यान के प्रत्यक्षदर्शी हैं। उनके राम, उनके लिए समकालीन हैं, राजर्षि हैं और एक आदर्श राज्य के संस्थापक हैं। गुरुनानक देव उनमें आत्मरूप और अनंतता के मात्र दर्शन ही नहीं करते हैं, बल्कि उनमें चक्षु भर निहारते रहते हैं। **सरजू जल मंजन कीया, दरसन राम निहार, आत्मरूप अनंत प्रभ, चले मगन हितु घार।**

कबीर प्रामाणिक राम पंथी हैं। वह कहते हैं – **एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट – घट में बैठा, एक राम का संकल पसरा, एक राम त्रिभुवन से न्यारा।**

रहीम ने तो मात्र एक दोहे में राम के प्रति अपर अपनत्व का प्रगटीकरण कर दिया। **गहि सरनागत राम की, भवसागर की नाव, रहिमन जगत उधार को, और न कछु उपाव।**

वे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक वंचितों के उद्धारक हैं। वह निषादराज के अभिन्न मित्र हैं, सखा हैं। वह भीलनी शबरी के जूठे बेर ग्रहण करने में संकोच नहीं करते। वह सुग्रीव को राज्य सौंप कर आगे बढ़ जाते हैं और विभीषण को लंकाधिपति बना कर अयोध्याजी लौट जाते हैं। वह चक्रवर्ती हैं, किन्तु विस्तारवाद के विरुद्ध हैं। उनका कृतित्व हमारी आचार संहिता है। समाजवादी विचारक डॉ लोहिया के मत में, राम का जीवन किसी का कुछ भी हड़पे बिना फलने की कहानी है।

वे लोकशाही के जीवंत प्रतीक हैं। वह लोगों से कहते हैं – **जो अनीति कछु भाखहूँ भाई, मुझको बरिजहूँ भाय बिसराई।** अर्थात- राज्यवासियों यदि मैं अनीति की बात कहूँ तो आप बिना किसी भय के मुझे तुरंत रोक दीजिये। वे अपनी प्रजा को अधिकार देते हैं कि वह अपने राजा को गलती करने से रोक दें। राज्य व्यवस्था का यह उच्चतम आदर्श है। वे संवैधानिक नैतिकता के शलाका पुरुष हैं। यह संविधानवाद के आचरण की उच्चत्तर अवस्था है। वे यश- कामना से दूर रहते हैं। स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति को वे उचित नहीं मानते हैं। वे नीति से प्रीति रखते हैं।

राजा रूप में अपने पहले ही सम्बोधन में कहा था – **परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।** अर्थात दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को दुख पहुँचाने के समान कोई नीचता नहीं है।

बारिश और दोस्त

चलो दोस्त आज फिर से
बारिश में नहाएँ
छोड़ ज़माने के सब ताम-झाम
बचपन में लौट जाएँ
चलो दोस्त आज फिर से
बारिश में नहाएँ
सोंधी गीली मिट्टी में
एक प्यारा-सा घर बनाएँ
इस बारिश के पानी में दोनों
कागज़ की नाव चलाएँ
चलो दोस्त आज फिर से
बारिश में नहाएँ
धुले-धुले से हैं पेड़ परिंदे
खुशबू मन की कलियों में
पाँव में बांध बूंदों की नुपुर
लौटें बचपन की गलियों में
सोच-सोच के ही मन मेरा अब
मुसकाए
चलो दोस्त आज फिर से
बारिश में नहाएँ
ठंडी-ठंडी बौछारें हैं
बादल हैं घनघोर
हवा के संग उड़े है आँचल
नाचे मेरे मन का मोर
अपनी मस्ती में मगन
दिल ये मेरा गुनगुनाए
चलो दोस्त आज फिर से
बारिश में नहाएँ
इंद्रधनुष की छटा निराली
प्रकृति ने किया श्रृंगार
झोंके पवन के थिरक रहे
गा-गा कर मेघ मल्हार
मेरे मन को ये सब मिल कर
और भी अब तड़पाएँ
चलो दोस्त आज फिर से
बारिश में नहाएँ ॥

लेखक :
संजीत कुमार
छात्र, परास्नातक तृतीय सेमेस्टर
हिंदी विभाग

इश्क़ - बनारस

तुम हो शहर की ताम झाम वाली रौनक
मैं दशाश्वमेध घाट पे होने वाले गंगा आरती का शाम प्रिये।
तुम डिनर करती हो रेस्टोरेंट में
मैं खिचड़ी वाला भंडारा का प्रसाद प्रिये ॥
तुम जाती हो वेकेशन पे गोआ और मनाली
मैं काशी में लीन प्रिये।
तुम पीती हो कोल्ड कॉफी
मैं बनारस के ठंडई में मस्त प्रिये॥
तुम खाती हो बर्गर पिज्जा
मुझे लिट्टी चोखा से प्यार प्रिये।
तुम शनिवार को जाती हो क्लब
मैं संकट मोचन में पढ़ता हनुमान बाण का पाठ प्रिये॥
तुम ख्वाहिश रखती होगी ऑक्सफ़ोर्ड और हॉवर्ड लंदन में पढ़ने की
मुझे बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में पढ़ने की ख्वाहिश प्रिये।
तुम जाती हो वाटरपार्क में
मुझे गंगा का घाट प्रिये॥
तुम करती हो शाम में पार्टी
मैं करता अपने प्रभु का संध्या वंदन का नित्य कर्म प्रिये।
तुम्हारी इक्छा है अमेरिका स्विजरलैंड की वादियों में रहने की
मैं जीवन को समर्पित करता बाबा विश्वनाथ के चरणों में प्रिये॥
तुम डरती हो मौत से ....
मैं जो प्रतिदिन मणिकर्णिका घाट पे जीवन का अंत देखता प्रिये।
तुम जानती हो सुकून पहाड़ की वादियों में
मैं अस्सी घाट पे चुस्की लेता कुल्हड़ वाली चाय का शाम प्रिये॥
तुम्हारी सुबह होती हैंगओवर मे
मैं करता बाबा विश्वनाथ का जलाभिषेक प्रिये।
तुम रखती हो मान सम्मान का भाव
मैं जीवन को अंत अस्ति: प्रारंभ में जीता प्रिये॥
तुम्हे प्रिये है तामसी आहार
मुझे सात्विक भोजन से लगाव प्रिये।
तुम पार्टी करती हो अपने जन्मदिन पे
मैं महादेव के रुद्राभिषेक में लीन प्रिये॥
तुम पहनती हो गला में हॉलमार्क वाला लॉकेट
मैं धारण करता रुद्राक्ष प्रिये।
तुम्हे भाता है पश्चिमी सभ्यताओं वाला देश
मैं जानता अखण्ड भारत प्रिये॥
तुम्हे पसंद है जीन्स टॉप
मुझे भाता है सोलह श्रृंगार में भारतीय नारी प्रिये।
तुम सुनती हों जस्टिन बीबर को
मैं शिव तांडव स्तोत्रं के धुन में मग्न प्रिये ॥
तुम अपने जीवन से सिर्फ परचित हो
मेरे लिए वसुधैव कुटुम्ब प्रिये।
तुम खाती हो खाना के बाद डेजर्ट
मेरे लिए बी एच् यू गेट का लवांगलति अमृत प्रिये॥
तुम चकाचौंध वाली सूरत में मूरत
मैं अल्हड़ बनारसी प्रिये ...
त कइसे होगा मेल प्रिये
ई प्यार नहीं है खेल प्रिये॥

लेखक :
सुमन उज्जवल
छात्र, परास्नातक प्रथम सेमेस्टर
सामाजिक विज्ञान विभाग

वृद्धाश्रम

न जाने लोग ये कैसी परंपरा को अपना रहे है
अपने मां-बाप के होते हुए भी
खुद को अनाथ बनाते जा रहे है
हर मां-बाप का सहारा होते है बेटे
ये कहां इस बात को मान रहे है
ये अपने मां-बाप को वृद्धाश्रम में ले जा रहे है।
अपनी कटु वाणी से,
उनके अंतर्मन को ठेस पहुंचा रहे है
आपने हमारे लिए किया ही क्या है,
वे उन्हें बता रहे है
एक छोटी सी गलती पर,
ऐसा रौब झाड़ रहे है
वे दिन-प्रतिदिन इनके ही पिता बने जा रहे है
वे अपने बड़े होने का सबूत कुछ इस तरह दिखा रहे है
उन्हें अपने घर से निकाल वृद्धाश्रम में ले जा रहे है।

लेखक :
कुणाल कुमार
छात्र, परास्नातक पंचम सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

माँ की स्मृतियाँ

लेखक :
डॉ. श्याम कुमार झा
विभागाध्यक्ष
संस्कृत विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

माँ अपने बच्चों के लिए कितना कष्ट उठाती है, विशेषकर वे माताएँ जो सीमित संसाधनों में जीती हैं। उनके घर में बच्चों के पालन-पोषण के लिए कोई आया नहीं होती। वे बच्चों को सूखे कपड़े में रखकर स्वयं रातभर भींगे कपड़े में जागती रहती हैं, इस डर से कि कहीं बच्चों को सर्दी न लग जाए। धीरे-धीरे बच्चा बड़ा होता है, एक-एक कदम चलना शुरू करता है। चलने में माँ उसकी मदद करती है। बच्चों की खुशियों में वह अपना सब कुछ अर्पण कर देती है। बच्चे जब थोड़े और बड़े होकर स्कूल जाना शुरू करते हैं तो माँ उन्हें प्रतिदिन तैयार करती है। यह सिलसिला तीन-चार साल की उम्र से लेकर उच्च माध्यमिक या प्लस टू की कक्षा पर्यन्त लगभग 15 वर्षों तक बिना रुके चलता रहता है। इस दौरान बच्चों की छुट्टियों के अनुसार माँ अपने काम की योजना बनाती है। वह अपनी इच्छानुसार प्रति वर्ष कहीं घूमने भी नहीं जा सकती। बच्चों के स्वास्थ्य और उनकी छुट्टियों के अनुसार ही उसे जीवन जीना होता है। बच्चे थोड़े और बड़े हो गए हैं। उन्हें अब अपने संगी-साथियों के साथ घूमना-फिरना अधिक पसंद है। घर में आते ही वे चिड़ चिड़े हो जाते हैं। बाहर दोस्तों के साथ समय बिताते हुए, वे बेहद खुश होते हैं। अब उन्हें माता-पिता के साथ समय बिताने का मन नहीं करता। वे ज्यादातर या तो अपने कमरे में होते, या फिर मोबाइल और लैपटॉप में व्यस्त रहते। उनकी मानसिकता भी अब बदल गई है। रोहित की माँ की अब उम्र ढलने लगी है। साठ वर्ष के बाद उनके कमर में दर्द और अन्य समस्याएँ शुरू हो गई है। कभी-कभी वह चाहती है कि उसके बच्चे पास बैठें, पर बच्चों के पास समय का अभाव है। वे अपनी ही परेशानियों में उलझे रहते हैं। नौकरी का तनाव, माता-पिता की अपेक्षाएँ अपने साथियों के साथ प्रतिस्पर्धा। माँ अपने बच्चों को सिर्फ खुश देखना चाहती है।

अब बच्चों को माँ का बनाया पारम्परिक खाना पसंद नहीं आता। उन्हें बाहर का खाना, रेस्टोरेंट की सब्जियाँ ज्यादा पसन्द है। माँ यह बदलाव महसूस करती है और अपने खाने बनाने की विधि में भी परिवर्तन लाना चाहती है। उसने इडली, डोसा, सैंडविच, मैगी बनाना भी सीख लिया है, ताकि बच्चे खुश रहें। अब बच्चे बाहर पढ़ने चले गए हैं। माँ दुर्गापूजा, छठ, दिवाली की छुट्टियों में उनके आने का इंतजार करती है। लेकिन ट्रेनों में अत्यधिक भीड़ और अन्य समस्याओं की वजह से कई बार बच्चे घर नहीं आ पाते। वे अब छुट्टियों में अपने दोस्तों के साथ हिल स्टेशन जाना पसन्द करते हैं। माँ भीतर ही भीतर रोती है, बच्चों के घर आने का इंतजार करती है। पिता माँ को समझाते हैं, लेकिन बेटे और बेटी का स्थान उसके जीवन में कोई नहीं ले सकता। तीन साल बाद, उसका बेटा रोहित आज घर आया है। अब वह लगभग 75 साल की हो गई है, उसकी कमर झुक गई है, पर अब भी अपने बच्चों की खुशियों के लिए अपने शरीर की परवाह नहीं करती। सुबह उठकर घर की सफाई करती है ताकि बच्चों को काम न करना पड़े। वह चाहती है कि रोहित उसके साथ समय बिताए, पुराने दिनों की कहानियों को साझा करें, पर बच्चों को दोस्तों के साथ घूमना और समय बिताना अधिक पसंद है, जो उसे माँ से दूर रखता है। वह चिन्तित होती है,जब बेटा देर रात घर लौटता है। देखते-देखते चार दिन की छुट्टियाँ बीत जाती है और रोहित अपने काम पर लौट जाता है।

माँ एक बार फिर 6 महीने या एक साल बाद उनकी वापसी की प्रतीक्षा करती है। वह अपनी वृद्धा सहेलियों से बच्चों के आने और उनके साथ बिताए कुछ लम्हें की ढेर सारी बातें बार-बार करती है। वह याद करती है कि कैसे वह अपने हाथों से बच्चों के लिए कपड़े सिला करती थी, कितनी रातें जागकर उनके लिए स्वेटर और दस्ताने बनाती थे। अब बच्चों को इन सब चीजों की जरूरत नहीं। दोनों बेटियाँ माँ की भावनाओं को थोड़ा समझती हैं, लेकिन वे भी अपने घर-परिवार और बच्चों में व्यस्त हैं। उनके पास भी माँ के लिए समय नहीं है। रोहित इस बार परिवार के साथ घर आया है। उसे रास्ते में जुकाम हो गया है। रात में जोर-जोर से खाँसते देख माँ आधी रात को उठकर पानी गर्म करती है और उसे पीने को देती है। बेटा माँ के इस भाव से अभिभूत है। उसे लगता है कि उसकी माँ अब भी उसे उसी नजर से देखती है, जैसे उसने पहली बार किलकारी भरी थी। समय तेजी से बीत रहा है और बेटे रोहित को एहसास है कि माँ अब ज्यादा दिनों तक नहीं रह पाएगी। वह अब इस जीवन चक्र से ऊब कर परम धाम को जाना चाहती है। ईश्वर से बार-बार प्रार्थना करती है कि उसे अब अपने पास बुला लें। रोहित माँ को अपने साथ दिल्ली चलने का आग्रह करता है, पर वह कहती है कि वह अपने गांव के घर में ही अंतिम सांस लेना चाहती है। उसके लिए उसका घर ही काशी-मथुरा, प्रयाग है, क्योंकि इस घर से उसके जीवन की तमाम स्मृतियां जुड़ी हैं। वह कहती है जिस घर में तुम लोगों का जन्म हुआ, जहाँ तुम लोगों ने चलना प्रारम्भ किया, जिस घर में तुम भाई-बहनों एवं तुम्हारे पिता के साथ मेरी तमाम मधुर स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं, उस घर को छोड़कर अब मैं कहीं नहीं जा सकती। इस घर की दीवारों पर जब मैं देखती हूँ और आँखें बंद करती हूँ, तो मेरे पूरे जीवन की घटनाएँ मानो भित्तिचित्र के रूप में मेरी आँखों के सामने घूमने लगती है। इसलिए तुम मेरी चिन्ता छोड़ दो। मेरी चिन्ता करने वाले ईश्वर हैं। साग-सब्जी लाने के लिए तुम्हारे पिता के समय से हम लोगों की देखभाल कर रहा नरेश है। परोस के बच्चे कभी-कभार आकर मेरा समाचार पूछते हैं। उन्हीं बच्चों के सहारे अब बाकी के दिन काटते हुए मैं अपने घर को जाना चाहती हूँ, जहाँ से फिर लौटकर न आना पड़े। रोहित की छुट्टियाँ समाप्त हो गई हैं। वह एक प्राइवेट कंपनी में काम करता है, उसके ऊपर पूरे ज़ोन के कंपनी का दायित्व है। बार-बार फोन और मेल आता रहता है। इस बार उसने 5 दिन के लिए अपनी छुट्टियों की बढ़ोतरी की थी, लेकिन अब उसके लिए और रुकना संभव नहीं। न जाने क्यों, इस बार घर से जाते हुए उसके कदम नहीं बढ़ रहे। उसे ऐसा लग रहा है कि अगली बार आने पर शायद माँ से भेंट न हो। वह बार-बार माँ की ओर देखते हुए घर से पैर बढ़ाता है और मन ही मन सोचता है कि काश, एक महीना अपनी कंपनी के फोन और मेल से दूर माँ के पास समय बिता सकता और उनके साथ अतीत की तमाम यादों को साझा करता। पिताजी की स्मृतियों को माँ के साथ बैठकर शेयर करता, लेकिन उसके ऊपर कंपनी की तमाम जिम्मेदारियाँ हैं, जिन्हें पूरा करना उसका दायित्व है। यदि इस बार वह अपनी छुट्टी और बढ़ाता है, तो कंपनी के कई प्रोजेक्ट्स लंबित हो सकते हैं और उसकी नौकरी भी जा सकती है। माँ भी ऐसा नहीं चाहती कि मेरी वजह से बेटे की नौकरी चली जाए और फिर मेरे बाद उसे गाँव में लोगों के ताने सुनने पड़ें। वृद्धा माँ ने अपने जीवन में भलीभाँति अनुभव किया है कि जीवन संघर्षों का नाम है, जिसमें अर्थ की परम आवश्यकता है। यदि आपके पास अर्थ है, तो सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाएगी, लेकिन यदि समुचित अर्थ नहीं है तो आज आपकी मदद करने वाला कोई नहीं। दस हजार या बीस हजार रुपये से भी नि:शुल्क मदद करने वाले लोग आस-पड़ोस या संबंधियों में ढूँढे नहीं मिलते। इसलिए वह रोहित को कहती हैं कि बेटा तुम अपने काम पर जाओ। तुम्हें भी अपने बच्चों को देखना है। यही जीवन है। मुझसे जहाँ तक हो पाया, मैंने तुम लोगों की देखभाल की। तुम्हारी खुशियाँ ही तो मेरे जीवन का उद्देश्य था, जो अब पूरा हो गया है। तुम्हारे पिता ने तमाम कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद भी सत्य के मार्ग को कभी नहीं छोड़ा। मैं भी तुमसे यही आशा करती हूँ। हाँ, यदि अचानक कोई ऐसी खबर सुनने को मिले, तो तुम गाँव के उस बगीचे में अपने पिता के पास ही मेरा अन्तिम संस्कार करना, जहाँ उनकी स्मृतियों का वृक्ष है। रोहित बहुत भारी मन से इस बार माँ से आशीर्वाद लेकर घर से निकलता है। वह यह सोचते हुए अपनी नौकरी पर जाता है कि इस बार वह एक महीने की अग्रिम छुट्टी लेकर कंपनी के सारे कार्यों को पूरा कर घर आएगा और फिर माँ के पास बैठकर ढेर सारी बातें करेगा। वह माँ की भावनाओं से सहमत है कि इस उम्र में उन्हें दिल्ली की भागदौड़ और छोटे से फ्लैट का जीवन नहीं सुहाता। गाँव के पेड़-पौधे, हरियाली, बिल्ली, कुत्ते, तोता, मैना, कबूतर, गिलहरी, कोयल की कूक यह सब दिल्ली में कहाँ नसीब होगा। रोहित के घर से आने के 15-20 दिन बाद फोन आता है कि आपकी माँ की तबीयत ठीक नहीं है। उन्हें साँस लेने में तकलीफें बढ़ गई है। यह खबर सुनकर रोहित की बेचैनी बढ़ जाती है। वह एक महीने का एप्लिकेशन कंपनी में देता है, लेकिन कंपनी का कहना है कि एक महीने की छुट्टी से पहले आपको अपने अधूरे कार्यों को निपटाना होगा। चाहे तो आप 5 दिन की छुट्टी ले सकते हैं। इस बार रोहित केवल 5 दिन की छुट्टी लेकर घर आना नहीं चाहता, क्योंकि उसे मालूम है कि 5 दिन में वह न तो माँ को पूरा समय दे पाएगा और न ही उनका इलाज हो पाएगा। वह दो दिनों में कंपनी ने जो उसे आवश्यक कार्य दिए थे, उसे शीघ्रता से पूरा करने की कोशिश करता है। वह सुबह से लेकर देर रात तक मीटिंग अटेंड कर अगले दिन की फ्लाइट पकड़ने की तैयारी शुरू कर देता है। तभी रात में अचानक फोन आता है कि आपकी माँ अब नहीं रहीं। इस खबर को सुनकर वह स्तब्ध हो जाता है। मानो उसके शरीर की पूरी शक्ति माँ के साथ अंतरिक्ष में समाहित हो गयी हो। चुपचाप जमीन पर बैठ जाता है, फिर देर रात एक इमरजेंसी फ्लाइट पकड़कर अगले दिन दोपहर में जब वह घर पहुँचता है, तो माँ की निष्प्राण देह पृथ्वी पर लेटी है। उनकी काया को देखकर, उनके साथ बिताये तमाम स्मृतियाँ जैसे उसकी आँखों के सामने फिल्म की भाँति चलने लगती है। गाँव के बुजुर्गों से परामर्श लेकर सभी रीति-रिवाजों को निष्ठापूर्वक पूरा करता है। उसके मन में इस बात का बेहद पछतावा है कि काश, वह पहले ही छुट्टी ले लिया होता और अपनी माँ के साथ समय बिताया होता। कई ऐसी बातें थीं जो अधूरी रह गईं। अब उन बातों को वह किससे साझा करेगा। गाँव में उसकी पढ़ाई के अनुरूप कोई नौकरी नहीं थी, इसीलिए उसे महानगर जाना पड़ा। अन्यथा वह भी अपने कुछ दोस्तों की तरह गाँव में ही रहकर अपनी खेती और माता-पिता की सेवा करता। उसे याद आता है कि छुट्टियों में घर आने पर, माँ के बार-बार अनुरोध करने पर भी वह उनके साथ उतना समय नहीं दे पाता था, जितना देना चाहिए था। उसे पश्चाताप होता है कि माँ ने उसके लिए कितने कष्ट सहे, लेकिन वह बुढ़ापे में उनकी सहायता करना तो दूर, उनके साथ पर्याप्त समय भी नहीं दे पाया, जिसकी उन्हें बेहद जरूरत थी।

अब अफ़सोस करने से कोई लाभ नहीं। माँ फिर लौटकर नहीं आएँगी। हाँ, दूसरों की माताओं में अब रोहित अपनी माँ की छवि देखना शुरू करता है और सोचता है कि बूढ़ी माताओं की खुशियों के लिए यदि मैं कुछ कर सकूँ, तो शायद मेरी माँ जिस लोक में भी होगी, अत्यन्त तृप्त होगी।

आशा की किरण

तूफ़ान की मार झेलते हुए, जब हर तरफ गरीबी और मंदी का माहौल था, तब एक छोटे से बच्चे ने साबित कर दिया कि उम्र तो छोटी हो सकती है, लेकिन इरादे बड़े हो सकते हैं। दक्षिण भारत के एक छोटे से गाँव में, हाल ही में आए एक भयंकर तूफ़ान ने कई घरों को उजाड़ दिया, फसलों को नष्ट कर दिया और जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया। इस संकट के समय में जहां बड़े-बड़े लोग भी हमलावर नजर आ रहे थे, वहीं बच्चों के एक समूह ने ऐसी पहल की, जिसने पूरे समुदाय को उम्मीद की नई रोशनी दी।

तूफ़ान की खबरें स्थानीय और राष्ट्रीय समाचार चैनलों पर छाई हुई थी। तेज़ हवाओं और भारी बारिश ने गाँव में लगभग सब कुछ तहस-नहस कर दिया था।

एक 12 साल की लड़की, रोहिनी, जो हमेशा अपने दोस्तों की मदद करने में रुचि रखती थी, उसने अपने दोस्तों के साथ एक मीटिंग की। उन्होंने कहा, ''हम इस तूफ़ान और बरिश को तो नहीं रोक सकते, लेकिन हम लोगों की मदद जरूर कर सकते हैं, इस समय इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है।'' रिहिनी की बात सुनकर उसके दोस्त – राज, मीरा, और राहुल तुरंत तैयार हो गए। उन्होंने मिलकर एक योजना बनाई।

बच्चों ने दूसरे गांव की सड़कों पर एक-एक घर जाकर अपनी योजना का विवरण दिया। उन्होंने लोगों से पुराने कपड़े, खिलौने और भोजन का दान देने की अपील की। इसके साथ ही उन्होंने पैसे के लिए एक छोटा सा नाटक और संगीत कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाई। कार्यक्रम का आयोजन गांव के ही हॉल में किया गया।

नाटक में बच्चों ने तूफ़ान के दौरान लोगों के संघर्ष और एकता की कहानी पेश की। संगीत कार्यक्रम में मीरा ने गाना गाया, राज ने बांसुरी बजाया, और राहुल ने तबला बजाया। इन मासूम बच्चों की कोशिशों को देखकर दिल पिघल गया। लोगों ने खुले दिल से दान किया।

एक हफ्ते में, बच्चों ने अपने परिश्रम से 50,000 रुपये इकट्ठा की। इस राशि से उन्होंने तूफ़ान से ग्रसित लोगों के लिए जरूरी सामान की खरीदारी की, जिसमें खाने-पीने की चीजें, कपड़े और किराने की चीजें शामिल थीं। रोहिनी ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर सभी सामानों को तूफ़ान और बाढ़ से ग्रसित लोगों के घरों तक पहुंचाया।

इस घटना के बाद इन बच्चों ने यह तय किया कि वे भविष्य में भी इस तरह के सामाजिक कार्य करेंगे। उन्होंने एक "युवा सहायता समूह" बनाया, जहां वे पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए काम करने की योजना बना रहे हैं।

तूफ़ान विनाशकारी ही था, लेकिन एक महत्वपूर्ण सीख दी, अगर किसी संकट में फंसे लोगों की मदद के लिए बच्चे सामने आ जाए, तो वे पूरे समाज को प्रेरित कर सकते हैं। इन बच्चों ने यह साबित कर दिया कि किसी भी आपदा में मदद करने के लिए नहीं तो उम्र का मतलब है और न ही कोई स्रोत की। बस इरादा मजबूत होना चाहिए।

लेखक :
राजकुमार
छात्र, BJMC तृतीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

सरहद पर जाना है

माँ तुमसे
माँ तुमसे मिलने आया था,
कुछ पल साथ बिताने को,
कुछ खुशियाँ देकर जाने को,
कुछ खुशियाँ लेकर जाने को ।
दुश्मन ने धावा बोला है,
माँ उसको धुल चटाना है,
अब मुझको मत रोको,
मुझको सरहद पर जाना है।
याद बहुत आते है पापा,
कंधो पर जो आप घुमाते थे,
कमी मम्मी थप्पड़ लगाती थी,
चॉकलेट से हमें मनाती थी ।
बहुत दिखाए गांधी हमने,
भगत सिंह को अब दिखाना है,
पापा अब मुझको मत रोको,
मुझको सरहद पर जाना है।

लेखक :
हरीश बंधु
छात्र, MBA तृतीय सेमेस्टर
प्रबंधन विज्ञान विभाग

सपनों की उड़ान

चलो चलें उस ओर,
जहां सूरज की किरणें चमकती हैं,
जहां आसमान में उम्मीदें नई रेखाएँ खींचती हैं।
जो भी मुश्किलें रास्ते में आएंगी,
हमारे हौसले को नहीं रोक पाएंगी।
हर बूँद पसीने की, मेहनत का जश्न है,
हर चोट, सफलता की एक दस्तक है।
अगर हिम्मत हो तो सितारों तक जाना है,
जो ठोकरें मिलीं,
वो बस हमें आजमाना है।
हार से डरकर रुकना नहीं,
हर गिरावट से उठकर झुकना नहीं।
जीवन एक रणभूमि है,
खेल इसे जीत की धुन में,
तुम्हारा सपना तुम्हारे हाथों की लकीर है।
चलो अब जागें,
नई सुबह का इंतजार है,
हर एक कदम पर,
तुम्हारे साथ संसार है।
हौसला हो बुलंद और इरादे सच्चे,
तो हर सपना,
तुम्हारे कदमों के नीचे।

लेखक :
जन्मेजय कुमार
छात्र, MJMC तृतीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

मां भारती के पुत्र हम

मां भारती के पुत्र हम ,
हमारे बल पर देश है।।
कभी मिलूंगी खेत में
कभी दिखूंगी प्रदेश में,
हमने जब ठान लिया ,
हमने देश के लिए जान दिया।
हमने जब जलपान किया
मां भारती का नाम लिया ।।
जब हमारे देश पर कट्टरता ने प्रहार किया
धर्म और जाति के नाम पर
लोगों को पथ भ्रष्ट किया,
तब हमने देश को मां भारती का मिसाल दिया।।
हमारे देश के खेतों में
मां भारती का रक्त पड़ा
जब किसानों ने माटी उठाया
माटी भी सोना बना।
मां भारती की कोख से
लाखों वीरों ने जन्म लिया,
उन्होंने देश रक्षा के लिए
हंसते-हंसते अपना बलिदान दिया।।
मां भारती के शीश पर
हिमालय राज का मुकुट सजा।
मां भारती के चरणों में
हिंद महासागर नमन पड़ा।।

लेखक :
अपूर्वा त्रिवेदी
छात्रा, BJMC पंचम सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

रोटी कपड़ा और मकान

लेकर बोझ मुफलिशी का
फुटपाथ पर बस चले है
पेट की आग बुझती नही
नीचे से पैर जले है
आंखे लाल है तन पर वही कपड़े फटे पुराने,
काम दे दो साहब मैं कर लूंगा आप मेरी माने
उमर पे ना जाए देखे तजुर्बा लाचारी का
इलाज भी तो करना है मुझे अपनी मां की बीमारी का
चाय बिखर गई केतली से
निशां आ गया हाथ पर
वापस भी जाना है कोई इंतेजार देखता
फुटपाथ पर
ना कोई शौक ना भीख मांगने की आदत है,
ना घर है ना बाप
आपने तो कह दिया लानत है
जिस्म खरीद लो अगर बीके,
नहीं बिकेगा ये ईमान
बदले में बस इतना दे दो
"रोटी कपड़ा और मकान"

लेखक :
विवेक गुप्ता
छात्र, BJMC पंचम सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

आत्म विश्वास

भरोसा रखो खुद पर,
हार के बाद ही जीत का हार पहनाया जाएगा।।
स्वयं से बेहतर कोई नहीं,
जमाना भी तेरी जिद के आगे हार जाएगा।
मंद-मंद चलता रह,
दिलो में उम्मीद के पुल बनाता चल ,
विश्वास के दम पर ही पुल के उस पार जाएगा।
स्वयं से बेहतर कोई उत्तर नहीं,
जमाना भी तेरी जिद के आगे हार जाएगा।
परिंदे की उड़ान देखना एक बार,
मन में जीत की बात रखना एक बार, जग की सुन-सुनसान न हो मायूस,
तू क्या इसके साथ जाएगा।
स्वयं से बेहतर कोई उत्तर नहीं,
जमाना भी तेरी जिद के आगे हार जाएगा।।
उम्र भले ही कम हो जिंदगी में,
ख्वाब सजा और मुस्कुरा हर किसी की खुशी में,
बना ले अपने-आप को मित्र और सखा,
जीवन कैसा भी हो गुजर ही जाएगा।
स्वयं से बेहतर कोई उत्तर नहीं,
जमाना भी तेरी जिद के आगे हार जाएगा।।

लेखक :
रश्मि कुमारी
B.com. तृतीय सेमेस्टर
वाणिज्य विभाग

फिर अपना क्या

खेत
अपना
फसल अपना
फसल की दर अमीरों का।
सड़क से संसद अमीरों का
संसद मे बैठा सांसद अमीरों का
और सांसद की जुबान अमीरा का।
कोट-कचहरी अमीरों का
पुलिस - थाना अमीरों का
जेलर अमीरों का
और जेल की चार दिवारी अपनी।
सरकार अमीरो का
सरकारी दफ्तर के कर्मचारी अमीरों का
गली - मुहल्ले अमीरों का
फिर अपना क्या ?
गाँव ?
शहर ?
देश ?

लेखक :
मनोज कुमार
स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर
भौतिकी विभाग

हमारा विश्वविद्यालय

की इस चंपारण के पावन भूमि ने
पाया कुछ ऐसा वरदान।
कि आ खुला इस भूमि पर, मिला
केन्द्रीय विश्व विद्यालय का वरदान।
ज्ञान की इस दीवार पर
खिलते विद्यार्थियों के सुंदर भविष्य हैं
विद्या के इस वेदी पर, ज्ञान की
जलती ज्योति है।
विद्या की दिवारे, सपनों का आधार है
यह विश्व विद्यालय हमारा ज्ञान का संसार है।
कि समुंद्र की गहराई पानी से भरी
और हमारे विद्यालय के कण कण में ज्ञान है भरी
की पवन की पुकार बागों का बहार
है ये विश्व विद्यालय
तपते चंपारण के तपोवन में तरुण है
हमारा विश्वविद्यालय।

लेखक :
तनमय राज
B.com. प्रथम सेमेस्टर
वाणिज्य विभाग

माँ

नौ महीने अपने पेट में रख तू
मुझे सिंचती है,
सरसों सा जाकर को तू,
सींच सींच कर
एक शिशु का आकार बना देती,
इसलिए तो तू मां कहलाती।
जन्म देते ही तू ,
सारी अपनी खुशियों को,
निछावर कर देती,
अपने सपने को तु,
अब मुझमें देखने लग जाती,
मेरे छोटे-छोटे तू नखरे उठाती
बिन कहे तूमन की बात समझ जाती,
इसलिए तो तू मां कहलाती।
उंगली पकड़ तू चलना सिखाती,
जरा सी खरोच पर तू घबरा जाती,
मेरी छोटी-छोटी ख्वाहिशों कोतू पूरा करती,
पापा जब डांट लगाते तोतू ढाल बन जाती,
इसलिए तो तू मां कहलाती...

लेखक :
रानी कुमारी
छात्रा, BJMC तृतीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

The Flying Aspiration

Someone asked, why girls love butterflies?
And the answer could be:

They are the dream every girl longs to live,
A free soul drifting, wings painted bright,
Filled with colours that wander in the soft light.
Their love for flowers, their nurturing grace,
Isn't unknown in this space.
And the another aspect of this parallelism are the fears, they share.
The unknown hands and the chase, hinders the fragile peace they possess,
The hold so tight in disguise of fond and praise that suffocates to death.
Though some hands stretched open, gentle and kind; leaving a choice behind.
Henceforth the dubiety lingers for life.
But neither the uncertainty nor the night can halt the girls and the butterflies.

Writer:
Khushi Kumari
BJMC 3rd semester
Dept. of Media Studies

माँ के अपने सपने

माँ के दिल में छुपा एक ख्वाब है,
उसकी आँखों में बसा अनमोल जवाब है।
जिम्मेदारियों में खुद को भुला दिया,
लेकिन सपनों को दिल से लगा लिया।
हर सुबह सूरज बन कर चमकी वो,
हर रात चाँद सी ठंडी बन कर ढकी वो।
पर उसके भी थे अरमान सुनहरे,
जो वक्त की धूल में हो गए थे धुंधले।
आज वो फिर से ख्वाब बुन रही है,
अपनी पहचान को फिर से गुन रही है।
जिन ख्वाबों को छोड़ा था बच्चों के लिए,
अब उन्हें जीने की राह चुन रही है।
माँ के सपने त्याग की परिभाषा नहीं,
माँ के सपने उसकी अपनी भाषा नहीं।
पर अब वो अपने लिए भी जीना चाहती है,
अपनी उड़ान को आसमान देना चाहती है।
हर त्याग के पीछे उसकी हिम्मत है,
हर संघर्ष में छुपा उसका जज्बा है।
अब उसके सपने भी साकार होंगे,
माँ के अपने ख्वाब भी अब सजीव होंगे।

लेखक :
मुस्कान कुमारी
छात्रा, BJMC तृतीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

खुद से बातें

खुद से बातें करने लगी हूं,
सन्नाटों में मुस्कराने लगी हूं।
जो छूट गया था कहीं पीछे,
अब उसे धीरे-धीरे पाने लगी हूं।
सपनों की डोर जो बिखर गई थी,
फिर से उसे बुनने लगी हूं।
गहराइयों में जो छिपी थी हसरतें,
उनको धीरे-धीरे चुनने लगी हूं।
आसमान से बातें करती हूं,
सितारों से अपना हाल कहती हूं।
चांदनी की चादर ओढ़े,
रातों में कुछ ख्वाब बुनती हूं।
जो राहें कठिन थीं कभी,
अब उन पर हौसले के कदम रखती हूं।
जो डर छुपा था दिल के कोने में,
अब उससे नजरें मिलाने लगी हूं।
खुद को थोड़ा-थोड़ा समझने लगी हूं,
खुद से बातें करने लगी हूं।
सन्नाटों में मुस्कराने लगी हूं,
खुद से खुद को पाने लगी हूं।

लेखक :
सिमरन कुमारी
छात्रा, BJMC प्रथम सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

स्वयं जीवन का तू निर्माण कर

ए मानव तू क्यों इतना डरता है
जो जैसा करता है वैसा भरता है
जीवन मृत्यु तो निश्चित है फिर मृत्यु से क्यों डरता है
तेरे कर्म अच्छे हैं तो फिर काहे की चिंता है
खुद पर भरोसा रख जीवन की उड़ान भर
तू मानव कल्याण कर खुद पर एतबार कर
स्वर्ग और नरक तो जीवन के बाद का है रास्ता
उसकी चिंता में तू अपना आज न बर्बाद कर
तोड़ दे सारे बंदीशे खुद को तू आजाद कर
जीवन के पिंजरे में तू खुद को ना कैद कर
इस पिंजरे का तू विनाश कर
उड़ा दे मन नामक पंछी
स्वयं जीवन का तू निर्माण कर

लेखक :
प्राची
छात्रा, BJMC पंचम सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

बचपन, युवा और वृद्ध में अस्थिर मेरा मन

ऐसा लग रहा है मानो मैं किसी सहज और सरल दुनिया में हूँ। जहाँ सभी खिलौने और लोग मेरे अपने से दिख रहे है। पक्षी की चहचहाअट और फल व फूलों से लदी क्यारियों में मैं खेल रहा हूँ। कभी इस फल तो कभी उस को खाते हुए तीसरे फल को भी खाने की चाह कर रहा हूँ, अब मुझे कोई डांट कर होमवर्क कराने वाला नहीं है। अब मै ज्यादा देर तक खेल सकता हूँ , तभी माँ की आवाज कानों में पड़ी कि स्कूल का समय हो रहा है जल्दी जग जाओ, आवाज सुनते ही जग गया अतः केवल मेरा मन ही दूर था।

बदलते समय- परिस्थिति के कारण मेरे मन और शरीर में परिवर्तन आ गया। अब मै उच्च शिक्षा हेतु कालेज में पढ़ने लगा, वहाँ एक लड़की जिसको मै पिछले वर्ष छुप-छुप कर देखा करता था, अब न सिर्फ उससे बात करता हूँ बल्कि उसके बगल वाली क्लास सीट पर भी बैठता हूँ। मेरा चंचल मन, सोच रहा कि अधिकांश सफल व्यक्तियों के पीछे एक लड़की का ही साथ होता है। इस विचार की आभा से मै प्यार और करियर में तारगम्य मिलाते हुआ, उसके साथ बंधन में बधने की सोचने लगा।

लेखक :
सतवीर राव
शोधार्थी
गांधी एवं शांति अध्ययन-विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

समय बदलता गया कुछ वर्ष बाद पता चला की उसकी शादी हो रही और मेरा उसी दिन पीसीएस का पेपर है। मेरा मन बदलाव की कसमकस में गुम और एकान्त की तलाश में चला जाता है। फिर मैंने फेसबुक की रील में गाना सुना, ठुकरा के मेरा प्यार, मेरा इंतकाम देखेगी। मैंने खुद को पुनः समेटा एक फिल्मी पात्र के हीरो की तरह कि अब कुछ करके उसको दिखाना है।

समय बीतता गया एक दिन रास्ते में मेरे कॉलेज की वही लड़की मिल गयी, पता चला कि वो तो अपने बच्चे का दाखिला हेतु स्कूल में जा रही हैं और मै पीसीएस का मेंस परीक्षा देकर आ रहा हूँ। बदलते पर्यावरण जनित वातावरण और महंगी होती जीवन शैली के साथ ही मेरे युवापन के संघर्ष भरे दिन बदलते गये। कुछ पाने और खोने की कसमकस में अपनी माँ, पिता, भाई-बहन, दोस्त, रिश्तेदार की याद और उनके लिए कुछ अच्छा करने की चाहत आँख को भिगो गयी, लेकिन क्या करे सफलता, समर्पण और संघर्ष मांगती ही है। इस उम्मीद में पुनः किताब खोलकर पढ़ने बैठ जाता हूँ कि शायद कल न तो परसों आज से तो अच्छा होगा ही।

बदलते समय व परिदृश्य ने मेरे शरीर को अब कमजोर कर दिया, अब मै तेज चलने पर जल्दी हांफने और थकने सा लगता हूँ,अब मुझे चटपटा और तीखा खाने के लिए कई बार सोचना पड़ता है, कि कहीं तबीयत खराब होने से घर वाले बोलने न लगे। मेरे काले और सिल्की बाल अब सफेद से हो गये। मैं अब ज्यादा शांत रहने लगा। मेरे एकान्त होते ही मन और तन की खटमय शुरू हो जाती है। युवापन में मेरा तन, जो किसी बाद पर जिद्द के लिए बड़े ही तनकर खड़ा रहता था, अब थोड़ा असहाय सा हो गया, लेकिन मेरा मन जो बचपन और युवा की कुछ खट्टे- मिट्टी तो कुछ तीखी-कड़वी यादे अपने मन के किसी एकान्त कोने में रखी है। उसे सोच कर हँस और रो भी लेता है।

चूंकि मेरा मन अब भी एक जगह से दूसरी जगह चंचल है लेकिन अब मेरे कमजोर पड़े तन की कई बार उसको कार्य करने की मनाही होती है। फिर समझ आया कि जो अस्थिर मेरा मन है, उसकी चंचलता ने भ्रमण करते हुए बहुत से कार्यों, व्यक्तियों, स्थानों आदि का अनुभव भी लिया है। जिसकी सीख मैं अपने बच्चों, पोतों और समाज को भी देना चाहता था लेकिन सोशल मीडिया युक्त मोबाईल ने यह सब खत्म कर दिया। यही सोचते-सोचते मेरा तन और मन गहरी नीद में सोते हुए बेजान हो गया।

अंतरात्मा

क्या तूने कभी देखा है अपने आपको
आईने में?
बेशक देखा होगा!
अकड़ कर,
इठला कर,
आंख भौं सिकोड़ कर,
आंखे तरेर कर।
यह भी हो सकता है,
की आईने ने केवल तुझे देखा हो।
लेकिन मैं चाहता हूँ,
तुम मेरे नजरिये से देखो।
मेरे जज्बातों और सिद्धांतों के अनुसार
देखो।
ऐसा भी नहीं तो केवल,
अपनी अंतरात्मा की सुनकर देखों।
फिर तुम पाओगे की,
अकड़ कर देखना कितनी बड़ी
मूर्खता थी।
वह केवल दूसरों को धोखा देना नहीं
था,
बल्कि सबसे बड़ा अपने आपको
धोखा देना था।
अंतरात्मा को मार देना जैसा था।
नजरिए का फर्क स्पष्ट हो जाएगा,
और पाओगे की यह तो
एकदम वहीं रास्ता है जो मेरी
अंतरात्मा की आवाज थी।
फिर कभी नहीं देखोगे
अकड़ कर,
ऐसा करना तुम्हारे लिए एक नए
अवतार लेने जैसा होगा।
एकदम ऊंचे आकाश को चूमने जैसा।

लेखक :
डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र
सहायक प्राध्यापक
मीडिया अध्ययन विभाग

सलिल संकट

लेखक :
तुशाल कुमार
छात्र, परास्नातक तृतीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

धरती सहित संपूर्ण ब्रह्मांड पांच तत्वों से मिलकर बना है। ये पांच तत्व है- आकाश, वायु, अग्नि, जल और धरती। इसमें जल तत्व का महत्व खास है क्योंकि धरती पर 70 प्रतिशत समुद्र का विस्तार है, लेकिन उसका पानी पीने लायक नहीं है। 30 प्रतिशत जल धरती के भीतर, नदी, तालाब, सरोवर या हवा में मौजूद है। उसमें भी अधिकतर जल प्रदूषित। यानी की पीने लायक जल बहुत कम ही बचा है। जल है तो जीवन है।

मानव जो स्वयं को सबसे बुद्धिजीवी और सभ्य समझता है उसने जितनी प्रकृति को नुकसान पहुंचाई है उतना तो जानवरों ने भी नहीं पहुंचाई है। जहां मनुष्य की पहुँच नहीं है वहाँ की जलाशयों की स्थिति बेहतर हैं,अर्थात् घने जंगल और ऊंचे पर्वत। पानी तो पीयूष है लेकिन मनुष्यों ने उसे प्रदुषित बना दिया है।

कल्पना कीजिए एक ऐसी दुनिया की जहाँ नदियाँ, जो हमारे ग्रह की जीवनरेखा हैं, कचरे से भरी हुई हैं। यह कोई दूर का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान की वास्तविकता है।

जल से ही जड़ जगत और जीवन की उत्पत्ति हुई है। हमारे शरीर और धरती पर लगभग 70 प्रतिशत जल विद्यमान है। हिन्दू पुराणों के अनुसार बारिश का जल सबसे शुद्ध, उसके बाद हिमालय से निकलने वाली नदियों का, फिर कुवे और सरोवर का जल शुद्ध होता है। हमारे पूर्वजों ने हमे सुन्दर, स्वच्छ और अमृत समान जलाशय सौंप कर गए लेकिन हम अपने भविष्य को विषैली और गंदे जलाशय सौंप कर जायेंगे।

पिछले कुछ वर्षों में औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण के कारण प्रमुख नदियों में प्रदूषण खतरनाक स्तर तक बढ़ गया है। सिंचाई, पीने के लिए, बिजली तथा अन्य उद्देश्यों के लिए पानी के अंधाधुंध इस्तेमाल से भी चुनौतियां काफी बढ़ गई हैं। इसके कारण तो कुछ नदियां लुप्त हो गई हैं और कुछ लुप्त होने के संकट का सामना कर रही हैं। जब सभी नदियां सूख जाएंगी तो भयानक जल संकट से त्रासदी की की नई शुरुआत होगी।

आधुनिकीकरण ने प्राकृतिक जल चक्र को भी प्रभावित किया है। जल चक्र से ही जल खुद को शुद्ध करके वर्षा के रूप में वापस धरती पर आती है। जल प्रदूषण को काफी हद तक विभिन्न तरीकों से नियंत्रित किया जा सकता है। सीवेज अपशिष्ट को जल निकायों में छोड़ने के बजाय, उन्हें डिस्चार्ज करने से पहले उपचारित करना बेहतर है। ऐसा करने से शुरुआती विषाक्तता कम हो सकती है और शेष पदार्थों को जल निकाय द्वारा ही विघटित और हानिरहित बनाया जा सकता है। यदि पानी का द्वितीयक उपचार किया गया है, तो इसका स्वच्छता प्रणालियों और कृषि क्षेत्रों में पुनः उपयोग किया जा सकता है।

जलकुंभी एक बहुत ही खास पौधा है जो कैडमियम और ऐसे अन्य तत्वों जैसे घुले हुए विषैले रसायनों को सोख सकता है। ऐसे प्रदूषण वाले क्षेत्रों में इसे लगाने से प्रतिकूल प्रभाव काफी हद तक कम हो जाएगा। इसके अलावा डकवीड का पौधा दूषित पानी को साफ करने का एक प्राकृतिक और जादुई तरीका है।

जल प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद करने वाली कुछ रासायनिक विधियाँ हैं अवक्षेपण, आयन विनिमय प्रक्रिया, रिवस ऑस्मोसिस और जमावट।

एक व्यक्ति के रूप में, जहाँ भी संभव हो, पुनः उपयोग, कमी और पुनर्चक्रण जल प्रदूषण के प्रभावों पर काबू पाने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

जहाँ नदियाँ, जो हमारे ग्रह की जीवनरेखा हैं, कचरे से भरी हुई हैं। यह कोई दूर का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान की वास्तविकता है।

जल से ही जड़ जगत और जीवन की उत्पत्ति हुई है। हमारे शरीर और धरती पर लगभग 70 प्रतिशत जल विद्यमान है। हिन्दू पुराणों के अनुसार बारिश का जल सबसे शुद्ध, उसके बाद हिमालय से निकलने वाली नदियों का, फिर कुवे और सरोवर का जल शुद्ध होता है। हमारे पूर्वजों ने हमे सुन्दर, स्वच्छ और अमृत समान जलाशय सौंप कर गए लेकिन हम अपने भविष्य को विषैली और गंदे जलाशय सौंप कर जायेंगे।

पिछले कुछ वर्षों में औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण के कारण प्रमुख नदियों में प्रदूषण खतरनाक स्तर तक बढ़ गया है। सिंचाई, पीने के लिए, बिजली तथा अन्य उद्देश्यों के लिए पानी के अंधाधुंध इस्तेमाल से भी चुनौतियां काफी बढ़ गई हैं। इसके कारण तो कुछ नदियां लुप्त हो गई हैं और कुछ लुप्त होने के संकट का सामना कर रही हैं। जब सभी नदियां सूख जाएंगी तो भयानक जल संकट से त्रासदी की की नई शुरुआत होगी।

आधुनिकीकरण ने प्राकृतिक जल चक्र को भी प्रभावित किया है। जल चक्र से ही जल खुद को शुद्ध करके वर्षा के रूप में वापस धरती पर आती है। जल प्रदूषण को काफी हद तक विभिन्न तरीकों से नियंत्रित किया जा सकता है। सीवेज अपशिष्ट को जल निकायों में छोड़ने के बजाय, उन्हें डिस्चार्ज करने से पहले उपचारित करना बेहतर है। ऐसा करने से शुरुआती विषाक्तता कम हो सकती है और शेष पदार्थों को जल निकाय द्वारा ही विघटित और हानिरहित बनाया जा सकता है। यदि पानी का द्वितीयक उपचार किया गया है, तो इसका स्वच्छता प्रणालियों और कृषि क्षेत्रों में पुनः उपयोग किया जा सकता है।

जलकुंभी एक बहुत ही खास पौधा है जो कैडमियम और ऐसे अन्य तत्वों जैसे घुले हुए विषैले रसायनों को सोख सकता है। ऐसे प्रदूषण वाले क्षेत्रों में इसे लगाने से प्रतिकूल प्रभाव काफी हद तक कम हो जाएगा। इसके अलावा डकवीड का पौधा दूषित पानी को साफ करने का एक प्राकृतिक और जादुई तरीका है।

जल प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद करने वाली कुछ रासायनिक विधियाँ हैं अवक्षेपण, आयन विनिमय प्रक्रिया, रिवस ऑस्मोसिस और जमावट।

एक व्यक्ति के रूप में, जहाँ भी संभव हो, पुनः उपयोग, कमी और पुनर्चक्रण जल प्रदूषण के प्रभावों पर काबू पाने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक
प्रो. संजय श्रीवास्तव
मा. कुलपति
म.गाँ.के.विवि.

मार्गदर्शक
डॉ. अंजनी कुमार झा
विभागाध्यक्ष
मीडिया अध्ययन विभाग

संपादक
डॉ. सुनील दीपक घोडके
सहायक प्राध्यापक
मीडिया अध्ययन विभाग

उप-संपादक
डॉ. श्याम नन्दन
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सह-संपादक
डॉ परमात्मा कुमार मिश्र
सहायक प्राध्यापक
मीडिया अध्ययन विभाग

सह-संपादक
डॉ. उमेश पात्रा
सहायक प्राध्यापक
अंग्रेजी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. गोविंद वर्मा,
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. आशा मीणा,
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. बबलू पाल
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. दुर्गेश्वर सिंह
सहायक प्राध्यापक
वनस्पति विज्ञान विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. पाथलोथ ओमकार
सहायक प्राध्यापक
शैक्षिक अध्ययन विभाग

सलाहकार संपादक
सुश्री शेफालिका मिश्रा
जनसंपर्क अधिकारी
म.गाँ.के.विवि.

प्रकाशक
विशेष कार्याधिकारी (प्रशासन)
म.गाँ.के.विवि.

वितरण एवं प्रसार
जनसंपर्क प्रकोष्ठ
म.गा.के.विवि.

ले-आउट डिज़ाइन
प्रतीक कुमार
छात्र (स्नातकोत्तर)
मीडिया अध्ययन विभाग

कंपोजिंग
शिवानी कुमारी
छात्रा (स्नातकोत्तर)
मीडिया अध्ययन विभाग

समाचार संकलन
तुशाल कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
सुशील कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
पूजा कौशिक, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
जन्मेजय कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
आशीष कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
लक्की कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
रूचि भारती, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
भावना कुमारी, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

स्थापना दिवस की झलकियां